अरब की लोक कथाऐं

चयन और हिन्दी अनुवाद
सुषमा गुप्ता
2022

Series Title : Desh Videsh Ki Lok Kathayen
Book Title: Arab Ki Lok Kathayen (Folktales of Arab)
Cover Page picture: Desert Picture
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: http://sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Arab

Countries of Arab World (22)
Algeria, Bahrain, Egypt, Iraq, Jordan, Kuwait, Lebanon, Libya, Mauritania, Oman, Palestine, Qatar, Saudi Arabia, Sudan, Tunisia, United Arab Emirates, and, Yemen etc.

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं 5

अरब की लोक कथाऐं 7

1 सात भाई और एक बहिन 9

2 कबूतर मारने वाला 19

3 सुलतान की बेटी 35

4 मौत का देवदूत 42

5 नीति की कहानियॉ 52

6 सही जवाब 76

7 लौट और कौस का पेड़ 78

8 भाई और बहिन 83

9 डर 95

10 तीन सन्तरा परी 105

11 गुलाबी सुन्दरता 125

12 मछली परी 138

13 गंजा मुहम्मद 148

14 नौशेरवॉ का मकबरा 159

15 चिड़ियें जिन्होंने एक राजा से दोस्ती की 167

16 शापित सिर 182

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" के नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

अरब की लोक कथाऐं

संसार में सात महाद्वीप हैं – एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अन्टार्कटिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया – सबसे पहले सबसे बड़ा और सबसे बाद में सबसे छोटा। इस तरह साइज़ में भी और जनसंख्या में भी एशिया सबसे बड़ा महाद्वीप है। रूस का साइज़ इसको साइज़ में और चीन और भारत की जनसंख्या इसको जनसंख्या में सबसे बड़ा महाद्वीप बनाते है।

एशिया महाद्वीप में लगभग 50 देश हैं। इसके कुछ मुख्य देशों के नाम हैं – रूस, चीन, भारत, जापान, उत्तर और दक्षिण कोरिया, मंगोलिया, कम्बोडिया, तिब्बत, अरब, ईरान, ईराक, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, कज़ाकिस्तान आदि। एशिया के बहुत सारे देशों में से हमने रूस, चीन, भारत, जियोर्जिया और अरब देशों की लोक कथाऐं उन देशों के नाम से ही दी हैं। इस पुस्तक में उसके अरब देश की कुछ लोक कथाऐं दे रहे हैं।

विकीपीडिया के अनुसार अरबों की दुनियॉ में वे देश आते हैं जिनमें किसी भी प्रकार की अरबी भाषा बोली जाती है। "अरबों की दुनियॉ" में कुल मिला कर बाईस देश आते हैं – बहराइन, ईराक, जौरडन, कुवैत, ओमान, कतार, सऊदी अरेबिया, सीरिया, तुर्की, इज़रायल, लेबनान, पैलेस्टाइन, अल्जीरिया, लिब्या, मौरिटैनिया, मोरक्को, तुनीशिया, आदि। ये सभी देश "अरब लीग" के सदस्य हैं।

इनमें कई देशों की अपनी अपनी लोक कथाऐं हैं। अगर पूरी अरब दुनियॉ की लोक कथाऐं लिखी जायें तो कई पुस्तकें बन जायेंगी पर यहॉ वहॉ के केवल उनके कुछ ही देशों की कथाऐं दी जा रही हैं। अरेबियन नाइट्स जिसमें एक हजार एक कहानियॉ हैं पुस्तक की एक भी कहानी इस पुस्तक में शामिल नहीं की गयी है क्योंकि ये कहानियॉ अरेबियन नाइट्स पुस्तक में ही पढ़ने में ठीक लगती हैं।

पुराने समय से अरब दुनियॉ विज्ञान संस्कृति शिक्षा और दवाओं आदि में बहुत विकसित रही है। इसका लोक कथा साहित्य भी कोई कम वैभवशाली नहीं है।

आशा है कि और लोक कथाओं की तरह से ये लोक कथाऐं भी तुम सबको बहुत पसन्द आयेंगी।

1 सात भाई और एक बहिन[1]

बहुत पुरानी बात है कि आठ बच्चों का एक परिवार रहता था – सात लड़के और एक लड़की आयशा। आयशा सबसे छोटी थी तो घर के सभी लोग उसे बहुत प्यार करते थे।

एक दिन उसके माता पिता एक गाय को बचाते हुए नदी में डूब कर मर गये। उसके बाद उसके भाइयों ने ही उसे देखा भाला। वही उसे वे सब चीज़ें ला कर देते थे जिनकी उसे जरूरत होती थी।

अपनी बहिन की सुरक्षा के लिये उन्होंने घर को फिर से बनवाया। उसमें वह बदलाव लाये जिनसे जब वह बाहर जायें तो उन्हें उसकी सुरक्षा की चिन्ता न करनी पड़े। उन्होंने उस घर के सातों दरवाजों पर ताले लगा दिये।

जब वे लोग शिकार पर जाते या फिर खेतों पर काम करने जाते तो वह अपनी बहिन को किसी खतरे में पड़ जाने की वजह सब दरवाजों पर ताला लगा जाते।

इस तरह समय गुजारते गुजारते आयशा बहुत ही परेशान हो गयी। उसको बहुत अकेलापन महसूस होता पर जल्दी ही उसके भाइयों ने उसके लिये एक बिल्ली का इन्तजाम कर दिया। उसने उसका नाम मिनूश[2] रख दिया।

---

[1] Seven Brothers and a Sister. A Tale from Morocco.

[2] Minoush – name of the cat

जल्दी ही दोनों ने एक दूसरे को अपना लिया और दोनों एक दूसरे के बहुत अच्छे दोस्त बन गये। अपनी दोस्ती को पक्का बनाने के लिये दोनों ने कसम खायी कि वे दोनों एक दूसरे के साथ अपनी हर चीज़ बॉटेंगे और एक दूसरे को धोखा नहीं देंगे।

अब आयशा को अकेले रहने और परेशान रहने की कोई शिकायत नहीं थी चाहे उसके भाई अब सारा सारा दिन के लिये ही बाहर क्यों न रहें। उनको भी यही लगता था कि उनकी बहिन अब अपनी बिल्ली के साथ सुरक्षित है। पर फिर भी वे जब भी बाहर जाते थे तो मकान के सातों दरवाजों पर ताला लगा कर ही जाते थे।

एक दिन उन्हें अपने काम के सिलसिले में कुछ दूर जाना था उनसे जितनी भी सावधानी बरती गयी उन्होंने अपनी बहिन की सुरक्षा के लिये बरती। उन्होंने उसके लिये खाने का सारा सामान इकट्ठा कर के घर में ला कर अन्दर रख दिया ताकि उसे उनके पीछे बाहर बाजार न जाना पड़े।

एक दिन सुबह को वे सब जल्दी उठे और अपनी प्यारी बहिन को गले लगाया और उसे और उसकी साथिन बिल्ली दोनों को विदा कहा सातों दरवाजों को ताला लगाया और चले गये।

कई दिन बीत गये। आयशा और मिनूश दोनों अपने आप में खुश थे। आयशा खाना बनाती थी जिसे वह अपनी बिल्ली के साथ मिल कर खाती थी।

सब कुछ ठीक से चल रहा था कि एक दिन जब वह सफाई कर रही थी तो उसे एक चने का दाना मिल गया। उस समय बिल्ली अपने बिस्तर में आराम कर रही थी। आयशा ने वह दाना उठा लिया अपनी फ्राक से पोंछा। मिनूश ने देख लिया और अपना हिस्सा मॉगा। पर आयशा लालची थी उसने उसे अकेले ही खा लिया।

बिल्ली इस बात पर गुस्सा हो गयी और वहॉ से भाग गयी। फिर भी वह चुप रही और ऐसा दिखाया जैसे कि वह सोने चली गयी हो।

बाद में जब आयशा रोटी बनाने के लिये आटा मल रही थी तो बिल्ली चुपके से रसोई में घुस गयी वहॉ पहुॅच कर उसने दियासलाई की डिबिया पर पेशाब किया और आ कर सो गयी।

जब रात हुई और ठंड बढ़ी तो आयशा रसोई में खाना गरम करने के लिये गयी पर यह देख कर उसे बड़ी निराशा हुई कि इसकी दियासलाई की डिबिया तो गीली पड़ी है।

उसने मिनूश की तरफ घूमते हुए कहा — "ओह मिनूश। दियासलाई की डिबिया तो सारी गीली पड़ी है अब हम क्या करें।"

बिल्ली ने आश्चर्य दिखाते हुए कहा — "तुम बाहर जा कर किसी पड़ोसी से दियासलाई उधार क्यों नहीं ले आतीं।"

अब आयशा के पास और कोई रास्ता नहीं था सो उसने घर के सातों दरवाजे खोले और पहली बार घर के बाहर निकली। अॅधेरी रात में उसे एक जगह आग जलती हुई दिखायी दी जो उसे लगा कि

बहुत दूर नहीं थी। पर जब उसने चलना शुरू किया तो उसे वहॉ पहुॅचने में बहुत देर लग गयी।

जब वह दरवाजे के पास पहुॅची तो दरवाजा अपने आप ही खुल गया। अचानक उसकी नजर वहॉ बैठे एक गुल[3] पर पड़ी। उसकी ऑखें दो अंगारों की तरह आयशा को घूर रही थीं।

वह एक गधे के सिर को अपनी कुरसी की जगह इस्तेमाल कर रहा था। गधे की ऑत की उसने अपनी पगड़ी बना रखी थी। उसके सामने एक बड़ा सा काला बरतन रखा था जिसमें रखी चीज़ को वह गधे की टॉग से कभी कभी हिला लेता था।

उसे देखते ही आयशा डर के मारे जमी सी खड़ी रह गयी और उसकी जीभ उसके मुॅह में उसके तालू से चिपक गयी।

गुल ने उसकी तरफ घूर कर देखते हुए उससे पूछा — "तुम्हें क्या चाहिये।"

जब वह इसका कुछ जवाब न दे सकी तो उसने अपना सवाल और भी नीच ढंग से दोहराया। उसके कहने का ढंग सुन कर वह तो पूरी की पूरी कॉप गयी। कॉपते हुए वह बड़ी मुश्किल से बोल पायी — "मुझे थोड़ी आग चाहिये गुल चाचा।"

"ओह तो तुम इसलिये यहॉ आयी हो। हॉ हॉ तुम यहॉ से थोड़ी सी आग ले सकती हो।"

[3] Ghoul means Demon

यह कह कर उसने कुछ अंगारे उठाये उन्हें एक ज़िंक की प्लेट में रखा और वह प्लेट उसे थमा दी। जब वह प्लेट लेने के लिये उसके पास आयी तो उसने उसके नर्म हाथों को अपने तेज़ पंजों से खुरच दिया जैसे यह उससे कोई दुर्घटना हो गयी हो।

उसने फुसफुसा कर उसे धन्यवाद कहा और घर चली आयी। सारे रास्ते उसके हाथ से खून बहता हुआ चला आया।

कुछ देर बाद गुल घर से बाहर निकला और उस खून को सूँघते सूँघते वह आयशा के घर तक आ पहुँचा। उसने दरवाजे पर दस्तक दी और अपने होठ चाटता हुआ इन्तजार करने लगा।

आयशा ने जब दरवाजे पर दस्तक सुनी तो वह डर से काँप उठी। उसने अपने दिल को तसल्ली दी कि शायद उसके भाई आ गये होंगे।

उसने पूछा — "कौन है?"

गुल ने अपनी गूँजती हुई आवाज में कहा — "ओ आयशा मेरी प्यारी दरवाजा खोलो।"

आयशा को लगा कि वह तो सुन्न पड़ी जा रही है। उसने दरवाजा नहीं खोला। कुछ देर बाद वह बोला — "अच्छा यह तो बताओ कि तुमने मुझे कहाँ बैठे हुए देखा?"

आयशा बोली — "ओ गुल चाचा। मैंने आपको सोने की कुरसी पर बैठे देखा।"

"तुमने मेरे सिर पर क्या देखा?"

"एक सिल्क की पगड़ी।"

"और मैं क्या कर रहा था?"

"आप सूप चला रहे थे।"

"किस चीज़ से?"

"चॉदी के चमचे से।"

गुल यह सुन कर बहुत खुश हुआ। उसने उसके मकान का पहला दरवाजा तोड़ा और फिर सन्तुष्ट हो कर वापस चला गया। इस तरह वह हर रात उसी समय आया और उससे वही सवाल पूछे। आयशा ने हर रात उसे वही जवाब दिये। अब हर रात वह आता और इसी तरह एक दरवाजा तोड़ कर चला जाता।

अब सातवें दिन तो वह सचमुच में ही बड़ी मुश्किल में पड़ गयी। वह तो चिन्ता से पागल सी हो गयी क्योंकि अब गुल और उसके बीच में केवल एक ही दरवाजा बचा था।

जब रात हुई और गुल के आने का समय पास आया तो हर मिनट पर उसका डर बढ़ता ही जा रहा था और उसके दिल की धड़कन बढ़ती ही जा रही थी जैसे उसकी किस्मत का नगाड़ा बज रहा हो।

उसे अब बिल्ली में कोई सन्तुष्टि नहीं मिल पा रही थी जो एक कोने में चुपचाप बैठी आराम कर रही थी और आयशा को अपनी चमकीली ऑखों से देख रही थी। आयशा को लग रहा था कि काश उसके भाई कभी न गये होते।

इस घटना के लिये वह उन्हीं को जिम्मेदार ठहरा रही थी। उसने अपने आपको एक मोटे से कपड़े में लपेट लिया और डर भूख और ठंड से कॉपती हुई एक कोने में सिकुड़ी हुई सी बैठ गयी। आखिर उसने अपने ज़िन्दा रहने की सारी आशाऐं छोड़ दीं और अपने मरने का इन्तजार करने लगी।

जब उसने पैरों के धमाकों की आवाज सुनी तो उसके तो जैसे दिल की धड़कन ही रुक गयी। वह सॉस रोक कर और आवाजें सुनने लगीं पर उसके दिल की धड़कन इतनी तेज़ थी कि उसकी आवाज में उसे कोई और आवाज सुनायी ही नहीं दे रही थी।

अब तो जो किस्मत में लिखा होगा वही होगा। वह अपनी किस्मत नहीं बदल सकती थी। अचानक उसने कई आवाजें एक साथ आती सुनीं। या फिर यह उसकी कल्पना थी। उसे लगा कि वे उसके भाइयों की आवाजें थीं।

अब वह अपने भाइयों को आपस में बातें करते साफ साफ सुन पा रही थी। उसने अपना कपड़ा हटाया और दरवाजे के पास जा कर सुनने लगी। वे आपस में इस बात पर आश्चर्य प्रगट कर रहे थे कि वे छह दरवाजे कैसे टूटे।

वे अपनी यात्रा से अभी अभी लौटे थे। उन्होंने सावधानी से मकान का दरवाजा खटखटाया क्योंकि उनको इसी बात का डर था कि पता नहीं अन्दर उन्हें जाने क्या देखने को मिलेगा। आयशा दरवाजा खोलने के लिये भागी।

उनको देख कर आयशा इतनी खुश हुई कि वह रोती हुई उनकी बॉहों में गिर पड़ी। वे भी उसको ज़िन्दा देख कर बहुत खुश हुए। जब उसको याद आया कि अब तो गुल के आने का समय होने वाला है तो उसने जल्दी जल्दी सोचना शुरू किया।

उसने जल्दी से दरवाजा बन्द किया और अपने भाइयों को बताया कि उनके पीछे क्या हुआ था। उसने उनसे कहा केवल कुछ ही मिनटों में गुल अब उन सबको खाने के लिये आने वाला होगा।

उन्होंने फिर समय नष्ट नहीं किया। सातों भाइयों ने जल्दी जल्दी अपना अपना काम शुरू किया। उन्होंने दरवाजे के नीचे एक बहुत बड़ा गड्ढा खोदा और उसे भूसे से भर कर अन्दर खड़े हो गये। आयशा तो अपने सातों भाइयों की रक्षा में चमकती हुई खड़ी थी।

तभी गुल भी वहॉ आ पहुॅचा और उसने दरवाजा खटखटाया। जब आयशा ने दरवाजा नहीं खोला तो उसने रोज की तरह से पूछा — "अच्छा यह तो बताओ कि तुमने मुझे कहॉ बैठे हुए देखा?"

अबकी बार आयशा बोली — "मैंने आपको गधे के सिर पर बैठे देखा।"

"तुमने मेरे सिर पर क्या देखा?"

"एक गधे की ऑतों की बनी हुई पगड़ी।"

"और मैं क्या कर रहा था?"

"आप सड़ा हुआ पानी चला रहे थे।"

"किस चीज़ से?"

"गधे की टॉग से।"

आयशा के हर जवाब पर गुल की नाराजगी बढ़ती ही जा रही थी और उसके आखिरी जवाब पर तो वह आग बबूला हो उठा। एक पग पीछे हट कर वह गुस्से से ज़ोर से आगे बढ़ा। दरवाजा तुरन्त ही खुल गया और वह उसके नीचे बने गड्ढे में गिर पड़ा।

आयशा के भाई तैयार थे उन्होंने तुरन्त ही भूसे में आग लगा दी जिससे वह गुल जल्दी ही जल कर मर गया। सब उस गड्ढे के चारों तरफ खड़े हो कर उसके राख होने का तमाशा देख रहे थे। आयशा बड़े गर्व और खुशी के साथ सबसे आगे खड़ी थी।

जब गुल मर रहा था तो उसने अपनी बॉह बाहर निकाली और हाथ हिलाते हुए आयशा से कहा — "याद रखना आयशा कि तुम मेरे ही हाथ से मरोगी।" पर जब आग की लपटें उसे निगल रही थीं तो आयशा उसकी तरफ देख कर उसका मजाक उड़ाते हुए हॅस रही थी।

X X X X X X X

कुछ साल बाद एक दिन जब गुल को लोग पूरी तरीके से भूल चुके थे आयशा अपने घर की छत पर बैठी हुई अपने भाइयों को पास के खेत में काम करते देख रही थी। उसी दिन उसकी प्यारी मिनूश

बूढ़ी हो जाने के कारण मर गयी थी पर आयशा उसके लिये दुखी नहीं थी।

बिल्ली हमेशा खराब मूड में रहती थी और उसने अपने आपको दुनियॉ से खींच लिया था। आयशा अपने बालों में औलिव का तेल लगाती जा रही थी और गाती जा रही थी कि उसके और सूरज के बीच में एक साया आ गया।

उसने ऊपर देखा तो उसने देखा कि वहॉ तो एक रैवन था। रैवन ने उसके चारों तरफ चक्कर काटा और फिर धरती पर आ कर बैठ गया और अपना खाना खोजने लगा।

वह अपने पंजों और चोंच से चारों तरफ खोदता रहा जब तक कि वह उस जगह तक नहीं पहुॅच गया जहॉ गुल जला था। उस काली चिड़िया ने वहॉ से एक हड्डी उठायी और फिर से आयशा का एक चक्कर काटा।

अचानक उसकी चोंच से हड्डी निकल कर आयशा के सिर पर गिर पड़ी और तीर की तरह से उसे चीरती चली गयी। वह वहीं उसी जगह गिर कर मर गयी।

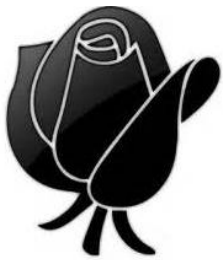

2 कबूतर मारने वाला[4]

एक बार की बात है कि एक आदमी था उसके दो पत्नियॉ थीं। उसकी पहली पत्नी के कोई बच्चा नहीं था पर उसकी दूसरी पत्नी के एक बेटी थी और उसे फिर से बच्चे की आशा थी। वह रोज पहाड़ पर कबूतर पकड़ने जाता था। वह केवल दो कबूतर पकड़ता और उन दोनों को बारी बारी से पकाने के लिये दे देता।

एक दिन कबूतर पकाने की बारी उसकी दूसरी पत्नी की थी। जब वह चाकू लाने के लिये रसोई में गयी तो वे चिड़ियें अपनी बेटी को पकड़ा गयी। कबूतर ने तुरन्त ही अपने पंख फड़फड़ाने शुरू कर दिये इससे वह बच्ची डर गयी और उसके हाथ से दोनों कबूतर छूट कर उड़ गये।

उसने अपनॉ मॉ को पुकारा तो उसकी मॉ दौड़ी हुई आयी और फिर दोनों ने उन कबूतरों को पकड़ने की कोशिश की पर वे तो पास के पेड़ पर ऐसे बैठ गये थे जैसे वे अपने आजाद हो जाने की खुशी मना रहे हों।

अब मॉ बेटी को तो उन्हें पकड़ना ही था सो उन्होंने एक गड़रिये को पकड़ा और उससे उन्हें पकड़ने में सहायता मॉगी। इसके बदले में उन्होंने उसे एक कबूतर देने का वायदा किया। उस गड़रिये ने बहुत मेहनत कर के उन्हें पकड़ लिया और मॉ को दे दिया।

[4] The Pigeon Hunter. A folktale from Morocco.

पर जब उसने उन्हें उनके वायदे का ध्यान दिलाया तो उसने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया और घर की तरफ चल दीं। इससे गड़रिये को गुस्सा आ गया और उसने स्त्री की बॉह में धक्का मारा जिससे कबूतर एक बार फिर से उसके हाथ से छूट कर उड़ गये।

इस बार वे बहुत दूर उड़ गये तो इस बार मॉ और बेटी दोनों को अपने आप ही उनका पीछा करना पड़ा। वे उनके पीछे पीछे भागती चली गयीं जब तक कि वे एक घने जंगल में नहीं पहुॅच गयीं।

जब वे उस घने जंगल में काफी अन्दर तक पहुॅच गयीं तो बच्ची थक गयी। उसने अपनी मॉ से कुछ देर रुक कर सुस्ताने के लिये कहा पर उसकी मॉ की ऑखें तो उन दो कबूतरों पर लगी हुई थीं जिन्होंने उसे यहॉ तक आने पर मजबूर कर दिया था।

कुछ समय के बाद बच्ची को एक कुत्ता नजर आ गया। तो उसने अपनी मॉ से कहा — "देखो मॉ। यह हमारे चाचा का कुत्ता हमारे पीछे पीछे आ रहा है। यह शायद हमें वापस जाने का रास्ता दिखाने आया है।"

पर उसकी मॉ बराबर आगे चलती रही। उसकी ऑखें अभी तक कबूतरों पर ही जमी हुई थीं। बच्ची ने एक बार फिर से पीछे मुड़ कर देखा तो देखा कि अबकी बार एक बिल्ली उनके पीछे पीछे आ रही है।

वह बोली — "देखो मॉ। यह हमारे चाचा की बिल्ली हमारे पीछे पीछे आ रही है। यह शायद हमें वापस जाने का रास्ता दिखाने आयी है।"

फिर भी मॉ ने उसकी इस बात की तरफ ध्यान नहीं दिया और आगे ही आगे चलती रही। अब तक चलते चलते वह बहुत थक चुकी थी। पसीना पसीना हो रही थी। उसके घुटने दर्द कर रहे थे। उसको टॉगों में इतनी कमजोरी महसूस हो रही थी जैसे वह गिरने वाली हो।

जब उसकी बेटी और आगे नहीं चल सकी तो उसने अपने चारों तरफ देखा तो उसे एक गधा दिखायी दिया। गधे को देख कर वह बहुत खुश हुई।

वह अपनी मॉ से चिल्ला कर बोली — "देखो मॉ। वह चाचा का गधा है यह हमको घर वापस ले जाने के लिये आया है।"

आखिर जब मॉ की सारी ताकत खत्म हो गयी और वह अॅधेरे जंगल में देखते देखते और कुछ नहीं देख सकी तो उसने पीछे मुड़ कर देखा तो जो कुछ उसने देखा उसने तो उसके शरीर का जैसे सारा खून निचुड़ गया हो। वह चल भी नहीं सकी।

वह फुसफुसायी "ओह मेरी प्यारी बेटी। यह गधा नहीं है यह तो शेर है जो हम दोनों को खा जायेगा। भाग बेटी भाग।"

सो दोनों ने भाग कर एक ओक के पेड़ के नीचे जा कर शरण ली।

मॉ बच्चे की वजह से भारी थी सो उससे पेड़ पर नहीं चढ़ा गया।

वह नीचे बैठ गयी और अपनी बेटी से बोली — "बेटी तू पेड़ पर चढ़ जा। अगर तू शेर को मुझे दॉयी तरफ से खाते देखे तो तू मेरे बच्चे को बचाने के लिये मेरे पेट पर पत्ते फेंक देना क्योंकि यह एक बेटा होगा। और अगर वह मुझे बॉयी तरफ से खाना शुरू करे तो इसका मतलब यह है कि मेरे बेटी होगी।"

उसी समय शेर वहॉ आ गया तो बच्ची पेड़ पर चढ़ गयी। भूखे शेर ने आ कर मॉ के दॉयी तरफ अपने दॉत गड़ा दिये। बच्ची ने यह देखा तो वह भी तुरन्त ही अपने काम पर लग गयी। उसने पत्ते तोड़ तोड़ कर नीचे मॉ के ऊपर फेंकने शुरू कर दिये। बच्चा जल्दी ही पत्तों से पूरा ढक गया पर शेर को यह पता नहीं चला।

जब शेर ने मॉ को खा लिया तो उसने पेड़ को ज़ोर से हिला दिया ताकि उसकी बेटी भी नीचे गिर जाये पर जानवर के लिये पेड़ बहुत मोटा था सो वह वहीं लेट गया और उसके थक कर नीचे उतरने का इन्तजार करने लगा।

अचानक वहॉ एक कौआ आ पहुॅचा और बेटी जिस डाल पर रोती हुई बैठी थी उसके सामने वाली डाल पर आ बैठा। कौआ बोला — "मैं तुम्हें बचाऊॅगा अगर तुम अपनी मॉ का आधा कपड़ा मेरा घोंसला सजाने के लिये दो दो तो।"

बच्ची राजी हो गयी और कौआ वहॉ से उड़ गया।

जल्दी ही वह लाल गरम हल के आगे का हिस्सा ले कर आ गया। उसने शेर से कहा — "शेर चाचा। आप तो अभी भी बहुत भूखे होंगे। अगर आप अपना मुँह अपने कानों तक बड़ा खोल लें तो मैं आपके मुँह में कूद पड़ूँगा।"

शेर सचमुच में भूखा था सो उसने अपना मुँह खूब बड़ा कर के खोल लिया। कौए ने वह लाल गरम हल के आगे का टुकड़ा उसके मुँह में डाल दिया और फिर उसकी ऑखें निकाल लीं।

अब बच्ची आसानी से नीचे उतर सकती थी। बच्ची ने अपनी मॉ का आधा कपड़ा कौए को दे दिया और दूसरे आधे कपड़े में बच्चे को लपेट कर घर चली गयी।

वह सावधानी से अपने भाई को अपनी गोद में झुलाते हुए जंगल में से जा रही थी। कभी कभी वह अपने भाई को ज़िन्दा रखने के लिये एक दो बूँद पानी पिला देती थी।

रास्ते में उसे एक मादा भेड़िया दिखायी दी जिसके बच्चा होने ही वाला था। वह उसके देखने के लिये वहॉ रुक गयी। उसको लगा कि मादा भेड़िया बहुत परेशान है उसने अपने भाई को तो घास पर लिटा दिया और उसके बच्चों के जन्म में उसकी सहायता की।

मादा भेड़िया उसकी इस सहायता से इतनी खुश हुई कि उसने उसके भाई को अपने थनों से दूध पिलाया। और उसको अपना एक बच्चा भेंट में दिया। बच्ची दोनों बच्चों को ले कर वहॉ से फिर अपने घर की तरफ चल दी।

दूसरे दिन उसको एक मादा चीता मिली उसके भी बच्चा होने वाला था तो उसने मादा चीते की भी सहायता की। बदले में मादा चीते ने भी उसके भाई को अपना दूध पिलाया और अपना एक बच्चा दे दिया।

बच्ची ने वहॉ सरकंडे की एक टोकरी बनायी उसमें थोड़ी सी घास रखी और तीनों बच्चों को ले कर वहॉ से फिर अपने घर की तरफ चल दी।

उसके बाद उसे एक बॅदरिया मिली जिसे बच्चा होने वाला था। उसने उसकी भी सहायता की तो उसने भी उसे वही इनाम दिये जो उसे पहले जानवरों ने दिये थे। सो उसकी टोकरी में अब एक बच्चा और बढ़ गया।

फिर एक मादा भालू एक मादा तेंदुआ और एक मादा साही। इन्होंने भी बच्ची की वैसे ही सहायता की जैसे दूसरे जानवरों ने की थी। उसका भाई सात सात जानवरों का दूध पी कर अब बहुत तन्दुरुस्त और खुश लग रहा था।

सातों जानवरों को वैसे ही खाना खिलाते हुए और वैसे ही पानी पिलाते हुए जैसे वह अपने भाई की देखभाल कर रही थी। बहुत जल्दी ही सातों बच्चे अपना खाना खाने लायक हो गये थे। पर इस बीच उन सबके मुकाबले में उसका अपना भाई ज़रा धीरे धीरे बढ़ रहा था और अभी भी उसके ऊपर निर्भर था।

हालॉकि वह अभी छोटा ही था पर वह बहुत खेलता था। सातों जानवर उसके साथ बहुत खेलते थे और उसे दूसरे जानवरों जैसे सॉप आदि से उसकी रक्षा करते थे।

एक दिन बहिन ने कुछ सोचा। वह एक पहाड़ पर चढ़ गयी और अपने भाई को अपनी गोद में लिटा कर वहॉ बैठ गयी। दूसरे जानवर उसके चारों तरफ गोले में बैठ गये और इन्तजार करने लगे।

बहिन ने अपनी ऑखें बन्द कीं और अपने हाथ आसमान की तरफ उठाये तो जानवरों ने भी अपने अपने सामने वाले पंजे ऊपर की तरफ उठा दिये। एक पल के लिये सभी चुप बैठे रहे।

फिर अपनी ऑखों से ऑसू बहाते हुए बहिन ने भगवान की प्रार्थना करनी शुरू की — "हे भगवान मेरी प्रार्थना सुनो। मेरे भाई को एक पूरा बड़ा आदमी बना दो।" उसके साथ साथ जानवर भी बोले।

जब उसने ऑखें खोल कर देखा तो उसका छोटा भाई अब उसकी गोद में नहीं था। बल्कि एक नौजवान हथियारों से सजा हुआ एक सफेद घोड़े पर सवार खड़ा था। सब जानवरों ने उसे सिर झुकाया और उसे सलाम किया।

उस नौजवान ने अपनी बहिन को अपने पीछे बिठाया और चल दिया। जहॉ नौजवान गया वहॉ वहॉ उसके साथ वे जानवर भी चलते गये।

चलते चलते वे एक रेगिस्तान में पहुँचे जहाँ उनके लिये कोई खाना था और न पानी। रात हुई तो सब आराम करने के लिये इकट्ठा हुए।

जब नौजवान यह सोच रहा था कि वह अपनी बहिन के साथ क्या करे कि कहीं से एक गुल वहाँ प्रगट हो गया। गुल ने वहाँ बैठे हुए सब लोगों को सलाम किया और फिर नौजवान जो सबके बीच में बैठा हुआ था की तरफ देख कर बोला —

"आपका यहाँ स्वागत है। मेरे पास बहुत बड़ा घर है खूब खाना पीना है। आप सब मेरे साथ क्यों नहीं चलते?" नौजवान ने उसका निमन्त्रण स्वीकार कर लिया और वे सब गुल के पीछे पीछे चल दिये।

गुल सचमुच में ही बहुत अच्छा मेहमानदार था। उसके पास सचमुच ही बहुत सारा खाना और पानी था। वहाँ सबने पेट भर कर खाया पिया और आराम से सोये। सुबह को गुल ने उन सबसे कहा कि वे वहाँ चाहे जितने दिन तक रह सकते थे। वे सब वहाँ वहाँ बहुत खुश थे सो वे वहाँ काफी दिन तक रहे।

जैसे जैसे दिन बीतते गये तो गुल और नौजवान दोनों आपस में बहुत अच्छे दोस्त बनते गये। अब वे साथ साथ घूमते देखे जाते। उन्होंने आपस में कसम खायी की वे एक दूसरे को कभी धोखा नहीं देंगे और नहीं छोड़ेंगे।

एक दिन नौजवान अपने घोड़े पर सवार हो कर पड़ोस को जानने की कोशिश में इधर उधर घूम रहा था कि वह एक ऐसी जगह आ गया जहॉ मरुद्यान था और जिसके पास ही कुछ बैडूइन्स[5] अपने ऊँटों के साथ बसे हुए थे।

उनमें एक चरवाहिन थी जो इतनी सुन्दर थी जैसे कोई मोती। नौजवान को उससे प्रेम हो गया। उसने निश्चय किया कि वह उसके घर जा कर उसके परिवार वालों से मिलेगा और उनसे उसका हाथ अपने लिये मॉगेगा।

जब वह घर लौटा तो यह बात उसने अपनी बहिन को बतायी तो वह अपने भाई से ईर्ष्या करने लगी तो उससे बहस भी करने लगी। उसने उसके मना करने को नहीं माना क्योंकि वह तो उससे सिर से ले कर पैरों तक प्यार करता था।

तो जब उसकी बहिन गुल के साथ अकेली थी तो वह उससे शहद से मीठे शब्दों में बोली कि वह उसके भाई को मार दे। यह सुन कर गुल को बहुत आश्चर्य हुआ।

गुल ने पूछा — "यह मैं कैसे कर सकता हूँ। हम लोगों ने एक दूसरे के प्रति वफादार रहने की कसम खायी है। मैं उसके साथ यह नहीं कर सकता।"

[5] Bedouins – The Bedouins in Israel are a small community of nomads, who live in Israel's Negev Desert, and are part of Israel's Arab Palestinian minority. They are found at other places too.

पर वह उसे लुभाती रही — "अगर तुम उसे मार दोगे तो मैं तुम्हारे साथ शादी कर लूँगी और फिर हमेशा तुम्हारी ही रहूँगी।"

आखिर गुल को उसकी बात माननी पड़ी। अगले दिन गुल और नौजवान रोज की तरह से शिकार के लिये जाने के लिये तैयार हुए तो गुल बोला — "आज जानवरों को साथ नहीं लेते। आज उन्हें आराम करने के लिये घर ही छोड़ देते हैं।"

नौजवान को इस बात पर कोई शक नहीं हुआ सो उन्होंने जानवरों को घर ही छोड़ा और शिकार के लिये चल दिये।

जब वे चले गये तो बहिन ने चक्की से अनाज पीसना शुरू कर दिया। साथ में वह एक मीठा सा गीत भी गुनगुनाती जा रही थी। उसकी मीठी गुनगुनाहट को सुन कर सब जानवर उसके पास आ गये और वहीं लेट कर सो गये।

जब गुल और नौजवान एक दलदल के पास पहुँचे तो गुल उसके घोड़े के सामने खड़ा हुआ और बोला — "अपने घोड़े से नीचे उतरो। मुझे बहुत दुख है मेरे दोस्त पर मुझे तुम्हें खाना पड़ रहा है।"

नौजवान को यह सुन कर बहुत धक्का लगा तो उसने उसे अपनी कसम की याद दिलायी। पर गुल तो अभी उसे अपना कोई दूसरा ही रूप दिखा रहा था। नौजवान को विश्वास हो गया कि उसके कहने का मतलब भी वही था वह जो कुछ कह रहा था।

एक पल सोच कर वह बोला — "ठीक है अगर यही मेरी किस्मत है तो। पर मरने से पहले क्या तुम मुझे तीन शब्द कहने की इजाज़त दोगे?"

गुल को भी कोई शक नहीं हुआ सो वह बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। तुम तीन ही क्यों तुम सात शब्द भी बोल सकते हो।"

नौजवान ने अपने सातों जानवरों को बहुत ज़ोर से आवाज दी और घोड़े से उतरने ही वाला था कि...

x x x x x x x

इस बीच घर में सातों जानवर बहुत गहरी नींद सोये हुए थे। बहिन बहुत ही मीठी आवाज में बहुत ही धीमे धीमे गा रही थी और अनाज पीस रही थी।

साही उसकी कोहनी के नीचे सो रहा था कि अचानक वह हिला और चक्की से टकरा गया। चक्की हिली और उसका हैन्डिल बहिन की दॉयी ऑख में जा कर लग गया जिससे उसकी ऑख उसी समय चली गयी।

साही तुरन्त ही उठा अपने साथियों को उठाया और उन्हें चेतावनी दी कि नौजवान खतरे में है। उसने उन्हें कहा कि उन सबको उसकी सहायता के लिये जाना चाहिये। वे तुरन्त ही वहॉ से कूद कर उसकी खुशबू सूँघते सूँघते उसके पास चल दिये। कुछ पल में ही वे दलदल के पास थे।

उन्होंने देखा कि उनका दोस्त घोड़े पर से उतर रहा है और गुल उसे खा जाने वाला है। वे उनके चारों तरफ एक गोला बना कर खड़े हो गये। नौजवान ने उन्हें इशारा किया तो उसी पल उन सबने मिल कर गुल के छोटे छोटे टुकड़े कर दिये। उन्होंने उसकी हड्डियॉ इकट्ठी कीं और दलदल के किनारे गाड़ दीं।

नौजवान ने उन सबके शरीरों को सहलाया और उनके सिरों पर थपकी दी। जानवरों से घिरा हुआ वह घर वापस चला गया। घर पहॅुच कर उसने देखा कि उसकी बहिन रो रही है तो उसने अपनी बहिन से पूछा कि उसे क्या हुआ है।

बहिन ने रोते हुए कहा कि जब वह जानवरों के लिये आटा पीस रही थी साही ने उसे मारा है। उसने उसे तसल्ली दी और कहा कि ऐसा फिर कभी नहीं होगा।

जब वह शान्त हो गयी तो उसने भाई से गुल के बारे में पूछा तो भाई ने बताया कि उसने उसे मार कर दलदल के किनारे गाड़ दिया है। इस पर बहिन ने जिद की कि वह उसको उस जगह ले जाये जहॉ उसने उसे गाड़ा था। सो नौजवान अपनी बहिन को दलदल के पास ले गया।

कुछ दिन बाद वह उस बैडूइन लड़की से मिला और शादी की रस्म का इन्तजाम कर के आया। अबकी बार बहिन ने उसका विरोध नहीं किया वह शान्त रही। शादी की रात वह चुपचाप दलदल की तरफ गयी और गुल की सात हड्डियॉ बटोर लायी।

किसी के बिना देखे उसने वे हड्डियॉ अपने भाई के बिस्तर के नीचे रख दीं और फिर बीमार होने का बहाना बनाते हुए सोने चली गयी।

रात में जब शादी की सब रस्में खत्म हो गयीं और दुलहा और दुलहिन को सोने के कमरे में ले जाया गया तो जैसे ही दुलहा बिस्तर पर आराम करने के लिये लेटा वे सातों हड्डियॉ उसके शरीर के अन्दर चली गयीं। और वह वहीं मर गया।

उसे इस दशा में देख कर दुलहिन ने सोचा कि शायद वह बहुत थक गया है इसलिये जल्दी ही सो गया है वह भी लेट गयी और सो गयी। सुबह को पता चला कि वह तो मर गया है।

क्योंकि मौसम बहुत गरम था सो वे उसकी लाश को उसी समय कब्रिस्तान ले गये और दफ़ना आये। इस तरह शादी एक दफ़न में बदल गयी।

रीति रिवाज के अनुसार तीसरे दिन दुख के समय का अन्त घोषित कर दिया गया। हर एक वहॉ से जाने की तैयारी करने लगा।

बैडूइन के सरदार ने अपने कबीले के सारे लोगों को इकट्ठा किया और उनसे राय मॉगी कि नौजवान के जानवरों का क्या करना चाहिये जिन्हें वह अपने पीछे छोड़ गया है।

सबने मिल कर फैसला किया कि ये जानवर तो जंगली हैं ये हमारे लिये और हमारे जानवरों के लिये बड़ा खतरा हो सकते हैं।

सो सरदार ने पहले तो अपने लोगों को अपने अपने तम्बुओं में बन्द हो जाने के लिये कहा बाद में उसने उन जानवरों को खुला छोड़ दिया ताकि वे आराम से वहॉ जा सकें जहॉ के वे थे।

तम्बुओं में बन्द सब लोगों की ऑखें तम्बुओं के छेदों में बाहर जानवरों का जाना देखने के लिये झॉक रही थीं।

सातों जानवर धीरे धीरे चल कर दरवाजे के पास तक गये। ऐसा लगा जैसे वहॉ जा कर वे एक दूसरे को सूँघ रहे हों जैसे आपस में सलाह कर रहे हों कि अब क्या करें।

लोगों को यह दृश्य देखने में बहुत अच्छा लग रहा था सो वे वही खड़े रहे जहॉ खड़े थे। वे देखना चाहते थे कि आगे ये क्या करते हैं।

जानवरों ने एक लाइन में तरीके से चलना शुरू किया। सबसे आगे शेर था। वे सब कब्रगाह की तरफ जा रहे थे। बैडूइन्स को लगा कि क्योंकि उन्होंने तीन दिनों से कुछ नहीं खाया है इसलिये वे कब्रगाह की तरफ जा रहे हैं ताकि वह कब्र खोल कर उसकी लाश को खा सकें।

जैसे ही जानवर कब्रगाह में घुसे उन्होंने कब्रों को सूँघना शुरू कर दिया जब तक कि वे एक ताजा खुदी हुई कब्र के पास नहीं आ गये। वहॉ उन्होंने उसे अपने पंजों से खुरचना शुरू किया जब तक कि उन्होंने उसमें से नौजवान की पूरी लाश नहीं निकाल ली। उन्होंने उसका सफेद कपड़ा हटाया तो उसकी नंगी लाश बाहर आ गयी।

लोग ऑखें फाड़े हुए इस दृश्य को बड़ी उत्सुकता से देख रहे थे। उसके बाद उन्होंने सबने अपनी जीभों और पंजों से उसका सारा शरीर टटोल डाला। जो लोग पास में खड़े थे वे साफ तरीके से देख पा रहे थे कि फिर जानवरों ने उसके शरीर की सब हड्डियों को निकाल कर एक तरफ रख दिया।

जब साही ने उसकी सातवीं और आखिरी हड्डी निकाली तो वह नौजवान ज़िन्दा हो गया।उसके हाथ तुरन्त ही अपने नीचे वाले हिस्से को ढकने के लिये चले गये। वह चिल्लाया — "जल्दी जल्दी से मेरा शाल दो।"

बैडूइन्स ने जो अभी अभी देखा तो वे तो उस बात पर यकीन ही नहीं कर पा रहे थे।वे लोग तो अपनी जगह पर चिपके से खड़े रह गये। नौजवान की बात सुन कर बैडूइन्स का सरदार तुरन्त ही घर गया और नौजवान का शाल और घोड़ा ला कर उसे दिया।

जानवरों की वजह से वह उसके पास आने में डर रहा था सो उसने वह शाल उसके ऊपर वहीं से फेंक दिया। नौजवान ने भी उसको तुरन्त ओढ़ा अपने घोड़े पर सवार हुआ और अपने सातों जानवरों के साथ वहॉ से चल दिया।

सरदार ने जो दुलहिन का पिता भी था तुरन्त ही अपने लोगों से कहा कि वह नौजवान की सातों हड्डियॉ इकट्ठी कर लायें। उसने वे हड्डियॉ एक बुढ़िया को दे दीं जो एक बहुत ही अच्छी जादूगरनी थी।

काफी जॉच पड़ताल के बाद जादूगरनी ने उसे बताया कि वे हड्डियॉ तो किसी गुल की थीं। बैडूइन्स ने इस मामले पर उससे काफी बातें कीं और दोषी का पता लगा लिया। वे उसे जनता के सामने न्याय के लिये ले आये।

सरदार ने तब लोगों से एक गहरा गड्ढा खोदने के लिये कहा और उस गड्ढे में उसने वे सातों हड्डियॉ और नौजवान की बहिन दोनों को दफ़ना दिया।

उसके बाद शादी की तैयारियॉ फिर से शुरू हुई, इस बार और ज़ोर शोर से। नौजवान की शादी उस लड़की से हो गयी जिसको वह इतना प्यार करता था फिर वे दोनों खुशी खुशी रहे।

3 सुलतान की बेटी[6]

यह बहुत पुरानी बात है कि एक सुलतान रहता था जिसकी जनता उसे बहुत प्यार करती थी। भगवान ने उसे तीन बेटियॉ दी थीं पर उसके बेटा एक भी नहीं था। तीनों बेटियों में से उसकी सबसे छोटी बेटी बहुत सुन्दर थी और पिता की बहुत लाड़ली थी।

उसकी सारी इच्छाऐं उसी समय पूरी कर दी जाती थीं जब वह उन्हें कहती थी। जाहिर है कि यह देख कर उसकी बहिनें उससे बहुत जलती थीं। उन्होंने उसकी ज़िन्दगी दूभर कर रखी थी।

यह देख कर उसने राजा से प्रार्थना की कि वह उसे शान्ति से रहने देने के लिये एक अलग महल बनवा दें और उसे अलग से कुछ नौकर चाकर दे दें। एक बार जब उसकी यह इच्छा पूरी हो गयी तो फिर उसने किसी को अपने पास आने की इजाज़त नहीं दी। वह उस महल में अकेली एक साधु की तरह से रहती थी।

पड़ोसी राज्य के एक राजकुमार ने इस सुन्दर राजकुमारी के बारे में सुना कि यह एक अलग महल में रहती है। उसने राजकुमारी को एक सन्देश भेजा पर राजकुमारी ने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया।

राजकुमार ने फिर उसके महल आना शुरू कर दिया और उसे बताया कि वह उससे शादी करना चाहता था। राजकुमारी ने उसके इस प्रस्ताव को स्वीकार तो कर लिया पर बहुत शर्तों के साथ।

[6] The Sultan's Daughter. A folktale from Morocco.

राजकुमार को उसे वह चीज़ सौ में देनी पड़ेगी जो भी उसने उससे माँगी। उसकी सारी शर्तों को पूरा करने के बाद भी राजकुमार उससे सब लोगों के सामने नहीं मिल सकेगा।

राजकुमार को अपने घर से उसके महल तक एक सुरंग बनवानी पड़ेगी वह उसी से हो कर आ कर उससे मिल सकेगा और वह भी केवल खाना खाने के समय पर ही।

अब एक सुलतान के लिये यह काम कोई मुश्किल तो था नहीं खास कर के जब जबकि वह उससे प्यार करता था। सो अब वह राजकुमारी से जल्दी जल्दी मिलने लगा।

सब कुछ ठीक से छिपाने के बाद भी इस बात की अफवाह उसकी बहिनों के पास भी पहुँची। उनकी उत्सुकता जागी कि वह लड़का देखने में कैसा लगता है। वह उसके पास सुरंग से ही क्यों आता जाता है।

तो उन्होंने अपने पिता से प्रार्थना की कि वे अपनी बहिन को कोई सन्देश भेजना चाहती हैं। उन्होंने उसे सन्देश भेजा कि वे लोग उसे बहुत याद करती हैं और अब वे उससे मिलना चाहतीं हैं।

इन शब्दों को पढ़ कर छोटी बहिन का दिमाग बदल गया और उसे लगा कि उसके साथ उनकी ईर्ष्या पुरानी बात थी। सो उसने उन दोनों को माफ कर दिया और उनसे मिलने के लिये कह दिया।

दोनों बहिनों ने मिल कर एक प्लान बनाया और उस प्लान के अनुसार वे उससे मिलने के लिये चल दीं।

उन्होंने उसे सलाह दी कि वे उसे नहानघर ले कर जायेंगी यानी शहरों में जो नहानघर जनता के लिये बने रहते हैं वे उसे वहॉ ले कर जायेंगी। छोटी राजकुमारी को यह विचार बहुत पसन्द आया। जब वे वहॉ पहुँचीं तो उन्होंने बहाना किया कि वे कुछ भूल आयी हैं।

उसे नौकरों के साथ अकेली छोड़ कर वे वहॉ से चली आयीं और जल्दी से उसके कमरे में पहुँचीं ताकि वह उस राजकुमार की एक झलक देख सकें जो उससे मिलने आता था। उन्होंने इस समय को उसके राजकुमारी के मिलने के समय से मिला कर रखा हुआ था।

देखने भालने के बाद उन्हें पता चला कि वह सुरंग तो शीशे की बनी हुई थी। जब उन्होंने सुना कि वह उस सुरंग में से आ रहा है तो उन्होंने उस सुरंग में पत्थर फेंकने शुरू कर दिये। इससे सुरंग का शीशा कहीं कहीं से टूटने लगा।

एक बार एक शीशे का टुकड़ा उसकी ऑख में सीधा जा कर लगा जिससे उसकी ऑख गम्भीर रूप से घायल हो गयी। जो कुछ भी उसके साथ हुआ इस पर गुस्सा हो कर वह बड़े दुख के साथ वहीं से अपने घर लौट गया।

बहिनें भी अपने बहिन के पास चली गयीं। सब वहॉ पर नहायीं और फिर अपने अपने घर चली गयीं छोटी बहिन ने उनको बहुत बहुत धन्यवाद दिया।

छोटी बहिन ने सोचा था कि उसके घर में उसका मेहमान इन्तजार कर रहा होगा पर वहॉ तो कोई भी नहीं था। उसने उसका बहुत देर तक इन्तजार किया पर वह नहीं आया तो उसको चिन्ता हुई कि लगता है उसे कहीं कुछ हो गया है।

वह उस सुरंग में गयी कि शायद उसने उसमें कोई सन्देश छोड़ा हो तो वहॉ उसने देखा कि सुरंग तो कई जगह से टूटी पड़ी है। उसमें पत्थर के टुकड़े पड़े हैं और वहॉ खून के धब्बे के निशान भी हैं। एक पल को उसने सोचा तो उसे अपनी बहिनों का नहानघर से जाने का मतलब समझ में आ गया।

अब वह यह भी समझ गयी थी कि समय और दूरी भी ईर्ष्या को कम नहीं कर सकतीं।

वह अपने महल से बाहर निकली तो उसको एक बुढ़िया मिल गयी जो हमेशा उसके महल के कोने पर बैठी रहती थी। उसने उसे अपने महल में बुलाया और अपने निजी कमरे में ले गयी।

बुढ़िया के कपड़े उसने पहन लिये और इस तरह वह फटे और मैले कपड़े पहन कर अपने होने वाले पति को ढूँढने के लिये महल से बाहर चली गयी।

दिन भर में वह कुछ मील चली और रात को वह एक विलो के पेड़ के नीचे लेट कर सो गयी। उस पेड़ पर दो कबूतर रात को सोने के लिये बैठे हुए थे।

वहॉ बैठ कर वे दो प्रेमियों के बारे में बात करने लगे कि किस तरह से राजकुमारी की बहिनों ने उनके आपस के सम्बन्ध खराब कर दिये। उन्होंने यह भी कहा कि वह नौजवान एक बड़े खतरे में है क्योंकि उसकी दृष्टि हमेशा के लिये जा सकती है। कबूतरों ने फिर कहा कि उसकी ऑखों का इलाज केवल उनके पंखों की राख है।

उसके बाद वे कबूतर गहरी नींद सो गये। इस बीच राजकुमारी पेड़ पर चढ़ गयी और उन्हें पकड़ लिया। फिर उसने उनके पंख निकाले उन्हें जलाया और उनकी राख एक कपड़े में लपेट ली। अगले दिन वह फिर अपने प्रेमी को ढूँढने के लिये चल दी।

महल पहुँचने पर महल के चौकीदारों ने उसे कोई भिखारिन या पागल स्त्री समझ कर अन्दर नहीं जाने दिया पर वह सुलतान से मिलने की बार बार जिद करती रही कि वह उनके लिये एक बहुत जरूरी सन्देश ले कर आयी है।

जब उसने कहा कि वह उसके बेटे के लिये उसकी ऑखों की दवा ले कर आयी है तब कहीं जा कर उन्होंने उसे अन्दर जाने की इजाज़त दी। उसके बाद तो उसे आदरपूर्वक अन्दर ले जाया गया।

सुलतान के सामने ही उसने गरम पानी से उसके बेटे की ऑखें साफ कीं और फिर उनके ऊपर थोड़ी सी राख छिड़क दी। उसने कहा कि वह अब कम से कम एक घंटे के लिये अपनी ऑखें बन्द रखे। जब सुलतान ने उसे इस बात का इनाम देना चाहा तो उसने मना कर दिया कहा कि यह तो भगवान का इलाज था।

वह जल्दी से अपने महल लौट आयी और उसी वेश में अन्दर घुस गयी। उसने बुढ़िया को बहुत बहुत धन्यवाद दिया और उसे बहुत सारा सोना भी दिया।

जब वह भिखारिन चली गयी तो उसने अपने रसोइये को अपनी जैसी शक्ल का एक केक बनाने लिये कहा। फिर उसने उसे अपने बिस्तर में लिटा दिया और एक साफ सफेद चादर से उसे ढक दिया। उसने उसका केवल चेहरा बाहर खुला छोड़ दिया।

दो घंटे बाद सुलतान के बेटे ने अपनी ऑखें खोलीं तो उसकी ऑखों में कोई दर्द नहीं था और उसकी दृष्टि भी पूरी तरीके से वापस आ गयी थी।

वह बहुत खुश हुआ और अपने पिता से कहा कि वह उसे उस बुढ़िया से मिलवा दे जिसने उसे ठीक किया था पर उसे बताया गया कि वह तो वहॉ से जा चुकी थी। वह अपनी तलवार ले कर अपने घोड़े पर कूद कर बैठ गया और उस लड़की की खोज में निकल गया जिसे वह सोचता था कि उसने उसे धोखा दिया है।

जब वह महल पहुॅचा तो वह उसी सुरंग द्वारा उसके महल की तरफ चला जिससे हो कर वह उससे मिलने जाया करता था। वहॉ पहुॅच कर उसने देखा कि वह तो मुस्कुराती हुई अपने पलंग पर आराम से सो रही है।

वह बोला — "ओह इसकी इतनी सुन्दरता के नीचे इसकी कितनी निर्दयता छिपी हुई है।" कह कर उसने म्यान में से अपनी तलवार निकाली और तुरन्त ही उसका सिर काट दिया।

इस सिर काटने में पेस्ट्री का एक छोटा सा टुकड़ा छिटक कर उसके मुँह में जा पड़ा। उसे लगा कि एक बार फिर वह छला गया है। वह सीधा खड़ा हो गया और चारों तरफ देखने लगा पर पूरे कमरे में शान्ति छायी हुई थी और सब दरवाजे बन्द थे।

जैसे ही वह उस नकली स्त्री की चादर हटाने के लिये नीचे झुका कि अचानक से पीछे से कोई उस पर गिर गया और उसकी गरदन को चूमने लगा।

तब उसने बताया कि उसकी बहिनों ने उसके साथ क्या किया था और फिर कैसे वह उसकी ऑख ठीक करने के लिये उसके महल गयी थी। जब राजकुमार को पूरी सच्चाई का पता चला तो उसने रोते हुए उसे गले लगा लिया।

उसके बाद उनकी शादी हो गयी और फिर वे हमेशा सुखी रहे।

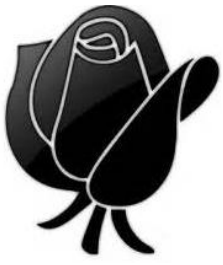

4 मौत का देवदूत[7]

तीन बहुत ताकतवर देवदूत अल्लाह की आज्ञा का पालन करने के लिये अल्लाह के सिंहासन के सामने बड़े आदर के साथ खड़े थे। अल्लाह ने उनमें से एक से कहा — "तुम धरती पर जाओ और वहॉ से वहॉ की मुट्ठी भर मिट्टी ले कर आओ।"

यह सुन कर वह देवदूत अपने पंखों से वातावरण को चीरता हुआ धरती की ओर चल दिया। वहॉ पहुँच कर उसने अल्लाह की आज्ञा से एक मुट्ठी मिट्टी उठायी।

पर जैसे ही उसने यह किया कि उसके इस काम से सारी दुनियॉ बीच से ले कर उसके किनारे तक कॉप उठी और हिलने लगी। और बहुत ज़ोर से रोने लगी जैसे उस पर बहुत बड़ा दुख आ पड़ा हो।

विनम्र देवदूत ने हाथ में ली हुई मिट्टी ऐसी की ऐसी ही वहीं छोड़ दी। वह मिट्टी मिट्टी में मिल गयी और वह देवदूत रोता हुआ शर्म से सिर झुका कर अल्लाह के पास वापस आ गया जिन्होंने उसे वहॉ भेजा था।

अल्लाह बोले — "इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं है क्योंकि यह तुम्हारी किस्मत में नहीं लिखा था। कोई बात नहीं अब तुम दूसरे हुक्म का इन्तजार करो।"

[7] The Angel of Death.

उसके बाद अल्लाह ने तीन देवदूतों में से दूसरे देवदूत को बुलाया और उससे कहा — "तुम धरती पर जाओ और वहॉ से वहॉ की मुट्ठी भर मिट्टी ले कर आओ।"

यह सुन कर वह देवदूत भी अपने पंखों से वातावरण को चीरता हुआ धरती की ओर चल दिया। वहॉ पहुँच कर उसने भी अल्लाह की आज्ञा से एक मुट्ठी मिट्टी उठायी।

पर जब उसने भी धरती का कॉपना हिलना और कराहना सुना तो वह भी उस मिट्टी को नहीं उठा सका। उसने भी वह मिट्टी वहीं की वहीं छोड़ी और शर्म से रोता हुआ अल्लाह के पास वापस आ गया जिन्होंने उसे वहॉ भेजा था।

अल्लाह बोले — "यह काम तुम्हारे लिये भी नहीं था। मैं इसके लिये तुम्हें दोष नहीं देता। तुम भी एक तरफ को खड़े हो जाओ। तुम्हारे लिये कोई दूसरी सेवा इन्तजार कर रही है।"

उसके बाद अल्लाह ने तीसरे देवदूत को भेजा तो वह भी बहुत तेज़ी से धरती की ओर गया और वहॉ से मिट्टी उठा ली। पर जब धरती कॉपी हिली रोयी कराही तो दुखी देवदूत बोला — "यह काम तो मुझे अल्लाह ने सौंपा है और उसकी आज्ञा का पालन तो होना ही चाहिये चाहे हमारे दिल दुख से टूट रहे हों।"

कह कर वह अल्लाह के पास लौट आया और वह मिट्टी ला कर उसने अल्लाह के सिंहासन के पास ला कर रख दी।

अल्लाह बोले — "क्योंकि तुम यह काम कर लाये हो तो अबसे यह दफ्तर तुम्हारा है ओ अज़रायल[8] कि तुम जब समय पड़े तो चाहे कुछ भी हो जाये धरती से आदमियों की और स्त्रियों की, संतों की और पापियों की, राजकुमारों की और भिखारियों की, बूढ़ों की और बच्चों की सबकी आत्माऐं इकट्ठा कर के लाओ। फिर चाहे उनके दोस्त रो रहे हों उनके प्रिय लोगों के दिल दर्द से भरे हों।"

इस तरह अज़रायल मौत का देवदूत बन गया।

एक बार अज़रायल ने स्वर्ग में कुछ गलत कर दिया सो उसकी सजा भोगने के लिये उसे आदमी के रूप में धरती पर जन्म लेने के लिये कहा गया – और वह भी अपने काम से बचे बिना यानी साथ में मौत के देवदूत का कर्तव्य भी निभाना था।

सो वह धरती पर एक डाक्टर के रूप में पैदा हुआ और बहुत जल्दी ही एक अच्छे डाक्टर की हैसियत से मशहूर भी हो गया। उसने शादी कर ली और उसके एक बेटा भी हो गया।

उसकी पत्नी भयानक रूप से बहस करने वाली थी और उसके अपने उठने बैठने वालों में उसके पति की खुशी को यह बात नहीं बढ़ाती थी कि वह खुद अपने पति से ज़्यादा जीने वाली थी।

जब अज़रायल बूढ़ा हो गया और उसकी मुक्ति का समय पास आया तो उसने अपने असली चरित्र के राज़ को राज़ ही रखने की बड़ी सख्त कसम दे कर अपने बेटे को बताया।

[8] Azrael

उसने कहा — "क्योंकि मैं अब जल्दी ही यहाँ से जाने वाला हूँ तो यह मेरा फर्ज बनता है कि मैं तुम्हें तुम्हारे भविष्य के लिये सब कुछ दे कर जाऊँ।

तुम वह सब जानते हो जो विज्ञान से और दवाओं से जाना जा सकता है। पर अब मैं तुम्हें एक ऐसी रहस्य की बात बताने जा रहा हूँ जिससे इस धन्धे में तुम्हें अचूक सफलता मिलेगी।

जब तुम किसी बीमार के पास जाआगे तो मैं भी तुम्हें वहीं खड़ा मिलूँगा। कोई और मुझे नहीं देख पायेगा सिवाय तुम्हारे। अगर में उसके सिरहाने की तरफ खड़ा होऊँ तो समझना कि तुम उसे चाहे कितनी भी अच्छी दवा क्यों नहीं दोगे वह बचेगा नहीं।

और अगर मैं उसके पैरों की तरफ खड़ा होऊँ तो समझना कि तुम उसे चाहे कितना भी असरदार जहर क्यों न दो वह बच जायेगा।"

इतना कह कर जैसा कि अज़रायल की किस्मत में लिखा था वह मर गया। उसके बेटे ने अपने पिता की बात मानी और वह भी जल्दी ही बहुत मशहूर और अमीर हो गया।

पर वह बहुत खर्चीला था सो कुछ ही दिन बाद उसका सारा पैसा खत्म हो गया। एक दिन जब उसका बटुआ बिल्कुल खाली था तो किस्मत से वह एक बहुत अमीर आदमी को देखने के लिये गया। वह मौत के दरवाजे पर ही खड़ा था।

जब वह उसके कमरे में घुसा तो उसने देखा कि उसका पिता उस आदमी के सिर की ओर खड़ा है। वह समझ गया कि यह बीमार बचने वाला नहीं है फिर भी उसने उसको जॉचने का बहाना किया और कहा कि बीमार की हालत बहुत खराब है और उसके बचने की कोई आशा नहीं है।

यह सुन कर बेचारा अमीर आदमी तो डर के मारे आपे से बाहर हो गया। उसने डाक्टर का घुटना पकड़ लिया और उससे कहा कि अगर वह उसे ठीक कर देगा तो उसके पास जो कुछ भी था वहउसका आधा हिस्सा उसे दे देगा।

अज़रायल का मन यह सुन कर ललक गया। काफी देर के बाद उसने कहा — "अगर आप मुझे अपनी सम्पत्ति का तीन चौथाई हिस्सा देने का वायदा करें तो मैं आपको बचाने की अपनी पूरी कोशिश करूँगा चाहे मैं आपको बचा पाऊँ या न बचा पाऊँ।"

तुरन्त ही एक समझौता पत्र लिखा गया उस पर उन दोनों के हस्ताक्षर किये गये गवाहों के हस्ताक्षर किये गये फिर उसे बन्द कर के उस पर सील लगा दी गयी।

तब डाक्टर ने डरी हुई शक्ल बना कर अपने पिता से बीमार के पैरों की तरफ जाने के लिये कहा पर वह मौत का देवदूत तो हिला तक नहीं।

इस पर डाक्टर ने चार मजबूत लोग बुलाये और उनसे बीमार के बिस्तर को उठा कर पलटवा दिया जिससे उसका पिता अब

उसके पैरों की तरफ खड़ा था। हालॉकि यह सब बड़ी चतुराई से किया गया था फिर भी उसका पिता अभी भी उसके सिर की ओर ही खड़ा था।

यह चाल कई बार खेली गयी पर नतीजा नहीं बदला। अज़रायल हमेशा ही पलंग के सिरहाने की तरफ ही खड़ा दिखायी देता। बेटा कोई और चाल खेलने पर मजबूर हो गया। उसने उन चारों आदमियों को तो वापस भेज दिया।

अचानक वह बहुत ज़ोर ज़ोर से कॉपने लगा और उसी हालत में वह अपने पिता के कान में फुसफुसाया "पिता जी मुझे मॉ के आने की आवाज सुनायी दे रही है।" उसी पल डर को मारे उसका पिता वहॉ से भाग लिया।

और इसका नतीजा क्या निकला? कि बीमार ठीक होने लगा। पर उसके बाद से अज़रायल अपने बेटे को दिखायी देना बन्द हो गया। और फिर इसका नतीजा यह हुआ कि उसके इलाज में बहुत गलतियॉ होने लगीं और उसका मशहूरी बहुत जल्दी ही खत्म हो गयी।

एक दिन वह एक ज्यू के दफ़न में गया था जो उसकी वजह से ही मरा था और फिर वह अपने पिता के दुख में "वादियें नार"[9] में

[9] Wady-en-Naar – Hell has seven gates, one of which is in Wady-en-Nâr; and the Angel of Death has his workshop in one of the caves in that gloomy valley, as appears in this story.

टहल रहा था कि वहॉ एक गुफा के मुँह पर उसने अपने पिता अज़रायल को खड़े देखा।

उसके पिता ने बड़ी रूखी आवाज में कहा — "कुछ ही मिनटों में तुम मरने वाले हो। तुमने क्योंकि मेरे कामों में दखल दिया है इसलिये तुम्हारी उम्र कम कर दी गयी है।"

नौजवान ने उससे दया की विनती की। वह उसके पैरों पर गिर गया और उन्हें चूमने लगा जब तक अज़रायल का दिल थोड़ा नम्र नहीं हो गया।

अज़रायल बोला — "अच्छा चलो यहॉ मेरी गुफा में आओ। देखते हैं कि तुम अपनी अक्ल से कठिनाई में भी कोई रास्ता निकाल पाते हो या नहीं। हालॉकि इस समय मैं खुद तुम्हारी सहायता करने में असमर्थ हूँ पर हॉ यह सम्भव है कि तुम अपनी अक्लमन्दी से ही कोई रास्ता ढूँढ लो।"

वे लोग सात कमरों में से हो कर गुजरे जिनकी दीवार किसी दवा बेचने वाले की दूकान जैसी लग रही थीं। सारे कमरों में उनकी दीवारों के सहारे सहारे आलमारियॉ लगी हुई थीं जो पूरी की पूरी बोतलों से सुराहियों से और सन्दूकचियों से भरी हुई थीं।

जैसा कि अज़रायल ने उसे बताया वे सब ऐसी चीज़ों से भरी हुई थीं जिनसे आदमी को मौत आती थी। अज़रायल ने उनमें से एक बरतन निकाला और उसके ऊपर का धातु का ढक्कन खोला तो बेटे को ऐसा लगा जैसे उसमें से हवा निकल गयी हो।

अज़रायल बोला — "किसी नौजवान को कुछ ही मिनटों में घोड़े से गिर कर मरना है। मैंने "अफ़रित" को अभी अभी इस बरतन में से छोड़ा है जो घोड़े को बिदकायेगा।" दूसरे बरतन को उसे दिखा कर अज़रायल बोला — "इसमें एक अजीब चिड़िया सफात के अंडों के खोल हैं। यह चिड़िया कभी नहीं बैठती चाहे यह अपने साथी के साथ ही क्यों न हो।

यह अपने अंडे पंखों पर देती है और अंडों के नीचे धरती पर गिरने से पहले ही इनमें से बच्चे निकल आते हैं। इस तरह से धरती पर केवल अंडे के खोल ही गिरते हैं क्योंकि बच्चे अंडों में से निकलते ही उड़ जाते हैं।

अक्सर कर के ये अंडे भूखे और खून के प्यासे शिबे[10] को मिल जाते हैं और वह इन्हें खा लेता है। इससे वह पागल हो जाता है और रास्ते में मिलते हर प्राणी को काटता है। उसके काटने से सबको पानी से डर लगने लगता है जिससे मुझे अपना काम करने में बहुत परेशानी होती है।"

इस तरह बातें करते समझते वे एक बहुत बड़े कमरे में आ पहुँचे। वहाँ मेजों की कई लाइनें लगी हुई थीं जिनमें से दो लाइनों पर बहुत तरह के और कई साइज़ के मिट्टी के दिये रखे हुए थे।

[10] Shibeh - Shibeh (lit. "the leaper") is one of the names of the leopard. But in folk-lore it is described as a creature combining the characteristics of the badger and the heyna.

उनमें से कुछ तो बहुत तेज़ चमक रहे थे कुछ टिमटिमा रहे थे जबकि उनमें से कुछ बुझने वाले हो रहे थे।

अज़रायल बोला — "ये लोगों की ज़िन्दगियॉ हैं। यह गैब्रील[11] की जगह है। इनको भरना और जलाना उसका काम है पर वह थोड़ा लापरवाह है। देखो वह तुम्हारे बराबर वाली मेज पर अपने तेल का घड़ा छोड़ गया है।"

बेटा बेचैनी से चिल्ला कर बोला "मेरा दिया, कहॉ है मेरा दिया?"

मौत के देवदूत ने उसे एक बुझता हुआ दिया दिखा कर उससे कहा "यह रहा तुम्हारा दिया।"

वह फिर चिल्लाया — "पिता जी मेरे ऊपर दया कीजिये मेरा दिया भर दीजिये।"

"यह तो गैब्रील की जगह है मेरी नहीं। पर मैं केवल एक मिनट के लिये तुम्हारी ज़िन्दगी नहीं लूँगा क्योंकि मुझे इनमें से उन दियों को इकट्ठा करना है जो बुझ गये हैं और फिर उन्हें कमरे के दूसरी तरफ ले कर जाना है।"

बेटे को वहीं उसके बुझते हुए दिये के पास छोड़ कर पिता चला गया और बेटे ने तुरन्त ही गैब्रील का तेल का घड़ा उठाया और उससे अपनी ज़िन्दगी का दिया भरने ही वाला था कि परेशानी में उसका हाथ कॉपा और बजाय दिये में तेल भरने के वह तेल दिये

[11] Gabriel is an Angel

की बत्ती की लौ पर गिर गया जिससे उसकी ज़िन्दगी का दिया तुरन्त ही बुझ गया।

अज़रायल वापस आया और अपने बेटे का खाली दिया उठा कर सारे कमरों से हो कर गुफा के मुँह की ओर चल दिया। बाद में डाक्टर की लाश वहाँ पायी गयी।

उसने सोचा "बेवकूफ कहीं का। उसे देवदूतों के कामों में दखल क्यों डालना चाहिये। फिर भी अब कम से कम यह तो है कि वह यह नहीं कह सकता कि मैंने उसे मारा।"

कहावत है कि "अज़रायल तो हमेशा ही अपने किये कामों का कोई न कोई बहाना ढूँढ लेता है।"

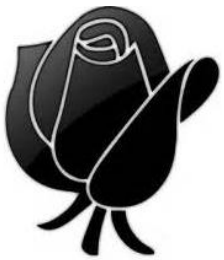

5 नीति की कहानियॉ[12]

पहली कहानी

उस समय खलीफा हारूँ अल रशीद बगदाद के खलीफा[13] थे। एक बार वे बाहर घूमने निकले तो उन्होंने देखा कि एक बूढ़ा बड़े मन से अंजीर का पेड़ लगा रहा है। उन्होंने जा कर उस बूढ़े से पूछा कि वह पेड़ लगाने की तकलीफ क्यों कर रहा है जिसका फल उसे शायद कभी मिलेगा ही नहीं।"

उस सफेद दाढ़ी वाले ने कहा — "ओ मूमेनीन के अमीर।[14] इन्शा अल्लाह शायद मुझे इस पेड़ का फल खाने को मिल जायें पर अगर मुझे नहीं मिले तो अल्लाह ने चाहा तो मेरे बेटे को तो मिल जायेंगे। जैसे अपने पिता और दादा के लगाये गये पेड़ों के फल मैं खा रहा हूँ।"

खलीफा ने पूछा — "आपकी उम्र क्या है?"

बूढ़ा बोला — "एक सौ सात साल।"

खलीफा बोले — "एक सौ सात साल। अगर आप इस पेड़ के फल खाने के लिये ज़िन्दा रहें तो मुझे भी बताइयेगा।"

---

[12] Moral Stories. Folktales from Iraq. Taken from : https://www.sacred-texts.com/asia/flhl/flhl29.htm#fn_94

[13] Harun el Rashid was the Caliph of Baghdad during 763 to 803 AD. He is the most famous Caliph of Baghdad. He has lot many tales on his name. He is most famous for his justice. There are several versions of this tale available in Libya and Syria but they cannot be categorized under the "Moral Tales"

[14] Amir el Mumenin

इस घटना को घटे हुए कई साल बीत गये। हारूँ तो अब इसे भूल भी चुके थे कि एक दिन उनके नौकर ने उनके दरबार में आ कर कहा कि एक बहुत ही बूढ़ा आदमी उनसे मिलना चाहता है। उसका कहना है कि वह खलीफा के कहने पर उनके लिये एक टोकरी अंजीर ले कर आया है।

खलीफा ने हुक्म दिया कि उस बूढ़े को दरबार में प्रस्तुत किया जाये। बूढ़े को दरबार लाया गया। खलीफा तो यह देख कर आश्चर्य में पड़ गये कि यह तो वही बूढ़ा है जो कुछ साल पहले अंजीर का पेड़ लगा रहा था। और अब वह उसी पेड़ के सबसे सुन्दर और मीठे फल खलीफा के लिये ले कर आया है।

खलीफा ने उसकी वह भेंट बहुत प्रेम से स्वीकार की। उसे अपने पास दीवान पर बिठाया और उसके लिये बहुत बढ़िया कपड़े लाने के लिये कहा। उसने जितनी वह अंजीर ले कर आया था उसको उतनी ही सोने की दीनारें दीं और आदर के साथ विदा किया।

जब बूढ़ा खलीफा के सामने से चला गया तो खलीफा का बेटा अल ममून[15] ने अपने पिता से पूछा — "पिता जी। आपने एक इतने बूढ़े और बे पढ़े लिखे किसान को इतना आदर क्यों दिया।"

[15] El Mamun – name of the son of Caliph Harun el Rashid

हारूँ बोले — "बेटा। इसे केवल मैंने ही नहीं बल्कि अल्लाह ने खुद ने उसे इतना आदर दिया है तो मुझे तो उसे यह आदर देना ही था।"

बूढ़ा कपड़े और दीनारें ले कर अपने घर लौटा और वहाँ जा कर खलीफा की दया को बहुत बढ़ा चढ़ा कर बताया।

उसके पड़ोस में एक स्त्री रहती थी। वह बहुत ईष्यालु और लालची थी। उसने अपने पड़ोसी की जागी हुई किस्मत देख कर तय किया कि वह उससे कुछ बड़ा कर के रहेगी सो उसने अपने पति को तंग करना शुरू कर दिया।

घर में शान्ति रखने के लिये उसके पति ने एक टोकरी अंजीरें भरीं और खलीफा के महल के दरवाजे पर जा पहुँचा। जब उससे यह पूछा गया कि उसे क्या चाहिये तो वह बोला —

"क्योंकि खलीफा अपनी सबको एक समान देखने की नीति के लिये बहुत मशहूर हैं और उन्होंने मेरे एक पड़ोसी को बहुत थोड़ी सी अजीरों के लिये इतना सारा पैसा दिया सो मैं भी उनके लिये ऐसे इनाम के लिये कुछ अंजीरें ले कर आया हूँ।"

यह जवाब सुन कर पहरेदारों ने खलीफा को जा कर यह बात बतायी। तो खलीफा के हुक्म से उस बेवकूफ आदमी को उसी के फलों से मारा गया।

गुस्से में आ कर उसने अपनी पत्नी को तलाक दे दिया जिसकी बेवकूफी की वजह से उसे इतनी शर्म उठानी पड़ी।

दूसरी कहानी

एक दिन एक सुलतान का अपने महल के पास की सड़क पर रोते हुए दो भिखारियों की आवाज से ध्यान बॅट गया। उनमें से एक भिखारी चिल्ला रहा था "ओ अल्लाह तू सबका दाता है।" जबकि दूसरा भिखारी चिल्ला रहा था "ओ अल्लाह सुलतान को विजयी कर।"

सुलतान उस दूसरे भिखारी की आवाज सुन कर बहुत खुश हुआ कि यह भिखारी अल्लाह से उसकी अपनी भलाई की कामना कर रहा था।

सुलतान ने अपने वज़ीर को बुलाया और उससे कहा — "देखो यह भिखारी जो मेरी भलाई की कामना कर रहा है उसे एक भुनी हुई बतख जिसमें सोने के सिक्के भरे हुए हों दे दो। और दूसरे भिखारी को सादी पकी हुई बतख दे दो।"

वज़ीर ने सुलतान के हुक्म का पालन किया और उस भिखारी को जो यह चिल्ला रहा था कि "अल्लाह तू सबका दाता है।" उसे सादी पकी हुई बतख दे दी।

और दूसरे भिखारी को जो यह चिल्ला रहा था कि "ओ अल्लाह तू सुलतान को विजयी कर।" सोने के सिक्कों से भरी हुई भुनी हुई बतख दे दी।

पहला वाला भिखारी उसे ले कर अल्लाह का धन्यवाद करता हुआ अपनी पत्नी के पास चला ताकि वे सब उसे खा कर पेट भर

सकें। तो जब वह उसे ले कर जा रहा था तो दूसरा भिखारी उससे बोला "भाई तुम यह बतख मुझसे खरीद लो क्योंकि मेरा तो कोई परिवार है नहीं।

मेरे पास तो एक बिशलिक[16] है बस। मुझे तो पैसा चाहिये न कि इतना मॅहगा खाना। और यह तो एक भुनी हुई बतख खरीदने के लिये काफी नहीं है।"

दूसरा भिखारी बोला — "ठीक है इसे तुम रख लो।"

सो अब ऐसा हुआ कि जो अल्लाह की प्रशंसा कर रहा था उसे न केवल अच्छा खाना मिला बल्कि उसे थोड़ा सा धन भी मिल गया। इस आदमी ने अब भीख मॉगना छोड़ दिया और अपनी एक छोटी सी दूकान खोल ली।

और दूसरा जो सुलतान के गुण गा रहा था उसे केवल सादी बतख मिली। अपना बिशलिक खर्च कर के वह महल के दरवाजे पर पहुॅचा और चिल्लाया — "ओ अल्लाह हमारे सुलतान को विजय दे।"

सुलतान ने दोबारा हुक्म दिया कि उसे एक और बतख सोने की मुहरों से भर कर दे दी जाये। वैसा ही किया गया। इस बार वह उस बतख को ले कर फिर अपने साथी के पास गया और एक बिशलिक के लिये उसे अपने साथी को बेच दिया।

[16] Bishlik is a coin with the value of a little less than six pence.

जब "ओ अल्लाह हमारे सुलतान को विजय दे।" की आवाज महल के बाहर तीसरी बार सुनी गयी तो सुलतान चिल्लाया — "यह क्या है। मैंने इस आदमी को दो बार तो अमीर बना दिया और यह अभी भी भीख माँग रहा है। इसे मेरे पास अन्दर ले कर आओ।"

भिखारी को अन्दर लाया गया। जब वह अन्दर आया तो सुलतान ने गुस्से में भर कर कहा — "तुम अभी भी भीख क्यों माँग रहे हो जबकि मैंने तुम्हें दो बार अमीर बना दिया है।"

भिखारी बोला — "ओ सुलतान। मुझे तो आपकी दी हुई केवल दो बतखें ही मिली हैं जिनको मैंने एक दूसरे भिखारी को बेच दिया जो यह चिल्ला रहा था "अल्लाह तू सबका दाता है।" पर उन बतखों को खरीद कर तो वह बहुत अमीर हो गया है और उसने एक दूकान भी खोल ली है।"

सुलतान को यह सुन कर बहुत आश्चर्य हुआ। वह बोला — "वल्लाह। अल्लाह ने दिखा दिया कि उसके दिये हुए की प्रशंसा करना ज़्यादा अच्छा है बजाय मेरी समृद्धि के लिये प्रार्थना करने के।"

तीसरी कहानी

एक बार एक सुलतान था अपने वज़ीर से बहस हो गयी कि सच्ची मेहरबानी क्या है। सुलतान का मानना था कि सच्ची मेहरबानी बहुत ज़्यादा गरीब लोगों में पायी जाती है।

जबकि वज़ीर का कहना था कि किसी भी आदमी के लिये किसी भी तरह की मेहरबानी दिखाना असम्भव है जब तक कि वह अच्छे पैसे वाला न हो।

जब सुलतान ने इस बारे में सोच लिया कि अब तक इसके ऊपर काफी कहा जा चुका है तो उन्होंने शेख़ अल इस्लाम को बुलवाया और उन्हें हुक्म दिया कि वह इस बहस के दोनों तरफ की कही गयी बातों को कहीं लिख लें ताकि उसे जनता के संग्रहालय में रखा जा सके।

कुछ समय बाद एक दोपहर को सुलतान ने शेख़ को गुप्त रूप से बुला भेजा और दोनों दरवेशों का रूप बना कर इस सवाल का जवाब ढूँढने के लिये बाहर निकले।

शहर में उन लोगों को बहुत मजेदार चीज़ें देखने को मिलीं पर उन्हें अपने सवाल के जवाब के सम्बन्ध में देखने के लिये कुछ भी नहीं मिला। जब वे शहर की बाहरी सीमा के पास पहुँचे तो सूरज डूब रहा था और जव वहाँ से बाहर की तरफ निकले तब तक तो अँधेरा भी फैल चुका था।

सड़क के किनारे ही उनको एक रोशनी चमकती दिखायी दे गयी। उसे देख कर वे बहुत खुश हुए। वे उसी की तरफ चल दिये। उन्होंने देखा कि वह रोशनी एक मिट्टी की छत वाली झोंपड़ी से आ रही थी। लगता था कि वहाँ कोई बहुत ही गरीब आदमी रहता था।

आदमी तो अभी भी काम के लिये बाहर ही था पर उसकी पत्नी और माँ ने उन दोनों अजनबियों का अपने घर में स्वागत किया। कुछ ही देर में आदमी भी आ गया। उसके साथ चार बकरियाँ थीं जिनसे वह अपना और अपने परिवार का पालन पोषण करता था।

आस पास में बच्चे खेल रहे थे कि उन्होंने उस आदमी को बताया कि उसके घर में कुछ मेहमान आये हुए हैं सो उसने अन्दर आते ही उन्हें सलाम किया और उनसे कहा कि वह मकान उन्हीं का है। वे वहाँ आराम से रह सकते हैं।

फिर उसने उनसे कुछ मिनटों की छुट्टी माँगी और बाहर चला गया। वह सीधा अपने मालिक के पास गया जिनके वह जानवर चराता था। उसने मालिक से दो गेंहू की रोटियाँ माँगीं क्योंकि वह अपने मेहमानों के सामने ज्वार की रोटियाँ नहीं रख सकता था।

रोटियाँ कुछ अंडे दही औलिव का खाना अच्छा खाना था पर सुलतान ने कहा — "आप हमें माफ करें हम लोगों ने यह व्रत ले रखा है कि हम एक साल एक दिन तक केवल रोटी और किडनी ही खायेंगे।"

बिना एक भी शब्द कहे मेजबान फिर बाहर गया अपनी चारों बकरियाँ मारीं उनकी किडनी को भूना और ला कर उन्हें दोनों दरवेशों के सामन रख दिया।

सुलतान बोला — "हमने यह व्रत भी ले रखा है कि हम आधी रात के बाद ही कुछ खायेंगे सो इस खाने को हम अपने साथ

लिये जाते हैं जब हमारे खाने का समय होगा इसे हम तभी खा लेंगे। हमें दुख है कि अब हमें जाना है सो हमें चलना चाहिये।"

परिवार ने उनसे बहुत जिद की कि वे रात को वहीं रुक जायें अगले दिन सुबह चले जायें पर वे नहीं माने और वहॉ से चले गये। जल्दी ही वे फिर सड़क पर थे।

सुलतान ने शेख़ से कहा — "चलिये शेख़ जी अब वज़ीर को आजमाते हैं।" सो दोनों वज़ीर के घर गये।

वहॉ जा कर देखा तो उनके घर में से तो रोशनी की जैसे बाढ़ ही आ रही थी और संगीत बज रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे कि वहॉ आनन्द मन रहा हो।

दोनों दरवेशों की खाने और शरण की विनती को एकदम से ही ठुकरा दिया गया। पर जब उन्होंने कुछ जिद की तो वज़ीर की चिल्लाती हुई आवाज सुनी गयी — "इन कुत्तों को अच्छी तरह से पिटाई कर के बाहर निकाल दो। इससे इनको कुछ सीख मिलेगी।"

उसके हुक्म का इतना अच्छी तरह से पालन किया गया कि दोनों बेचारे अपनी जान बचा कर वहॉ से भागे। घायल और खून बहते हुए शरीर ले कर दोनों आधी रात को महल पहुँचे।

जब उन्होंने अपने बदले हुए वेश उतार दिये तो सुलतान ने एक डाक्टर को बुला भेजा ताकि वह उनके घावों पर मरहम लगा सके। उसके बाद उसने अपनी काउन्सिल को बुलाया और उसे बताया कि वह गरीब आदमी कहॉ रहता था।

और उनको सबको उसके घर के पास खड़े रहने के लिये कहा और कहा कि वे उसे किसी भी तरह तंग न करें। जब घर का मालिक सुबह बाहर निकले तो उसे बहुत आदर के साथ सलाम करो और उससे कहो कि वह मेरे घर में एक बार आने की मेहरबानी करे।

फिर उसे आदर के साथ ले कर यहॉ आओ। साथ में चार बकरियों के मरे हुए शरीर भी ले कर आओ जो तुम्हें उसके घर के दरवाजे के पास पड़े मिल जायेंगे।

गड़रिया तो यह देख कर डर के मारे कॉपने लगा जब उसने सुबह उठ कर देखा कि उसका घर सिपाहियों और दरबारियों से घिरा हुआ है।

उसका यह आश्चर्य और डर तब भी कुछ कम नहीं हुआ जब उन लोगों ने उसके साथ बहुत आदर और नम्रता का व्यवहार किया और उससे कहा कि सुलतान ने उसे अपने महल बुलाया है। और न ही उनके इस व्यवहार से कि वे उसके घर के दरवाजे के बाहर पड़ी चार मरी हुई बकरियों की खालें भी आदर से लिये जा रहे थे।

जब यह जुलूस महल पहुॅचा तो सुलतान ने गड़रिये को अपने पास बिठाया और अपनी बहस का हाल जो शेख़ जी ने लिखा था उसे मॅगवाया। उसे सबके सामने पढ़ा गया। जब वह पढ़ लिया गया तो सुलतान ने अपने पहले दिन का हाल लोगों को सुनाया।

फिर उन्होंने वज़ीर से कहा — "तुमने तो खुद अपने आपको ही धोखा दिया है। इस राज्य में तुमसे अच्छा तो कोई और हो ही नहीं सकता था जो अपने नागरिकों के प्रति दया दिखाता। पर तुमने तो इतनी निर्दयता दिखायी। तुम अब मेरे वज़ीर नहीं रहे। तुम्हारी अब सारी सम्पत्ति ले ली जायेगी।

पर यह गड़रिया जो कुछ यह खाता उससे कहीं ज़्यादा अच्छी रोटी ऐसे मेहमानों के लिये भीख में मॉग कर लाया जो बहुत लालची थे और जिनका व्यहार भी बहुत खराब था। शायद ही कभी ऐसे मेहमान किसी के घर आये हों।

ऐसे मेहमानों के लिये उसने उनको निराश करने की बजाय भीख मॉगने से भी ज़्यादा अपनी सारी सम्पत्ति भी खर्च कर दी। अब यह मेरा दोस्त होगा और यही मेरे साथ बैठेगा। इसकी दयालुता का इसको इनाम मिला और निर्दयता को सजा मिली।

चौथी कहानी

एक बार जेरुसलेम में दो जुड़वॉ भाई रहते थे। वे बड़े हो जाने के बाद भी एक साथ ही रहते थे और एक साथ ही काम करते थे। अपने खेतों की पैदावार को आपस में बॉट लेते थे।

एक रात उन्होंने अपनी अनाज की बालियों में से अनाज निकाला और जैसे वे करते आ रहे थे उन्होंने उसे आपस में आधा

आधा बॉट लिया और फिर वहीं सो गये ताकि उसकी चोरी न हो जाये।

रात में एक भाई उठा और उसने अपने मन में सोचा कि मेरा भाई तो शादीशुदा है और उसके बच्चे भी हैं पालने पोसने के लिये और मैं अल्लाह की मेहरबानी से अभी अकेला ही हूँ। तो यह न्यायपूर्ण नहीं की हम अपनी जमीन से पैदा हुए अन्न को बराबर बरराबर ही बॉटें।"

ऐसा सोच कर वह चुपचाप उठा और सात माप अन्न नापा और अपने भाई के ढेर में डाल दिया और फिर सोने चला गया। कुछ देर बाद उसका भाई जागा तो वह लेटा हुआ आसमान के सितारों की तरफ देख रहा था और सोच रहा था।

"मेरे पास अलाह की मेहरबानी से एक अच्छी पत्नी है चार प्यारे प्यारे बच्चे हैं। मैं उन खुशियों को जानता हूँ जिससे मेरा भाई अभी अनजान है। मेरे लिये यह उचित नहीं है कि मैं अपने खेत की उपज में से बराबर का हिस्सा लूँ।"

सो वह अपने ढेर के पास गया और उसमें से सात माप अन्न नाप कर अपने भाई के ढेर में मिला दिया और फिर सोने चला गया।

सुबह जब वे दोनों सो कर उठे तो दोनों ही यह देख कर आश्चर्यचकित थे कि दोनों के ढेर अभी भी एक से ही थे। तभी अल्लाह ने एक धर्मदूत भेजा कि उनके आपस के निस्वार्थ प्यार ने

अल्लाह को बहुत खुश किया जिससे वह जमीन और बहुत समृद्ध हो गयी।[17]

पॉचवीं कहानी

काज़ी "अब्दल्ला अल मुस्तकिम"[18] जिसके कुछ वंशज जो आजकल के जाफ़ना में रहते कहे जाते हैं, अल मंसूर के राज काल में जो अब्बास के वंश का एक खलीफा था और उसी के परिवार के नाम से उसने यह नाम भी लिया था जिसका अर्थ होता है "ईमानदार" बगदाद में रहता था। यह नीचे लिखी कहानी उसी के बारे में कही जाती है।

यह न्यायप्रिय जज एक दिन जब अपने घर से बाहर निकला तो इसे नीच घराने की एक स्त्री मिल गयी जो एक गधा हॉक कर ले जा रही थी। उसके साथ एक लड़का था जो उसका बेटा था। स्त्री बहुत ज़ोर ज़ोर से रो रही थी।

तो काज़ी ने जो गरीबों के लिये और दुखियों के लिये एक उतने ही दयालु दिल के आदमी थे जितने कि अपराधियों के लिये कठोर दिल के थे उस स्त्री से उसके दुख का कारण पूछा।

स्त्री बोली — "बड़े दुख की बात है माई लौर्ड। कुछ महीने हुए मेरे पति की मौत हो गयी है। जब वह मर रहे थे तो उन्होंने मुझसे

[17] It was on the hill traditionally known in Zion--the rock-hewn base of a tower which once formed the south-west corner of the city wall. It is now part of the foundation of Bishop Gobal's school.
[18] Kadi "Abdallah el Mustakim"

यह कसम ली थी कि हम अपने उस छोटे से जमीन के टुकड़े को न बेचें जिसकी उपज से हम लोग अपना पेट पालते चले आ रहे हैं। बल्कि अपने बेटे के लिये उसकी ठीक से देखभाल करें। इसे उस जमीन को जोतना सिखायें जैसे कि उसके पूर्वज करते चले आ रहे थे।

पर खलीफा ने अपना एक नौकर भेजा है और वह मेरी जमीन खरीदना चाहते हैं क्योंकि यह जमीन उनकी एक जमीन के साथ लगी हुई है जिस पर वह महल बनाना चाहते हैं। उनका कहना यह है कि उनको अपना महल बनाने के लिये मेरी जमीन चाहिये ही चाहिये।

मैंने उसे बेचने के लिये इसी लिये मना कर दिया पर वह मेरे ऊपर तीन बार दबाव डाल चुके हैं और मैं भी उसे तीन बार बेचने से मना कर चुकी हूॅ।

आज सुबह उन्होंने मुझे और मेरे बेटे को यह कहते हुए मेरी पुरखों से मिली कानूनन जमीन से बाहर निकाल दिया कि "अगर तुम यह जमीन मुझे नहीं बेच रहीं तो मैं तुम्हें इस जमीन का बिना कोई हरजाना दिये हुए ही यहॉ से बाहर निकाल रहा हूॅ।"

हमारा तो सब कुछ खत्म हो चुका है सिवाय एक दूसरे के और इस गधे के जिसकी पीठ पर खाली थैला लटका हुआ है। मुझे नहीं मालूम कि मैं सहायता के लिये किसके पास जाऊॅ क्योंकि खलीफा ही सबसे ऊॅचे औफीसर हैं।"

अल मुस्तकिम ने पूछा — "तुम्हारी जमीन कहॉ है।"

स्त्री ने उन्हें बताया कि उसकी जमीन कहॉ थी।

"और तुम्हारा कहना यह है कि तुम अभी अभी वहॉ से आयी हो और खलीफा वहॉ थे जब तुमने वह जगह छोड़ी।"

"जी हॉ माई लौर्ड।"

"ठीक है तुम यहॉ मेरे मकान में रुको जब तक मैं लौट कर आता हूँ। और हॉ इस बीच तुम अपना यह गधा और खाली थैला कुछ घंटे के लिये मुझे दे दो। अल्लाह ने चाहा तो जैसी मेरी मूमनीन के अमीर से जान पहचान है मैं उसे मनाने में सफल हो ही जाऊँगा और तुम्हारी जमीन भी तुम्हें वापस दिलवा दूँगा।"

गरीब विधवा ने यह सुन कर तुरन्त ही उसकी बात मान ली और अपना गधा उसे दे दिया। काज़ी उसके गधे को ले कर वहॉ से चला गया। वह जल्दी ही उस जगह पर पहुँच गया।

उसे वहॉ खलीफा भी मिल गये। वह अपने महल बनाने वाले को कुछ समझा रहे थे। अल इस्लामिये[19] के शासक को देख कर जज ने उनके सामने जमीन पर लेट कर उन्हें सलाम किया और उनसे अकेले में मिलने की इच्छा प्रगट की।

खलीफा जो काज़ी जी का बहुत आदर करते थे तुरन्त ही राजी हो गये और अब्दुल्ला ने विधवा के वकील की हैसियत से उनसे उसकी जमीन के लिये प्रार्थना की।

[19] El Islamiyeh

काज़ी जी ने देखा कि खलीफा तो मानने पर राजी ही नहीं हो रहे तो वह बोले — "खलीफा जी। आप तो हम पर राज करने वाले हैं अल्लाह आपके राज को बहुत दिनों तक बनाये रखे।

पर क्योंकि हिज़ हाईनैस ने एक विधवा और एक लावरिस की जमीन छीन ली है तो मैं उनके नाम पर आपसे प्रार्थना करता हूँ कि इस जमीन में से एक थैला भर कर मिट्टी आप उन्हें लेने दें।"

खलीफा हँस कर बोले — "तुम दस थैले चाहो तो दस थैले मिट्टी ले लो। पर मुझे नहीं लगता कि इससे तुम उनका कुछ भला कर पाओगे।"

काज़ी जी ने पास में पड़ी एक कुल्हाड़ी उठायी मिट्टी खोदी और अपना थैला भर लिया। फिर खलीफा से कहा — "मैं इस बारे में योर हाईनैस की बहुत प्रशंसा करता हूँ कि आपने इस बात का आदर रखा जिसकी हम मुसलमान लोग बहुत आदर करते हैं अब आप इसे इस गधे पर रखवाने में मेरी थोड़ी सहायता और कर दें।"

खलीफा बोले — "आप बहुत अजीब आदमी हैं। यहाँ इतने मजदूर काम कर रहे हैं किसी मजदूर को बुला लीजिये वह यह थैला उठा कर आपके गधे पर रख देगा।"

काज़ी जी बोले — "सरकार इस मिट्टी के थैले को किसी और ने उठाया तो यह मिट्टी अपना गुण खो देगी और फिर योर हाईनैस का बहुत बड़ा नुकसान होगा।"

खलीफा मजे से बोले — "ठीक है तो ऐसा ही हो।"

पर जब ख़लीफा उस थैले को उठाने लगे तो वह तो उनसे हिला भी नहीं। वह बोले — "यह तो बहुत भारी है। यह तो मुझसे हिल तक नहीं रहा।"

काज़ी जी बोले — "अगर हिज़ मैजेस्टी इस एक थैले मिट्टी को उस आदमी को देने में इतना भारी पा रहे हैं जिसका कानूनन इस पर अधिकार है तो आप मुझे माफ करें अगर मैं आपसे यह पूछूँ कि आप एक विधवा और एक लावारिस की इस जमीन को हिंसा से लेने के अन्याय का जजमैन्ट डे को क्या जवाब देंगे।"

काज़ी के इस मुँहफट जवाब ने ख़लीफा को जगा दिया। वह कोई भी जवाब नहीं दे सके।

एक पल बाद ही वह बोले — "अल्लाहो अकबर। जिसने मुझे समय रहते मेरी आत्मा को जगा दिया। मैं यह जमीन उस विधवा और उसके बेटे को वापस करता हूँ। और उसके ऑसुओं की कीमत के रूप में जिन्हें उसने मेरी गलती की वजह से बहाया है मैं उसे इस जमीन के लगान से मुक्त करता हूँ।"

छठी कहानी

एक बार कुछ ऊँट एक बागीचे के पास से गुजर रहे थे। उस समय उसका मालिक खुरदरे पत्थरों की बनी हुई एक चहारदीवारी पर बैठा हुआ था। उनमें से एक बहुत ही बढ़िया ऊँट ने एक फलों से लदे पेड़ की डाली जो को चहारदीवारी से बाहर की तरफ आ रही थी

देखा तो उसका मन ललचा गया। उसने उस डाली को अपने दॉतों से काट लिया।

यह देख कर बागीचे के मालिक ने एक पत्थर उठाया और उसे मारा। निशाना अच्छा था सो वह सीधा ऊॅट को जा कर लगा और ऊॅट मर गया। अब ऊॅटों का मालिक अपना जानवर मर जाने के कारण बहुत गुस्सा था।

उसने वही पत्थर उठाया और एक अच्छे निशाने के साथ बागीचे के मालिक को मारा। वह पत्थर सीधा उसकी कनपटी पर लगा और वह भी तुरन्त ही मर गया।

अपने इस जल्दी के काम का नतीजा देख कर तो ऊॅटों का मालिक डर के मारे वहीं खड़ा रह गया। फिर यह सोच कर कि इसका नतीजा क्या होगा वह अपने एक बहुत तेज़ भागने वाले ऊॅट पर बैठ कर वहॉ से भाग लिया। अपने बाकी बचे ऊॅटों को वह वहीं उनके ऊपर ही छोड़ गया।

अब यह तो स्वाभाविक था कि जल्दी ही बागीचे के मालिक के बेटों ने उसका पीछा किया और उसे पकड़ कर वहीं ले आये जहॉ यह दुर्घटना घटी थी। इत्तफाक से खलीफा "उमर इब्न अल खताब"[20] का कैम्प भी वहीं पास में ही लगा हुआ था।

बागीचे के मालिक के बेटों ने खलीफा से अपने पिता की ज़िन्दगी देने की मॉग की जिसने उनके पिता को मारा था। और

[20] Omar ibn el Khattab – Caliph

हालॉकि ऊँटों के मालिक ने कई बार यह बात समझाने के कोशिश की कि उसने यह पत्थर उसे किसी बुरे इरादे से नहीं मारा था बल्कि अचानक उत्तेजित हो जाने के कारण मारा था।

पर क्योंकि उसके पास इस बात का कोई सबूत नहीं था कि वह सच बोल रहा था और उधर बागीचे के मालिक के बेटे यह जिद कर रहे थे कि उनके पिता के हत्यारे का सिर काट दिया जाये तो खलीफा ने उसका सिर काटने का हुक्म दे दिया।

उन दिनों यह रिवाज था कि जिस आदमी को मौत की सजा सुनायी जाती थी उसको सजा सुनाने के तुरन्त बाद ही उसे वह सजा दे भी दी जाती थी।

इसका करने का तरीका यह था – राजा के सामने एक खाल बिछायी जाती थी और फिर जिस आदमी को यह सजा मिलती थी वह घुटनों के बल इस खाल पर बैठता था। उसके हाथ उसके पीछे बॅधे होते थे। जल्लाद उसके पीछे अपनी नंगी तलवार लिये खड़ा होता था।

वह ज़ोर से बोलता था "ओ खलीफा क्या आप अभी भी यही चाहते हैं कि फुलान को यह दुनियॉ छोड़नी है।" अगर खलीफा हॉ में जवाब देते थे तो जल्लाद उनसे फिर दोबारा वही सवाल पूछता था। अगर खलीफा फिर से हॉ में जवाब देते थे तो वह फिर तीसरी बार और आखिरी बार वही सवाल पूछता था। और फिर तुरन्त ही उसके सिर पर तलवार चला देता था।

यहॉ हम उसी समय की बात कर रहे हैं जब की यह घटना है कि तीसरी बार बोलते समय अगर तुरन्त ही फुलान यानी सजा पाने वाला तीन दिन का समय न मॉग ले तो उसे मार दिया जाये। सो फुलान ने यह समय मॉग लिया कि उसे दुनियॉ छोड़ने से पहले अपने घर को ठीक ठाक करना है।

इसी समय वह यह कसम भी खाता था कि वह नियत समय पर लौट कर कानून की सजा की फीस भरेगा यानी अपने आपको मारने के लिये प्रस्तुत करेगा। उसी समय उसे खलीफा के सामने एक आदमी बन्धक रखना पड़ता था जिसे वह तब इस्तेमाल कर सकता था अगर वह अपना वायदा तोड़ कर वापस नहीं लौटता।

ऐसा ही इसके साथ भी हुआ। इसको मौका तो दिया गया पर यह बेचारा देखता रहा कि वह किस आदमी को अपनी जगह बन्धक रखे। उसने निराशा से अपने चारों ओर खड़े हुए निपट अजनबियों की ओर देखा।

जल्लाद आया और उसके हाथ बॉधने के लिये बढ़ा तो उसने निराशा भरी दृष्टि से फिर एक बार अपने चारों ओर खड़ी हुई भीड़ की तरफ देखा और चिल्लाया — "क्या आज दुनियॉ से आदमी की जाति ही खत्म हो गयी है?"

कोई जवाब न मिलने पर उसने अपना सवाल फिर और अधिक ज़ोर दे कर दोहराया। यह सुन कर अबू धूर जो धर्मदूत का एक

साथी था आगे आया और ख़लीफा से पूछा कि क्या वह उस आदमी का बन्धक बन सकता है।

ख़लीफा ने उसको इजाज़त दे दी पर उसको चेतावनी दी कि क्या उसको पता है कि अगर यह आदमी वापस नहीं आया तो उसकी जगह उसे मार दिया जायेगा। उसने जवाब दिया कि हॉ यह बात उसे मालूम है।

इसके बाद उस आदमी को छोड़ दिया गया। वह आदमी भी तुरन्त ही वहॉ से दौड़ गया और गायब हो गया।

तीन दिन बीत गये और वह आदमी वापस नहीं लौटा और किसी को यह विश्वास नहीं था कि वह वापस लौटेगा भी। ख़लीफा ने बागीचे के मालिक के सम्बन्धियों के साथ किये गये वायदे के अनुसार अबू धूर को बुलवाया ताकि अपराधी की जगह उसे मारा जा सके।

खाल बिछायी गयी। अबू धूर को लाया गया। बहुत सारे लोगों के रोने धोने और चिल्लाने के बीच उसके हाथ पीछे बॉधे गये। उसे घुटनों के बल बिठाया गया।

जल्लाद ने दो बार ख़लीफा से पूछा कि "क्या आप सचमुच में इस आदमी को मरवाना चाहते हैं।" ख़लीफा ने बहुत ही मरे हुए मन से कहा "हॉ।"। पर जब यही सवाल तीसरी बार यानी आखिरी बार पूछा गया तभी एक आवाज आयी — "रुक जाओ अल्लाह के नाम पर रुक जाओ। कोई भागा हुआ आ रहा है।"

खलीफा के इशारे पर जल्लाद रुक गया।

सब लोग आश्चर्यचकित रह गये जब उन्होंने देखा कि तीन दिन पहले जिस आदमी को सजा मिली थी वह आदमी भागा चला आ रहा था। उसकी सॉस फूल रही थी। वह "अल्लाह का लाख लाख धन्यवाद है।" कहता हुआ थकान की वजह से वहॉ आते आते गिर पड़ा।

खलीफा बोले — "बेवकूफ तुम लौटे क्यों। अगर तुम वापस नहीं लौटते तो हम इस दूसरे आदमी को मार देते और तुम बच जाते।"

आदमी बोला — "सरकार मैं यह साबित करने के लिये लौटा कि इस दुनियॉ में केवल गुणी लोग ही नहीं बचे हैं बल्कि सच बोलने वाले भी बचे हैं।"

खलीफा ने पूछा — "तो फिर तुम यहॉ से गये ही क्यों थे।"

ऊँटों का मालिक बोला जो अब तक अबू धूर की जगह खाल पर बैठ चुका था और अपने हाथ पीछे बॅधवा चुका था कि विश्वस्त लोगों की जाति भी अभी दुनियॉ से खत्म नहीं हुई है।"

खलीफा बोले — "ज़रा इसे समझा कर कहेंगे?"

आदमी बोला — "कुछ दिनों पहले एक गरीब विधवा मेरे पास आयी और विश्वास के साथ अपनी कुछ चीज़ें मेरे पास रख गयी। मुझे अपन काम के सिलसिले से अपना कैम्प छोड़ कर कहीं दूसरी

जगह जाना था सो मैंने उसकी वे चीज़ें रेगिस्तान में एक चट्टान के नीचे दबा कर रख दीं जहॉ उन्हें केवल मैं ही पा सकता था।

जब मुझे मौत की सजा सुनायी गयी उस समय भी वे चीज़ें वहीं रखी हुई थीं। अगर कुछ दिनों के लिये मेरी ज़िन्दगी मुझे वापस नहीं मिलती तो में बड़े भारी दिल से मरता क्योंकि उनको छिपाने की जगह का राज़ केवल मैं ही जानता था।

इससे उस स्त्री को जो तकलीफ होती उसे कोई ठीक नहीं कर सकता था। उसका शाप मेरे बच्चों को सुनना पड़ता। अब क्योंकि मैंने अपने घर का हिसाब किताब ठीक कर दिया है उस स्त्री की चीज़ें उसे वापस कर दी हैं मैं अब हल्के दिल से मर सकता हूॅ।"

यह सुन कर खलीफा अबू धूर से बोले — "यह आदमी क्या तुम्हारा कोई सम्बन्धी या जानने वाला है?"

अबू धूर बोला — "वल्लाह। खलीफा जी। मैं आपको विश्वास दिलाता हूॅ कि मैंने इस आदमी को तीन दिन से पहले कभी नहीं देखा।"

खलीफा बोले — "तो ओ बेवकूफ तुम इस आदमी के बन्धक क्यों बने। क्योंकि अगर यह किसी तरह से नहीं लौटता तो तुम बेकार में ही मारे जाते। मैंने तो यह सोच ही लिया था कि अगर यह आदमी समय से नहीं लौटा तो मैं इसकी जगह मैं तुम्हें मार दूॅगा।"

अबू धूर बोला — "सरकार मैंने यह यह साबित करने के लिये ही किया कि अभी भी गुणवान और इन्सानियत रखने वालों की जाति दुनियॉ से खत्म नहीं हुई है।"

यह जवाब सुन कर खलीफा कुछ पल के लिये चुप रह गये।

फिर ऊँटों के मालिक से बोले — "मैं तुम्हें माफ करता हूँ तुम जा सकते हो।"

एक बूढ़े शेख़ ने खलीफा से पूछा — "ऐसा क्यों ओ खलीफा जी?"

उमर बोले — "क्योंकि जैसे ये सब – इन्सानियत गुण सच्चाई और विश्वास, अभी तक नष्ट नहीं हुए हैं तो अब यह मेरे साबित करने की जिम्मेदारी रह जाती है कि माफी और दया भी इस दुनियॉ से अभी खत्म नहीं हुए हैं।

और इस कारण से मैं इस आदमी को न केवल माफ करता हूँ बल्कि अपनी जेब से इसकी ओर से इसके हाथ से किये गये खून का हरजाना भी भरता हूँ।"

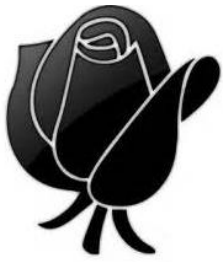

6 सही जवाब[21]

एक सुलतान ने सपना देखा कि अचानक उसके दॉत उसके मुॅह में से निकल कर नीचे गिर पड़े हैं। जब वह जागा तो वह इतना डरा हुआ था कि उसने अपने सारे नौकरों को जगा लिया और उनसे जल्दी से जल्दी किसी अक्लमन्द आदमी को बुला लाने के लिये कहा।

उसके राज्य के बहुत सारे साधु संत उसके महल में जल्दी ही इकट्ठा हो गये। उन्होंने सुलतान का सपना सुना और उसे सुन कर चुप बैठे रह गये। ऐसा लग रहा था जैसे वे कुछ कहने में हिचकिचा रहे हों।

पर एक नौजवान जिसने अभी अभी अपना स्कूल खत्म किया था बिना बुलाये ही सुलतान के सामने आ कर खड़ा हो गया।

वह सुलतान के पैरों पर गिर गया और बोला — "ओ सुलतान। यह सपना आपके दुश्मनों का हो और इसका मतलब उन सबके लिये हो जो आपको नफरत करते हैं। इसका मतलब यह है कि आपके सारे सम्बन्धी आपकी ऑखों के सामने एक ही दिन में मर जायेंगे।"

यह सुन कर सुलतान बहुत नाराज हुआ उसने उसके पैरों के तलवों की पिटाई कर के उसको जेल में डालने का हुक्म दे दिया

[21] The Right Answer. Taken from : https://www.sacred-texts.com/asia/flhl/flhl24.htm

और वहॉ उसे एक साल तक रोटी और पानी पर ज़िन्दा रखने का हुक्म दिया। यह सब देख कर तो वहॉ बैठे सभी लोग डर से कॉपने लगे।

नौजवान को सजा सुना कर सुलतान दूसरे बैठे लोगों की तरफ देखा और अपना सवाल दोहराते हुए अपना पैर पटका। कुछ देर तक तो वे सब चुप बैठे कॉपते रहे।

फिर विद्वानों के शेख़ आगे बढ़े और अपने हाथों को आसमान की तरफ उठाते हुए बोले — "अल्लाह की शान बढ़े जिसने आपको यह बताया कि उसके पास आपके लिये वह आशीर्वाद है जो उन सब देशों के लिये है जो आपके अधिकार में हैं।

इस स्वर्ग से भेजे हुए सपने का यह मतलब है कि आप अपने सम्बन्धियों में से सबसे ज़्यादा जियेंगे।"

सुलतान ने तुरन्त ही उसका मुँह मोतियों से भर दिया। एक सोने की जंजीर उसके गले में डाल दी और एक आदर वाली पोशाक पहना दी।

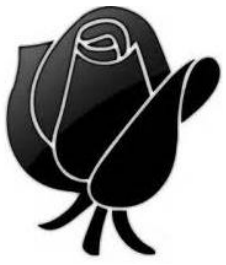

7 लौट और कौस का पेड़[22]

हमारे पिता ऐडम जब अपनी मृत्यु शय्या पर लेटे हुए थे तो वह अपने मरने से इतना डर गये थे कि उन्होंने अपने बेटे सैथ को बुलाया और उसे स्वर्ग के दरवाजे पर जाने के लिये कहा और वहॉ से "ज़िन्दगी के पेड़" का केवल एक फल लाने के लिये कहा।

देवदूत सैथ की इस प्रार्थना को नहीं मान सकता था पर उसने खत्म होती हुई जाति के प्रति दया दिखाने के लिये अल्लाह के पत्तों की एक शाख तोड़ ली जिसमें तीन डंडियॉ थीं और उसे ऐडम के बेटे को दे दिया।

जब सैथ वापस आया तो देखा कि ऐडम तो मर चुका था सो उसने वह शाख ऐडम की कब्र के सिर की तरफ लगा दी। वहॉ उसने जड़ पकड़ ली और सदियों तक बढ़ता रहा। हालॉकि यह बड़ी बाढ़ में भी ज़िन्दा रहा पर फिर लोग इसे भूल गये।

अब पैट्रियार्क लौट जिसकी पत्नी को एक नमक के खम्भे में परिवर्तित कर दिया गया था जो आज तक भी समुद्र के दक्षिणी किनारे पर जबील उसडुम के पास एक आश्चर्यजनक दृश्य है और उसी के नाम से है इतने गम्भीर पाप में पड़ गया कि जब उसकी आत्मा जागी तो वह तो बस मुक्ति की ही कामना करने लगा।

[22] Lot and the Tree of the Cross. Taken from : https://www.sacred-texts.com/asia/flhl/flhl09.htm

उसने तो अपने को मार ही लिया होता अगर अल्लाह का भेजा हुआ दूत उसके पास न आ जाता और उससे यह न कहता कि वह जौरडन नदी से कुछ पानी ले ले और पहाड़ी प्रदेश में जा कर वहॉ लगे एक पेड़ को पानी दे दे जो उसे ऐडम की कब्र पर लगा हुआ मिलेगा।"

देवदूत ने उससे यह भी कहा कि अगर वह पौधा तुम्हारे पानी देने से बढ़ जाये तो समझना कि जब वह बड़ा हो जायेगा तो वह तुम्हारे और सभी लोगों के लिये एक शान की चीज़ होगा।" यह सुन कर लौट अपने काम पर भागा चला गया।

उस दिन दिन बहुत गरम था और बहुत भयानक गरम हवा चल रही थी जब लौट देवदूत का यह काम करने के लिये गया। जब उसने उस पहाड़ी पर चढ़ने के लिये उसकी खड़ी चढ़ाई पर उस जगह के लिये चढ़ना शुरू किया जहॉ खान यानी "भले आदमी की सराय"[23] आज है तो वहॉ उसे सड़क के किनारे एक यात्री[24] लेटा हुआ दिखायी दिया जो अपनी अन्तिम सॉस ले रहा था।

लौट बहुत ही दयालु दिल का था। वह नीचे उसके पास बैठा और उसने उसे एक घूँट पानी पिलाया। वह तो सकते में रह गया जब उसने एक ही घूँट में उसका पूरा का पूरा घड़ा ही खाली कर दिया। वह यात्री नहीं बल्कि आदमी की शक्ल में शैतान था।

[23] "Inn of the Good Samaritan"

[24] Some say that he was a Russian pilgrim

बिना एक शब्द बोले लौट जौरडन नदी की ओर लौट पड़ा और अपना बरतन फिर से भरा। पर फिर से जब वह उसे ले कर काफी दूर तक आ गया उसे शैतान एक बहुत थके हारे यात्री के वेश में फिर से मिल गया। उसने उसकी दया के लिये उसे गालियॉ दीं और फिर से उसका सारा पानी पी गया।

तीसरी बार भी उसके साथ ऐसा ही हुआ। तीन बार अपने काम में असफल होने के कारण वह बहुत थक गया था सो वह जमीन पर गिर पड़ा और रोने लगा।

वह बोला — "अगर मैं किसी दुखी का दुख दूर न करूॅ तो मैं अपने पापों में एक और पाप जोड़ लूॅगा और मेरे पापों का बोझ और अधिक भारी हो जायेगा। और अगर मैं हर बार इस तरह से प्यासे को पानी पिलाता रहा तो फिर मैं अपनी "मुक्ति के पेड़" को पानी कैसे दे पाऊॅगा।"

दुख और थकान से वह जहॉ लेटा था उसे वहीं नींद आ गयी। उसके सपने में एक बार फिर से देवदूत प्रगट हुआ और उसे बताया कि ये नकली यात्री कौन थे।

उसने साथ में यह भी कहा कि तुम्हारी निस्वार्थता अल्लाह को स्वीकार है और उन्होंने तुम्हारे पापों को माफ कर दिया है। और जहॉ तक पेड़ को पानी देने का सवाल है उसे देवदूतों ने पानी दे दिया है।

यह सुन कर लौट शान्ति से मर गया और पेड़ बढ़ता गया और तन्दुरुस्त होता गया। पर शैतान ने उसको बरबाद करने के प्लान को नहीं त्यागा जब तक वह हिरम के पीछे नहीं पड़ गया कि वह सोलोमन को अपना मन्दिर बनवाने के ल्यि उस पेड़ को न कटवा ले।[25]

इस तरह उस पेड़ का तना जेरुसलेम ले जाया गया पर उसके मन्दिर बनाने वाले को उसका कोई उपयोग समझ में नहीं आया तो उसे जेरुसलेम के पूर्व में जो घाटी है वहॉ फिंकवा दिया गया।

बहुत दिनों तक वह वहॉ कैड्रौन नदी के ऊपर उसे पार करने के लिये पुल का काम करता रहा। वह वहीं इसी तरह से पड़ा रहा जब तक इथियोपिया की रानी बिल्किस यानी शीबा की रानी सोलोमन से मिलने के लिये नहीं आयी।[26]

जब वह शहर के पास आ रही थी तो उससे कहा गया कि उसे उस लट्ठे पर पैर रख कर वह नदी पार करनी है पर वहॉ आ कर उसकी अन्तरात्मा ने उस लट्ठे पर पैर रखने से मना कर दिया और उसने झुक कर उसकी पूजा की।

इज़रायल का अक्लमन्द राजा जो अपने मेहमान का स्वागत करने आया था उसके इस व्यवहार पर बहुत आश्चर्य प्रगट करने लगा। पर जब उसने सोलोमन को यह बताया कि यह लट्ठा कहॉ से

[25] Read this story in “Raja Solomon” by Sushma Gupta written in Hindi. Delhi : Prabhat Prakashan.
[26] Read “Sheba kI Rani Makeda” by Sushma Gupta written in Hindi. Delhi : Prabhat Prakashan. 2019.

आया और किस उद्देश्य के लिये उसे वहॉ लाया गया था उसने वह लट्ठा वहॉ से उठवा कर साफ करा कर अपने मन्दिर के एक कमरे में रखवा दिया।

वह वहॉ तब तक रखा रहा जब तक कि ईसा मसीह को क्रौस पर चढ़ाने के लिये उसकी जरूरत नहीं पड़ी।

कोई भी जो आजकल के कैड्रौन नदी के ऊपर के "अब्सालोम खम्भे"[27] के पास से पत्थर के पुल को जॉचना चाहता है कुछ बहुत बड़े बड़े पत्थर वहॉ पड़े देख सकता है जहॉ कभी वह लकड़ी का लट्ठा पड़ा रहा करता था।

[27] Absalom's Pillar

8 भाई और बहिन[28]

एक बार की बात है कि एक बूढ़ा बादशाह था। उसके एक बेटा था और एक बेटी थी। समय पूरा होने पर वह मर गया। उसके बाद उसका बेटा गद्दी पर बैठा। गद्दी पर बैठे उसे अभी बहुत दिन नहीं हुए थे कि उसने अपने पिता का सारा पैसा खत्म कर दिया।

एक दिन उसने अपनी बहिन से कहा — "मेरी प्यारी बहिन। हमने अपने पिता जी का सारा पैसा खर्च कर दिया है। अगर यह बात लोगों को पता चल जाती है कि हमारे पास अब कोई पैसा नहीं है तो हमको यहॉ से जाना पड़ेगा क्योंकि हम किसी से ऑखें नहीं मिला पायेंगे। इसलिये इससे पहले कि हमें देर हो जाये हमें खुद ही यहॉ से शान्तिपूर्वक निकल जाना चाहिये।"

उन्होंने अपना सामान इकट्ठा किया और उसी रात अपना महल छोड़ दिया। वे चलते गये चलते गये। न जाने कहॉ। न जाने किधर। आखिर वे एक बहुत बड़े मैदान में पहुॅच गये जिसके ओर छोर का कोई पता नहीं था।

दोनों बेचारे भीषण गरमी से परेशान थे। अपनी गरमी को शान्त करने के लिये उनको वहॉ एक तालाब दिखायी दे गया। भाई

[28] The Brother and Sister. A Fairy Tale from Turkey. Taken from : https://www.sacred-texts.com/asia/ftft/ftft04.htm

ने बहिन से कहा — "बहिन। बिना पानी पिये मैं तो यहॉ से एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकता।"

बहिन बोली — "पर भैया। क्या पता यह पानी है भी या नहीं। हम अपनी प्यास के अब तक सहते चले आ रहे हैं तो हम अपनी प्यास कुछ दूर तक तो और सह ही सकते हैं। हो सकता है कि तब हमें पानी मिल जाये।"

भाई बोला — "पर बहिन। मैं तो अब बिना पानी पिये एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकता। मुझे ज़िन्दा रहने के लिये पानी चाहिये ही चाहिये।"

यह सुन कर बहिन ने उसे थोड़ा सा पानी ला कर दे दिया। भाई ने उसे बड़ी जल्दी जल्दी पी लिया। जैसे ही उसने पानी पी कर खत्म किया तो वह तो तुरन्त ही एक बारहसिंगे में बदल गया।

बहिन यह देख कर बहुत दुखी हुई और ज़ोर ज़ोर से रोने लगी। पर अब तो जो कुछ हो चुका था वह तो हो चुका था उसे बदला नहीं जा सकता था सो उन लोगों ने फिर से अपनी यात्रा शुरू कर दी।

वे उस बड़े से मैदान में घूमते घूमते एक पेड़ के पास एक स्रोत के पास आये यहॉ उन लोगों ने सुस्ताने का निश्चय किया। बारहसिंगा अपनी बहिन से बोला — "बहिन तुम इस पेड़ पर चढ़ जाओ मैं कुछ खाना ढूँढने का इन्तजाम करता हूँ।"

बहिन पेड़ पर चढ़ गयी और बारहसिंगा आस पास में खाना ढूँढने चला गया। जल्दी ही वह एक बड़ा खरगोश पकड़ लाया जिसे उसकी बहिन ने उसके लिये पकाया। इस तरह से वे दोनों कई हफ्ते तक रहते रहे।

अब ऐस कुछ इत्तफाक हुआ कि बादशाह के घोड़े पेड़ के पास से स्रोत से पानी पीने के आदी थे। शाम को राजा के नौकर घोड़ों को पानी पिलाने के लिये लाये और उनके पीने के पानी एक बरतन में भर दिया।

जब वे पानी पी रहे थे तो उन्होंने उस साफ पानी में बहिन की परछाईं देखी तो वे डर कर पीछे हट गये। यह देख कर नौकरों को लगा कि यह पानी शायद साफ नहीं है। तो उन्होंने उस पानी को फेंक कर दूसरा पानी भरा। फिर भी घोड़ों ने उसमें से पानी नहीं पिया तो नौकरों ने इस तर्कहीन घटना को बादशाह से जा कर कहा।

एक सईस बोला — "शायद पानी गन्दा था।"

नौकर बोले — "नहीं। वह पानी गन्दा नहीं था। क्योंकि हमने तो इनके पानी पीने के बरतन को खाली कर के फिर से भर दिया था।"

बादशाह बोले — "जाओ और फिर से जा कर चारों तरफ देखो। हो सकता है कि आसपास में कोई चीज़ ऐसी हो जिसकी वजह से ये डर रहे हों।"

सो वे बेचारे फिर वहॉ गये तो उन्होंने चारों तरफ देखा तो देखा कि एक लड़की पेड़ की चोटी पर बैठी हुई है। वे तुरन्त ही अपने मालिक के पास वापस गये और अपनी खोज की कहानी सुनायी।

बादशाह को इसमें बड़ी रुचि हो गयी तो वह उस जगह पर आया जहॉ पर उसके घोड़े पानी नहीं पी रहे थे। उसने सिर ऊपर उठा कर देखा तो देखा कि पेड़ पर तो चॉद जैसे सुन्दर मुखड़े वाली एक लड़की बैठी हुई है।

उसे देख कर उसने पूछा — "क्या तुम कोई आत्मा हो या फिर कोई परी हो?"

लड़की बोली — "न तो मैं कोई आत्मा हूॅ और न ही कोई परी। मैं तो आदमी का बच्चा हूॅ।"

बादशाह ने उससे नीचे उतरने के लिये बहुत कहा पर सब बेकार। उसके अन्दर नीचे उतरने का साहस ही नहीं हुआ। इस बात पर बादशाह को गुस्सा आ गया तो उन्होंने अपने नौकरों से उस पेड़ को काट गिराने के लिये कहा।

नौकरों ने अपनी कुल्हाड़िया लीं और उसे इधर उधर से काटना शुरू कर दिया। जब वह पेड़ गिरने को था तो रात हो गयी। सो उन्हें अपना काम अगले दिन पर छोड़ देना पड़ा।

वे अभी मुश्किल से ही वहॉ से गये ही थे कि बारहसिंगा जंगल से आ गया और पेड़ की हालत देख कर अपनी बहिन से पूछा कि वहॉ क्या हुआ था।

बारहसिंगा ने जब उसकी कहानी सुनी तो बोला — "यह तुमने ठीक किया। किसी भी हालत में नीचे नहीं आना।"

फिर बारहसिंगा पेड़ के नीचे गया और उसे चाटा तो लो पेड़ का तना तो पहले से भी अधिक मोटा और मजबूत हो गया।

अगली सुबह बारहसिंगा फिर से जंगल चला गया। अगले दिन बादशाह के लोग फिर वहीं आये तो यह देख कर आश्चर्यचकित रह गये कि उस पेड़ का तना जहॉ जहॉ उन्होंने काटा था वहॉ सब ठीक हो गया है और यही नहीं वह तना और मोटा भी हो गया है।

खैर उन्होंने अपना काम फिर से करना शुरू कर दिया। पर अभी उन्होंने अपना काम केवल आधा ही किया था कि फिर शाम हो गयी।

थोड़े में कहो तो जब नौकर लोग चले गये तो जंगल में से बारहसिंगा फिर से आ गया उसने फिर से तने को चाटा और वह तना फिर से वही हुआ – तना केवल ठीक ही नहीं हुआ बल्कि और मोटा और मजबूत भी हो गया।

अगले दिन सुबह फिर ऐसा ही हुआ। जब बारहसिंगा जंगल चला गया तो बादशाह वहॉ आया। उसने देखा कि पेड़ तो साबुत था और और अधिक मोटा हो गया था। तो उसने कोई दूसरी तरकीब सोची जिससे वह अपना काम पूरा कर सके।

वह एक बुढ़िया के पास गया वहॉ जा कर एक जादूगरनी को आवाज लगायी तो आवाज सुन कर एक बुढ़िया बाहर निकल कर

आयी। बादशाह ने उसे अपनी कहानी बतायी और कहा कि अगर वह एक लड़की को पेड़ पर से नीचे उतार देगी तो वह उसे बहुत सारा खजाना देगा।

जादूगरनी ने तुरन्त ही यह काम स्वीकार कर लिया और हाथ में एक तीन टॉगों वाला चूल्हा और एक बरतन ले कर और कुछ और चीज़ें ले कर उधर चल दी। उसने तीन टॉगों वाला चूल्हा जमीन पर रखा और उसके ऊपर बरतन रख दिया। पर बरतन भी उलटा रखा।

उसने स्रोत से पानी लेते हुए अन्धे होने का नाटक करते हुए पानी को बरतन में नहीं बल्कि उसके पास डाल दिया। लड़की ने यह सोचते हुए कि वह बुढ़िया तो अन्धी थी उसे पुकारा और कहा — "मॉ जी। आपने अपना बरतन उलटा रखा हुआ है इसलिये आपका पानी नीचे बिखर रहा है।"

"ओह प्यारी बेटी। तुम कहॉ हो। मैं तुम्हें देख नहीं सकती। मैं मैले कपड़े धोने के लिये यहॉ ले कर आयी हूॅ। अल्लाह के लिये यहॉ आ कर मेरा बरतन सीधा कर जाओ ताकि मैं अपने कपड़े ठीक से धो सकूॅ।"

पर सौभाग्य से लड़की को बारहसिंगे की चेतावनी याद रही सो वह वहीं बैठी रही।

अगले दिन वह जादूगरनी वहॉ फिर आयी। वह उसी पेड़ के नीचे आ कर बैठ गयी। उसने वहॉ आग जलायी और अपना आटा

निकाला। पर उसने आटे की बजाय राख को चलनी में डाल कर छानना शुरू कर दिया।

पेड़ पर चढ़ी लड़की ने जब यह देखा तो उसके मुँह से निकला — "ओह यह बेचारी अन्धी बुढ़िया। माँ जी। आपने चलनी में आटे की बजाय राख डाल रखी है।"

जादूगरनी बोली — "बेटी मैं अन्धी हूँ। मैं देख नहीं सकती। क्या तुम मेहरबानी कर के यहाँ आ कर मेरी सहायता कर सकती हो।"

पर बारहसिंगे की बात ध्यान में रख कर लड़की वहीं पेड़ पर बैठी रही और नीचे नहीं उतरी। इस तरह एक बार फिर वह बुढ़िया उसे पेड़ से नीचे नहीं उतार सकी।

तीसरे दिन वह बुढ़िया फिर उस पेड़ के नीचे आयी। इस बार वह एक बकरा ले कर आयी थी। पर जैसे ही उसने उसे काटने के लिये अपना चाकू उठाया तो उसने बजाय उसके फल से उसे काटने के उसके गले में चाकू का हैन्डिल घुसा दिया।

लड़की से उस बेचारे बकरे का दर्द नहीं सहा गया और वह सब कुछ भूल कर तुरन्त ही बकरे को दर्द से बचाने के लिये नीचे उतर आयी।

पर तुरन्त ही उसको अपने इस काम के लिये पछताना भी पड़ा। क्योंकि जैसे ही उसने जमीन पर पैर रखा बादशाह जो पेड़ के

पीछे खड़ा हुआ था बाहर निकल आया उस पर कूद पड़ा और उसको अपने महल ले गया।

लड़की ने बादशाह की ऑखों में एक ऐसी इच्छा देखी जैसे कि बादशाह उससे शादी करने के लिये तुरन्त ही तैयार था। पर उसने मना कर दिया जब तक उसका भाई उसके पास नहीं लाया जाता वह उससे शादी नहीं कर सकती।

बादशाह ने उस बारहसिंगे को ढूँढने के लिये चारों तरफ अपने नौकर भेज दिये। जल्दी ही वे उसे पकड़ कर महल ले आये।

जब यह सब हो गया तो उसके बाद से दोनों भाई बहिन ने एक दूसरे का साथ नहीं छोड़ा। वे एक साथ सोते थे एक साथ उठते थे।

जब लड़की की शादी बादशाह से हुई तो भी भाई ने उसका साथ नहीं छोड़ा। पर रात को जब लड़की अपने सोने वाले कमरे में जाने लगी तो बारहसिंगे ने अपने अगले खुर उसे धीरे से मारे और उससे कहा "यह जीजा जी की हड्डी है और यह बहिन की हड्डी है।"

इस तरह से समय चलता रहा। कहानी का समय तो और भी जल्दी जाता है और प्रेमियों का समय तो उड़ता है। हमारे प्रेमी बहुत अच्छी तरह से रहते पर वहॉ एक धब्बा था और वह थी महल की एक नीग्रो स्त्री जो वहॉ दासी का काम करती थी।

वह रानी से बहुत जलती थी क्योंकि बादशाह ने अपनी पत्नी के लिये पेड़ वाली एक लड़की को चुना था न कि उसे खुद को। अब यह स्त्री बदला लेने का मौका ढूँढ रही थी जो उसे बहुत जल्दी ही मिलने वाला था।

महल के पास ही के बागीचे में एक बहुत बड़ा तालाब था। बादशाह की पत्नी यहाँ अक्सर अपना समय गुजारने के लिये आ जाया करती थी। उसके हाथ में सोने का एक प्याला होता और पाँव में चाँदी के जूते।

एक दिन जब वह तालाब के पास खड़ी हुई थी तो उस दासी ने अपनी छिपी हुई जगह से उसे धक्का दे कर तालाब में गिरा दिया। वह बेचारी सिर के बल तालाब में गिर पड़ी।

वह काली स्त्री फिर महल पहुँची जैसे कुछ हुआ ही न हो। उसने अपनी मालकिन के कपड़े पहने और मालकिन की जगह पर बैठ गयी।

रात हुई तो बादशाह आया और उसने अपनी नकली पत्नी से पूछा कि वह इतनी काली कैसे हो गयी। तो वह बोली — "मैं अपने बागीचे में घूम रही थी कि सूरज की तेज़ धूप से मेरा चेहरा काला पड़ गया।"

बादशाह को कोई शक नहीं हुआ सो उसने उसे अपने पास खींच लिया और उसे तसल्ली दी। पर बारहसिंगा वहाँ आ गया और धोखे को पहचान गया। उसने दोनों के पैरों को अपने आगे वाले

खुरों से नरमी से सहलाया और बोला "यह जीजा जी की हड्डी है और यह बहिन की हड्डी है।"

दासी को तो इस बात का कुछ पता नहीं था सो वह डर गयी। साथ में उसे यह डर भी लगा कि कहीं बारहसिंगे के सामने उसकी पोल न खुल जाये सो उसने उस बारहसिंगे से पीछा छुड़ाने की कोई तरकीब सोचनी शुरू कर दी।

अगले दिन उसने बीमारी का बहाना किया और पैसे और मीठे शब्दों के ज़ोर पर डाक्टरों को बादशाह से यह कहने पर मजबूर कर दिया कि उसकी पत्नी बहुत बीमार थी। और केवल बारहसिंगे का दिल खाने से ही वह ठीक हो सकती थी।

बादशाह अपनी नकली पत्नी के पास गया और पूछा कि क्या वह अपने बारहसिंगे भाई का दिल खायेगी। ऐसा करने से क्या उसे दुख नहीं होगा।

उसने जवाब दिया — "मैं क्या करूँ जब उसे खाना है तो खाना ही है। अगर मैं मर गयी तो भी उसका बुरा होगा। तो इससे अच्छा तो यह है कि मुझे ही उसे मार देना चाहिये। तब मैं बच जाऊँगी और मरने के बाद वह भी अपने जानवर के रूप से निकल आयेगा।"

बादशाह ने उसे काटने के लिये अपने नौकरों को चाकू तेज़ करने का हुक्म दे दिया और पानी गरम होने के लिये रखवा दिया।

बेचारे बारहसिंगे ने महल में हलचल देखी तो उसका मतलब समझ गया। वह भागा भागा बागीचे के तालाब पर गया और जा कर अपनी बहिन से यह तीन बार कहा —

चाकू तेज़ किया जा रहा है पानी उबाला जा रहा है
मेरी बहिन जल्दी करो मेरी सहायता करो

तीनों बार एक मछली के अन्दर से आवाज आयी —

मैं यहॉ मछली के पेट में हूँ मेरे हाथ में सोने का प्याला है
मेरे पैरों में चॉदी के जूते हैं मेरी गोद में छोटा बादशाह है

क्योंकि बादशाह की पत्नी को मछली के पेट में होने पर भी एक बेटा हो चुका था। उधर बादशाह खुद कुछ नौकरों को ले कर बारहसिंगे को पकड़ने गया था कि उसने बारहसिंगे और किसी लड़की की आवाज सुनी।

उस तालाब का पानी निकालना तो कुछ ही मिनटों का काम था। सो मछली भी निकाल ली गयी। उसका पेट चीरा गया तो लो देखो तो बादशाह की असली पत्नी अपने छोटे बादशाह को लिये उसमें बैठी थी।

बहुत खुश खुश बादशाह अपनी पत्नी और बेटे को ले कर महल लौटा। उसकी पत्नी के हाथ में अभी भी सोने का प्याला था और पैरों में चॉदी के जूते थे। बादशाह ने महल आ कर यह घटना महल के सभी लोगों को बतायी।

इस बीच बारहसिंगे ने मछली का थोड़ा सा खून चाट लिया था सो वह जादुई ढंग से बारहसिंगे से आदमी में बदल चुका था। वह भी खुशी के मारे दौड़ता हुआ अपनी बहिन के पास चला गया। बहिन ने भी जब अपने भाई को आदमी के रूप में देखा तो सबकी खुशी दोगुनी हो गयी।

अब बादशाह ने उस अरब स्त्री को अपने सामने बुलवाया और उससे पूछा कि उसे क्या चाहिये – चालीस तलवारें या फिर चालीस घोड़े।"

उसने जवाब दिया — "चालीस तलवारें मेरे दुश्मनों का गला काटने के लिये। और चालीस घोड़े मेरी सवारी के लिये।"

उसके बाद वह नीच स्त्री चालीस घोड़ों की पूँछों से बाँध दी गयी और वे घोड़े उसे भगा कर ले गये जिससे उसके शरीर के चिथड़े उड़ गये।

उसके बादशाह ने अपनी शादी दोबारा मनायी। बारहसिंगे राजकुमार को भी उसके दरबारियों में से एक सुन्दर लड़की मिल गयी। चालीस दिन और चालीस रातों तक इन दोनों की शादियों का उत्सव मनता रहा।

जैसे वे खाते रहे पीते रहे और अपना उद्देश्य पूरा करते रहे उसी प्रकार हम भी खाते रहें पीते रहें और अपना उद्देश्य पूरा करते रहें जिसके लिये हम यहाँ भेजे गये हैं।

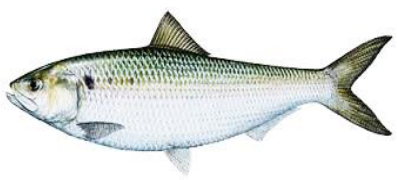

9 डर[29]

यह बहुत समय पुरानी बात है कि एक स्त्री थी और उसका एक बेटा था। एक दिन शाम को दोनों साथ साथ बैठे हुए थे तो माँ ने अपने बेटे से कहा — "बेटा ज़रा दरवाजा बन्द कर दे। मुझे डर लग रहा है।"

बच्चे ने अपनी माँ से पूछा — "माँ डर क्या होता है।"

माँ बोली — "जब कोई डरता है।"

बच्चे ने सोचा "यह डर क्या हो सकता है। मैं जा कर पता करता हूँ।"

सो वह घर से चल दिया और एक पहाड़ पर आ पहुँचा जहाँ उसने चालीस डाकू देखे। उन्होंने वहाँ आग जलायी और उसके चारों ओर बैठ गये। नौजवान उनके पास गया और उन्हें सलाम किया तो उनमें से एक डाकू ने पूछा —

"यहाँ तो कोई चिड़िया भी आने का साहस नहीं करती यहाँ से कोई कारवाँ भी नहीं गुजरता तो यहाँ तुम्हारे आने का साहस कैसे हुआ?"

नौजवान बोला — "मैं डर की तलाश में हूँ। मुझे डर देखना है।"

"डर तो वहाँ है जहाँ हम हैं।"

[29] Fear. A tale from Turkey. Taken from : https://www.sacred-texts.com/asia/ftft/ftft05.htm

नौजवान ने पूछा "कहॉ।"

तब डाकू ने कहा — "यह केटली लो आटा लो घी लो चीनी लो और यहीं पास में कब्रिस्तान है इनको ले कर वहॉ चले जाओ और जा कर इनसे हलवा बना लाओ।"

नौजवान बोला "ठीक है।" और वह सब सामान ले कर पास के कब्रस्तिान में चला गया। वहॉ पहुँच कर उसने आग जलायी और हलवा बनाना शुरू कर दिया।

जब वह हलवा बना रहा था तो एक कब्र में से एक हाथ निकला और एक आवाज आयी — "क्या इसमें से मुझे कुछ नहीं मिलेगा?"

उसने उसके हाथ पर चम्मच मार कर कहा — "हॉ हॉ क्यों नहीं। ज़िन्दा लोगों से पहले मैं मरे हुओं को खिलाऊँगा।"

यह सुन कर वह हाथ वहॉ से गायब हो गया। उधर नौजवान भी अपना हलवा और सब सामान उठा कर डाकुओं के पास चला गया। डाकुओं ने उससे पूछा — "क्या तुम्हें वहॉ डर मिला?"

नौजवान बोला — "नहीं मुझे वहॉ डर तो नहीं मिला बस केवल एक हाथ मिला जो मेरे सामने प्रगट हुआ और हलवा मॉग रहा था पर जब मैंने उस पर एक चम्मच मारी तो वह गायब हो गया। उसके बाद मैंने उसे नहीं देखा।"

डाकुओं को यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ। तब उनमें से एक दूसरा डाकू बोला — "यहॉ से पास में ही एक सुनसान इमारत

है। तुम वहॉ चले जाओ। मुझे विश्वास है कि तुम्हें वहॉ डर अवश्य ही मिल जायेगा।"

वह उस घर में गया। जब वह उसमें अन्दर घुसा तो उसने उसमें एक ऊॅचा से चबूतरा देखा जिस पर एक झूला रखा हुआ था और उसमें एक बच्चा रो रहा था। एक कमरे में एक लड़की इधर से उधर घूम रही थी।

उसे देख कर वह लड़की उसके पास आयी और उससे बोली — तुम मुझे अपने कन्धे पर चढ़ा लो। बच्चा रो रहा है और मुझे उसे चुप कराना है।"

नौजवान राजी हो गया और वह लड़की बच्चे को ले कर उसके कन्धे पर चढ़ गयी। वहॉ बैठ कर वह तो बच्चे में उलझ गयी पर वह अपने दोनों पैरों से उसकी गरदन दबाने लगी जब तक उसे गला घुटने की सी घुटन महसूस नहीं होने लगी।

घुटन से वह उछल पड़ा और उस उछलने से वह गिर पड़ा जिससे वह लड़की उसके कन्धे से कूद गयी और फिर तुरन्त ही वह गायब भी हो गयी। जैसे ही वह गयी उसकी बॉह से एक बाजूबन्द खुल कर नीचे गिर गया। उसने वह बाजूबन्द उठा लिया और घर छोड़ कर चला गया।

जब वह उसे ले कर सड़क पर जा रहा था तो उसे एक ज्यू मिला जो उस बाजूबन्द को देख कर बोला "अरे यह बाजूबन्द तो मेरा है।"

नौजवान बोला — "नहीं यह मेरा है।"

ज्यू बोला — तो चलो फिर काज़ी के पास चलते हैं। वही फैसला करेगा कि यह किसका है। अगर वह यह तुम्हें दे दे देता है तो यह तुम्हारा होगा और अगर वह इसे मुझे दे देगा तो फिर इसे मैं रखूँगा।"

इस तरह से आपस में तय कर के वे काज़ी के पास पहुँचे। काज़ी ने कहा — "यह बाजूबन्द उसी का होगा जो यह साबित करेगा कि यह उसका है।"

उन दोनों में से कोई भी इस बात को साबित नहीं कर सका कि वह बाजूबन्द उसका है सो काज़ी को यह फैसला सुनाना पड़ा कि वह बाजूबन्द तब तक उसके पास ही रहेगा जब तक इसका दूसरा बाजूबन्द ला कर नहीं दिखाया जाता। जो कोई भी उसे ले कर आयेगा यह बाजूबन्द उसी का हो जायेगा।

अब ज्यू और नौजवान दोनों ही वहाँ से चले गये।

नौजवान समुद्र के कनारे की ओर चला गया। वहाँ उसने देखा कि एक जहाज़ पानी में ऊपर नीचे उछल रहा है और उसमें से डर के मारे लोगों के रोने की आवाजें आ रही हैं तो वह वहीं किनारे पर से ही चिल्लाया — "क्या तुम लोगों को डर मिल गया है?"

लोग चिल्ला कर बोले — "अफसोस हम लोग डूब रहे हैं।"

नौजवान ने तुरन्त ही अपने कपड़े उतारे और पानी में कूद पड़ा और जहाज़ की ओर तैर गया।जब वह वहाँ पहुँचा तो लोगों ने

उससे कहा कि कोई उनके जहाज़ को इधर उधर हिला रहा है। हमें बहुत डर लग रहा है।

नौजवान ने एक रस्सी अपनी कमर से बॉधी और तुरन्त ही समुद्र की तली तक पहुॅच गया। वहॉ उसे समुद्र की बेटी डेनिज़ कीज़ी[30] मिल गयी जो उनका जहाज़ हिला रही थी।

वह जा कर उसे ऊपर गिर गया और उसे कस कर जकड़ कर वहॉ से हटा दिया। उसके बाद वह सतह पर आ गया और उनसे पूछा कि "क्या यही आप सबका डर था?"

लेकिन बिना उनका जवाब सुने ही वह किनारे की ओर तैर आया। अपने कपड़े पहने और वहॉ से चला गया।

वह फिर डर की खोज में चल दिया। अबकी बार वह एक बागीचे में आया जिसके सामने एक फव्वारा खड़ा हुआ था। उसने सोचा कि वह उस बागीचे में जा कर थोड़ा आराम कर लेता है सो वह बागीचे में चला गया।

फव्वारे के चारों तरफ तीन कबूतर बैठे हुए थे। वे उसके पानी में डुबकी मारते थे और फिर जैसे ही वह पानी में से बाहर आ कर अपने पंख फड़फड़ाते थे वे एक सुन्दर लड़की में बदल जाते थे। जब तीनों कबूतर लड़कियों में बदल गये तो उन्होंने एक मेज सजायी जिस पर पीने के लिये गिलास लगे हुए थे।

[30] Denize Kyzy – daughter of the Sea

जब उनमें से पहली लड़की ने गिलास अपने होठों से लगाया तो दूसरी ने पूछा — "तुम किसकी तन्दुरुस्ती के लिये पी रही हो।"

तो उसने जवाब दिया — "उस नौजवान के लिये जो कब्रिस्तान में हलवा बना रहा था और जिसके आगे कब्र में से एक हाथ उठा और फिर भी वह नहीं डरा।"

जब दूसरी लड़की ने अपना गिलास अपने मुँह से लगाया तो दूसरी दो लड़कियों ने उससे पूछा — "तुम किसकी तन्दुरुस्ती के लिये पी रही हो

उसने जवाब दिया — "उसकी तन्दुरुस्ती के लिये जिसके कन्धों पर मैं खड़ी थी। मैंने तो उसका गला करीब करीब घोट ही दिया था पर वह डरा नहीं। बस उसी के लिये।"

फिर तीसरी लड़की ने अपना गिलास अपने मुँह से लगाया तो बाकी दो ने उससे पूछा — "और तुम किसकी तन्दुरुस्ती के लिये पी रही हो?"

तीसरी बोली — "समुद्र में मैंने एक जहाज़ को इधर उधर उछाला तो एक नौजवान आया और मुझे पकड़ कर इतना मारा कि मैं तो बस मर ही गयी थी। मैं उसकी तन्दुरुस्ती के लिये पीती हूँ।"

तीसरी लड़की ने अपनी बात बस खत्म ही की थी कि नौजवान खुद वहाँ प्रगट हो गया और बोला — "और वह नौजवान मैं हूँ।"

तीनों लड़कियाँ उसे गले लगाने के लिये उठी पड़ीं।

वह बोला — "काज़ी के पास मेरा एक बाजूबन्द है जो तुममें से किसी एक के हाथों से गिर गया था। एक ज्यू उसे मुझसे लेना चाह रहा था पर मैंने उसे देने से मना कर दिया तो काज़ी ने कहा कि जो कोई भी इसका दूसरा ले कर आयेगा यह बाजूबन्द भी उसी को मिलेगा। तो अब मैं उसके साथी की तलाश में हूँ।"

वे लड़कियाँ उसे एक गुफा में ले गयीं जहाँ शाही ढंग से सजे हुए बहुत सारे कमरे थे। हर कमरा सोने से और बहुत कीमती चीज़ों से भरा हुआ था। लड़कियों ने उसे पहले बाजूबन्द का दूसरा साथी दे दिया तो वह तुरन्त ही उसे ले कर काज़ी के पास गया।

उसने उसे काज़ी को दिखा कर उससे अपना पहले वाला बाजूबन्द लिया और फिर से वापस गुफा में आया। लड़कियों ने कहा — "अब तुम हमसे अलग नहीं हो सकते।"

नौजवान बोला — "यह तो अच्छा है पर मैं डर खोजने के लिये निकला हूँ और जब तक मैं डर को खोज नहीं कर लूँगा तब तक मैं चैन से नहीं बैठूँगा।"

हालाँकि उन्होंने उसे बहुत रोकने की कोशिश की पर वह यह कह कर वह वहाँ से चल दिया। चलते चलते वह एक ऐसी जगह आ गया जहाँ बहुत भीड़ लगी हुई थी। वहाँ आ कर उसने पूछा कि वहाँ इतनी भीड़ क्यों लगी है।

लोगों ने उसे बताया कि उनका शाह मर गया है। एक कबूतर छोड़ दिया गया है और वह अब जिस आदमी के सिर पर बैठ

जायेगा उसी को शाह बना दिया जायेगा। नौजवान उन सब उत्सुक देखने वालों की भीड़ में खड़ा रहा। कबूतर छोड़ दिया गया था और वह अब हवा में चारों ओर उड़ रहा था।

सब लोग यह देखने के लिये उत्सुक थे कि वह किसके सिर पर बैठेगा। आखिर वह उस नौजवान के सिर पर आ कर बैठ गया। तुरन्त ही उसे वहॉ का शाह घोषित कर दिया गया।

पर क्योंकि वह यह शान वाला पद स्वीकार नहीं कर रहा था तो एक दूसरा कबूतर छोड़ा गया। इत्तफाक की बात कि यह कबूतर भी नौजवान के सिर पर ही आ कर बैठ गया। तो फिर तीसरा कबूतर छोड़ा गया तो वह भी उसी के सिर पर आ कर बैठ गया।

अब नौजवान के पास वहॉ का शाह बनने के अलावा और कोई चारा नहीं था। फिर भी वह भीड़ को अपने आपको महल ले जाने से रोकने के लिये बोला — "मैं डर खोजने निकला हूॅ और मैं तुम्हारा शाह नहीं बन सकता"

जो उसने अभी कहा वह बात शाह की विधवा तक पहुॅचायी गयी तो उसने कहा — "आज रात उसे यहॉ का शाह का पद ग्रहण करने दो कल मैं उसकी मुलाकात डर से करवाऊॅगी।"

नौजवान राजी हो गया हालॉकि उसे जो भी शाह मर गया था उसके बारे में कोई बड़ी अक्लमन्दी की बात सुनने को नहीं मिली जैसे वह पहले दिन ज़िन्दा था और अगले दिन ही वह मर गया था।

महल में घूमते घूमते वह एक ऐसे कमरे में आ पहुँचा जिसमें उसका ताबूत बनवाया जा रहा था और पानी गरम किया जा रहा था।

वह शान्ति से वहाँ सो तो गया पर जैसे ही उसके नौकर वहाँ से गये वह उठा उसने अपना ताबूत दीवार के सहारे रख दिया और फिर उसमें आग लगा कर उसे जला कर राख कर दिया। उसके बाद वह आराम से लेट गया और गहरी नींद सो गया।

अगले दिन जब सुबह हुई तो नौकर लोग नये राजा की लाश को लेने के लिये आये पर जब उन्होंने राजा को आराम से सोते हुए देखा तो बहुत खुश हुए। इस अच्छी खबर को सुनाने के लिये वह तुरन्त ही सुलताना के पास गये।

फिर उसने रसोइये को बुलाया और उससे कहा कि वह सूप की प्लेट में एक ज़िन्दा चिड़िया डाल दे। शाम हुई शाह और सुलताना दोनों खाना खाने बैठे। जब सूप की प्लेट आयी तो सुलताना ने शाह से कहा कि वह उस प्लेट का ढक्कन खोले।

नौजवान बोला — "नहीं। मुझे सूप की कोई इच्छा नहीं है।"

सुलताना बोली — "पर आप ढक्कन तो खोलें।"

सुलताना के बार बार कहने पर उसने अपना हाथ बढ़ाया और प्लेट का ढक्कन खोला तो उसमें से एक चिड़िया उड़ कर भाग गयी। यह घटना इतनी अचानक थी कि एक पल को उसे डर का धक्का लगा।

तभी सुलताना चिल्लायी — "देखा यही है डर।"

नौजवान बोला — "क्या यही डर है।"

सुलताना बोली — "आप तो सचमुच में डर गये थे।"

उसके बाद शादी की दावत की तैयारियॉ की गयीं जो चालीस दिन तक चली। फिर वह अपनी मॉ को भी वहीं ले आया और सब लोग खुशी खुशी रहे।

10 तीन सन्तरा परी[31]

बहुत पुराने समय में हर चीज़ बहुतायत से मिलती थी तो हम लोग सारा दिन खाते पीते रहते थे फिर भी रात को भूखे ही सोते थे। ऐसे समय में एक बादशाह थे जो हमेशा बहुत दुखी रहते थे क्योंकि उनके कोई बेटा नहीं था।

एक दिन दुखी दिल से वह अपने लाला के साथ घूमने निकले रास्ते में वह कौफी और तम्बाकू पीते जाते थे। चलते चलते वे एक बड़ी घाटी में आ गये।

वे सुस्ताने के लिये एक जगह बैठ गये कि उन्हें उस घाटी में कोड़े मारने की आवाज आयी। तभी उनके सामने एक सफेद दाढ़ी वाला दरवेश हरे कपड़े और पीले जूते पहने हुए प्रगट हो गया।

बादशाह और उनका साथी उसे देख कर डर गये पर जब दरवेश उनके पास आया और उसने उनको "सलाम आलेकुम" कह कर सलाम किया तब उनकी कुछ हिम्मत बॅधी और उन्होंने उसका जवाब दिया "वाले कुम सलाम"।

दरवेश ने पूछा — "बादशाह सलामत। कहॉ जा रहे हैं।"

---

[31] The Three Orange Peris. A folktale from Turkey. Taken from : https://www.sacred-texts.com/asia/ftft/ftft06.htm
[My Note : This story is like the frame story of the Italian folktale book "Il Pentamerone" by Giambattista Basile, 1636, 50 tales. Its Hindi translation is available from hindifolktales@gmail.com]

बादशाह बोले — "अगर आप यह जानते हैं कि मैं बादशाह हूँ तो आप मेरे दर्द की दवा भी जरूर जानते हांगे।"

अपनी छाती में से एक सेब निकालते हुए और उसे बादशाह को देते हुए दरवेश बोला — "इसका एक आधा हिस्सा सुलताना को खाने के लिये दे दीजियेगा और दूसरा आधा हिस्सा आप खा लीजियेगा।" और तुरन्त ही गायब हो गया।

बादशाह वहाँ से घर चले गये। उन्होंने उस सेब का आधा हिस्सा रानी को दे दिया और बाकी का बचा आधा हिस्सा खुद खा लिया। समय आने पर महल में एक शाहज़ादा पैदा हुआ। बादशाह तो खुशी के मारे पागल हो उठे।

उन्होंने बहुत सारा दान दिया बहुत सारे बन्दियों को छोड़ दिया और अपने राज्य के हर आदमी को खाना खिलाया।

शाहज़ादा धीरे धीरे बढ़ने लगा। वह अब चौदह साल का हो गया था। एक दिन शाहज़ादे ने अपने पिता से विनती की — "बादशाह और मेरे पिता। आप मेरे लिये एक छोटा सा संगमरमर का महल बनवा दीजिये जिसमें दो फव्वारे हों जिसमें से एक में से तेल बहता हो और दूसरे में से शहद बहता हो।

बादशाह अपने एकलौते बेटे को बहुत प्यार करता था सो उसने उसके लिये वैसा ही संगमरमर का महल बनवाने का हुक्म दे दिया जैसा वह चाहता था। दो फव्वारे वाला एक तेल का और एक शहद का।

एक बार शाहज़ादा अपने महल में बैठा हुआ अपने दोनों फव्वारों की तरफ देख रहा था कि एक बुढ़िया अपन जग ले कर वहॉ आयी ताकि वह वहॉ के फव्वारों में से एक में से उसे अपने लिये भर सके। शाहज़ादे ने तुरन्त ही एक पत्थर उठाया और उसके जग का निशाना बॉध कर फेंक दिया।

उसका जग टूट गया। बिना कुछ कहे उसने अपना हाथ खींच लिया। अगले दिन वह फिर वहॉ आयी और जैसे ही वह अपना जग फिर से वहॉ भरने लगी तो शाहज़ादे ने फिर से एक पत्थर उठाया और उसके जग में मार दिया।

उसका जग फिर टूट गया। बिना कुछ कहे वह फिर से वहॉ से चली गयी। पर तीसरे दिन वह फिर वहॉ आयी और शाहज़ादे ने तीसरी बार भी उसका जग तोड़ दिया।

इस बार बुढ़िया बोली — "मैं अल्लाह से प्रार्थना करती हूॅ कि आप तीन सन्तरों की परियों के प्यार में पड़ जायें।"

उसी पल से जैसे शाहज़ादे के शरीर में आग लग गयी। वह बेहोश हो गया। बादशाह ने जब अपने बेटे की यह हालत देखी तो उसने अपने शाही डाक्टर और ओझाओं को बुला भेजा। पर शाहज़ादे की बीमारी को कोई भी ठीक नहीं कर सका।

एक दिन शाहज़ादे ने अपने पिता से कहा — "ओह शाह, मेरे पिता। ये लोग मेरा कोई भला नहीं कर सकते। उनकी सब कोशिशें

बेकार हैं। मुझे तीन सन्तरों की परियों से प्यार हो गया है। मैं जब तक शान्त नहीं बैठूँगा जब तक मैं उन्हें खोज नहीं लूँगा।

यह सुन कर बादशाह बेचारा उसे देख देख कर रोने लगा — "ओह मेरे बच्चे। तू तो मेरा एकलौता बच्चा है। अगर तू ही मुझे छोड़ कर चला गया तो मैं ज़िन्दा कैसे रहूँगा।"

पर शाहज़ादे की हालत सुधरने की बजाय बिगड़ती ही जा रही थी तो बादशाह ने सोचा कि अब उसे अधिक देर तक घर में रखना ठीक नहीं है। उसे उन तीन परियों की खोज में जाने देना ही चाहिये। हो सकता है कि वे तीन परियाँ उसे मिल जायें और वह वापस आ जाये।

कीमती कीमती सामान ले कर शाहज़ादा अपनी यात्रा पर चल दिया। पहाड़ियों के ऊपर घाटियों से हो कर वह अपने रास्ते पर आगे बढ़ता ही रहा।

चलते चलते वह एक बहुत बड़े मैदान में आ पहुँचा। वहाँ उसे एक बहुत बड़े साइज़ की "ओस की माँ" मिली। वह दो पहाड़ियों के ऊपर खड़ी थी – उसका एक पैर इस पहाड़ी पर था तो दूसरा पैर दूसरी पहाड़ी पर था।

वह अपने दाँतों से किशमिश चबा रही थी और इस चबाने की आवाज दो दो मील तक जा रही थी। उसकी साँसों से तूफान उठ रहा था। और उसकी बाँहें नौ नौ गज लम्बी थीं।

शाहज़ादे ने अपनी बॉहें उसकी कमर में डाल कर उससे पूछा — "मॉ जी। आप कैसी हैं।"

ओस की मॉ बोली — "अगर तुमने मुझे मॉ जी न कहा होता तो मैं तुम्हें अभी खा जाती।" फिर उसने शाहज़ादे से पूछा कि वह कहॉ से आ रहा था और किधर जा रहा है।

शाहज़ादा एक लम्बी सॉस भर कर बोला — "ओह प्यारी मॉ। मेरी किस्मत इतनी खराब है कि अच्छा होता कि आपने उसके बारे में मुझसे न पूछा होता और मैंने आपको न बताया होता।"

"फिर भी कुछ कहो तो सही।"

शाहज़ादा फिर एक लम्बी सॉस भर कर बोला — "मैं तीन सन्तरों वाली परियों के प्यार में पड़ गया हूॅ। क्या आप मुझे उन तक पहुॅचने का रास्ता दिखा सकती हैं?"

ओस की मॉ बोली — "शान्त। यहॉ इन शब्दों को बोलना मना है। मैं और मेरे लड़के भी उससे अपने आपको सुरक्षित रखने की कोशिश करते हैं। पर मुझे यह नहीं मालूम कि वे कहॉ रहती हैं। मेरे चालीस बेटे हैं जो धरती में ऊपर नीचे घूमते रहते हैं हो सकता है कि वे उनके बारे में कुछ जानते हों।

जब शाम ढल गयी तो ओस की मॉ ने अपने बेटों के आने से पहले शाहज़ादे को उठाया और उसे धीरे से मारा तो वह अब पानी का जग बन गया। यह सब उसने किया ही था कि उसके चालीसों बेटे वहॉ आ पहुॅचे।

वे आते ही चिल्लाये — "मॉ हमें किसी आदमी के मॉस की खुशबू आ रही है।"

"पर यहॉ किसी आदमी को क्या करना चाहिये। तुम लोग भूखे होगे तुम लोग बैठो और खाना खा लो।"

सो वे सब ओस खाना खाने बैठे। जब वे सब खाना खा रहे थे तो मॉ ने उनसे पूछा — "अगर धरती का कोई आदमी तुम्हारा भाई हो तो तुम क्या करोगे।"

सब एक साथ बोले — "हमें उसके साथ क्या करना चाहिये मॉ? हम उसे अपने भाई के समान प्यार करेंगे।"

अपने बेटों से आश्वासन पाने के बाद मॉ ने जग के ऊपर मारा तो उसमें से एक नौजवान प्रगट हो गया। मॉ ने कहा — "देखो यह है तुम्हारा भाई।"

ओस भाइयों ने बहुत खुशी से उसका स्वागत किया उसे अपना भाई कहा और अपने पास बिठाया। फिर उन्होंने अपनी मॉ से पूछा कि उसने उसका उनसे खाने से पहले परिचय क्यों नहीं करवाया।

मॉ बोली — "बेटे। यह वह खाना नहीं खा सकता था जिसे खाने के तुम आदी हो। धरती के लोग चिड़ियें खाते हैं गाय का बकरे का मॉस जैसी चीज़ें खाते हैं।"

तुरन्त ही उन ओस भाइयों में से एक ओस भाई उठा और एक भेड़ ले आया और ला कर नौजवान के सामने रख दी।

मॉ बोली — "बेटा तुम बहुत सीधे हो। यह खाने से पहले पकायी जाती है। उसके बाद ही इसे खाया जाता है।"

सो वह फिर से उठा और उस बेड़ को वहॉ से ले गया और कुछ ही देर में भून कर ले आया और उसे फिर से शाहज़ादे के पास रख दिया। शाहज़ादे ने उसमें से पेट भर कर खाया और बाकी बचा हुआ एक तरफ को रख दिया।

यह देख कर सब ओस भाइयों ने उससे पूछा कि उसने वह सारी भेड़ क्यों नहीं खायी ताो उनकी मॉ ने बताया कि धरती के लोग उतना नहीं खाते जितना कि ओस भाई लोग खाते हैं।

उनमें से एक ओस भाई बोला — "हम भी देखते हैं कि भेड़ का मॉस कैसा लगता है।" कह कर उसने उसमें से एक दो कौर ही खाये होंगे कि वह सारी भेड़ खत्म हो गयी।

अगली सुबह ओस की मॉ ने अपने बेटों से कहा — "बच्चों तुम्हारा भाई बहुत दुख में है।"

"मॉ इन्हें क्या दुख है? हो सकता है कि शायद हम उनकी कुछ सहायता कर सकें।"

मॉ बोली — "इन्हें तीन सन्तरों वाली परियों से प्यार हो गया है।"

ओस भाई बोले — "हमको तो तीन सन्तरों वाली परियों के रहने की जगह मालूम नहीं। हम उनके पड़ोस में भी कभी नहीं जाते पर शायद हमारी मौसी को पता हो।"

मॉ बोली — "ठीक है। तुम लोग इन्हें वहीं ले जाओ। उसे मेरी तरफ से सलाम बोलना और कहना कि यह मेरा बेटा है और यह मेरी इच्छा है कि अगर वह कर सकती है तो वह इसकी सहायता अवश्य करे।"

ओस भाई अपनी मॉ का कहना मान कर उसे अपनी मौसी के पास ले गये और जा कर उसे सब बताया। इस बुढ़िया के साठ बेटे थे। यह भी खुद नहीं जानती थी कि तीन सन्तरों की परियॉ कहॉ रहती थीं सो उसने भी अपने बच्चों के आने का इन्तजार किया।

इसको भी यह पता नहीं था कि उसके बच्चे उस नौजवान का किस तरह से स्वागत करेंगे सो उसने भी उसे धीरे से छुआ और उसे एक बरतन में बदल दिया। बच्चों ने आते ही कहा — "मॉ यहॉ तो किसी आदमी के मॉस की बू आ रही है।"

मॉ बोली — "हॉ हॉ वह तो तुम्हें आयेगी ही। तुम इतने दिनों से आदमी का मॉस जो खा रहे हो। आओ चलो खाना खा लो।"

उसके सब बेटे खाना खाने बैठ गये। तब मॉ ने उस बरतन को हल्के से मारा तो साठों ओस भाइयों को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसमें से तो धरती का एक छोटा सा आदमी निकल पड़ा। उन्होंने उसका दिल से स्वागत किया और बैठने के लिये जगह दी और खाने के लिये खाना दिया।

अगले दिन ओस की मॉ ने अपने बच्चों से कहा — "यह बच्चा तीन सन्तरों की परियों के प्रेम में पड़ गया है। क्या तुम लोग इसे वहॉ नहीं ले जा सकते?"

बच्चे बोले — "मॉ हम इन्हें वहॉ नहीं ले जा सकते शायद हमारी दूसरी मौसी जानती हो कि वे कहॉ रहती हैं।"

मॉ बोली — "तब तुम लोग इसे वहॉ ले जाओ। मेरी ओर से उसे सलाम कहना और कहना कि यह मेरा बेटा है और उसका भी। हो सकता है कि वह इसकी कुछ सहायता कर पाये।"

बच्चे उस शाहज़ादे को अपनी दूसरी मौसी के पास ले गये और उसे सारी बातें बतायीं। वह बोली — "ओह मेरे बच्चों। मैं तो इस बारे में कुछ नहीं कर सकती पर शाम को जब मेरे अस्सी बच्चे घर आयेंगे तब मैं उनसे बात करूॅगी।"

यह सुन कर साठ ओस भाइयों ने शाहज़ादे को वहॉ छोड़ा और वापस चले गये। शाम को जब उसके बच्चे आने वाले थे तब उसने शाहज़ादे को हल्के से छुआ और एक झाड़ू में बदल दिया और उसे दरवाजे के पीछे रख दिया।

वह यह कर के चुकी ही थी कि उसके अस्सी बेटे आ पहुॅचे और घर में किसी आदमी के मॉस की बू के आने की बात करने लगे। मॉ ने उन्हें खाना खिलाया और उनसे पूछा — "अगर तुम्हारा एक भाई धरती का एक आदमी होता तो तुम क्या करते।"

उन्होंने कसम खायी कि वे उसे कोई नुकसान नहीं पहुॅचायेंगे।

तब मॉ ने उस झाड़ू को हल्के से मारा तो वह एक शाहज़ादे के रूप में आ गयी। बच्चों ने उसका बड़े प्यार से स्वागत किया। उसकी तन्दुरुस्ती के बारे में पूछा।

मॉ ने फिर पूछा कि क्या वे जानते थे कि तीन सन्तरों की परियॉ कहॉ रहती थीं क्योंकि उनका भाई उनके प्यार में पड़ा हुआ था। सबसे छोटा ओस भाई तो यह सुन कर कूद पड़ा और बोला कि वह जानता है कि वे कहॉ रहती हैं।

मॉ ने कहा — "तो फिर इसे ले जाओ और इसकी इच्छा पूरी करो।"

अगली सुबह दोनों अपनी यात्रा पर निकल पड़े। चलते चलते छोटा ओस बोला — "भाई जल्दी ही हम लोग एक बागीचे के पास पहुँचेंगे। उसमें एक तालाब है वहीं हमें तीन सन्तरे मिलेंगे। जब मैं बोलूँ "अपनी ऑखें बन्द करो... अपनी ऑखें खोलो।" तो तुम वैसा ही करना और जो भी चीज़ तुम्हारे सामने आ जाये उसे पकड़ लेना।"

वे कुछ दूर आगे चले तो वह बागीचा आ गया जिसकी ओस भाई बात कर रहा था। जैसे ही ओस भाई ने तालाब देखा तो वह बोला "अपनी ऑखें बन्द करो... अपनी ऑखें खोलो।"।

शाहज़ादे ने वैसा ही किया तो उसने देखा कि तालाब की चिकनी सतह पर तीन सन्तरे रखे हैं। उसने उसमें से एक सन्तरा उठा कर अपने जेब में रख लिया।

ओस ने उसे दोबारा कहा "अपनी ऑखें बन्द करो... अपनी ऑखें खोलो।" शाहज़ादे ने फिर वैसा ही किया और अबकी बार उसने दूसरा सन्तरा उठा कर अपने जेब में रख लिया और फिर इसी तरह तीसरा भी।

ओस भाई बोला — "अब तुम ध्यान रखना कि इन्हें किसी ऐसी जगह मत तोड़ना जहॉ पानी न हो नहीं तो तुम बहुत पछताओगे।"

शाहज़ादे ने ओस भाई से वायदा किया कि वह उसके कहे अनुसार ही करेगा और दोनों अपने अपने रास्ते चले गये एक दॉये और दूसरा बॉये।

जब शाहज़ादा पहाड़ी पर ऊपर चढ़ कर जा रहा था तो उसे उन सन्तरों का ध्यान आया। सो उसने एक सन्तरा अपनी जेब से निकाला ताकि वह उसे तोड़ सके। जैसे ही उसने सन्तरे में उसे काटने के लिये चाकू घुसाया कि उसमें से चॉद सी सुन्दर एक लड़की बाहर निकल आयी और बोली "पानी। पानी। मुझे पानी चाहिये।"

अब पानी तो उसके पास था नहीं से वह तुरन्त ही गायब भी हो गयी। यह देख कर शाहज़ादा बहुत निराश हुआ पर अब जो कुछ हो गया था उसे वापस नहीं किया जा सकता था।

कुछ घंटे और बीत गये। वह अब तक कई मील चल चुका था। उसने फिर एक सन्तरा तोड़ने की सोचा सो उसने दूसरा सन्तरा निकाला और उसे चीरा तो उसमें से भी पहले से भी सुन्दर एक लड़की निकली और बोली "पानी। पानी। मुझे पानी चाहिये।"

यहॉ भी शाहज़ादे के पास कोई पानी नहीं था सो वह भी तुरन्त ही गायब हो गयी। शाहज़ादे ने सोचा कि वह अब तीसरे सन्तरे को बहुत ध्यान से तोड़ेगा। उसे बहुत प्यास लगी थी। कुछ देर तक चलने के बाद उसे एक स्रोत मिला तो वहॉ उसने पानी पिया और सन्तरा छील दिया।

उस सन्तरे में से पहले से भी सुन्दर एक लड़की बाहर निकल आयी और उसने भी निकलते ही पानी मॉगा "पानी। पानी। मुझे पानी चाहिये।"

अबकी बार तो वह स्रोत के पास ही था सो उसने उसे पानी पिला दिया। अब वह शाहज़ादे के पास ही रही।

शाहज़ादे को चिन्ता थी कि वह उसके पिता के राज्य में कैसे घुसेगी जब तक वह ठीक हालत में न हो। सो उसने लड़की से कहा कि वह स्रोत के पास लगे पेड़ में छिप कर बैठ जाये जब तक वह उसके लिये शाही कपड़े और शाही सवारी ले कर आता है।

जब शाहज़ादा यह सब लेने के लिये चला गया तब वहॉ एक काली दासी पानी भरने के लिये आयी। जब वह पानी भरने लगी तो उसने पेड़ पर बैठी लड़की की परछाईं पानी में देखी जो बहुत सुन्दर थी। उसने सोचा कि वह उसी की परछाईं थी।

उसे अपनी परछाईं अपनी मालकिन के रूप से कहीं अधिक सुन्दर लगी तो उसने सोचा कि वह तो अपनी मालकिन से बहुत

सुन्दर है तो वह उसका पानी क्यों भरे उसे उसका पानी भर कर उसके पास लाना चाहिये।

यह सोच कर उसने अपना घड़ा फेंक दिया। घड़ा मिट्टी का था गिरते ही टूट गया। वह घर वापस चली गयी।

मालकिन ने पूछा कि पानी कहाँ है तो वह काली दासी गुस्से से उसकी ओर देखते हुए बोली — "मैं तुमसे ज़्यादा सुन्दर हूँ इसलिये मुझे तुम्हारे लिये पानी नहीं बल्कि तुम्हें मेरे लिये पानी भरना चाहिये।"

मालकिन ने शीशा उसके सामने रखते हुए कहा — "क्या तेरी अक्ल मारी गयी है। देख शीशे में देख।"

दासी ने शीशे में देखा तो उसने देखा कि वह तो बहुत काली है। बिना कुछ बोले उसने दूसरा घड़ा उठाया और फिर से पानी लाने चल दी। जब वह वहाँ पहुँची तो उसने फिर से उस लड़की परछाईं देखी और फिर से उसे अपनी परछाईं समझ लिया।

मैं निश्चित रूप से अपनी मालकिन से अधिक सुन्दर हूँ कह कर वह एक बार फिर से घड़ा फेंक और घर वापस आ गयी। मालकिन ने उससे फिर से पूछा कि वह पानी ले कर क्यों नहीं आयी।

दासी ने फिर गुस्से से जवाब दिया — "मैं तुमसे अधिक सुन्दर हूँ इसलिये तुमको मेरे लिये पानी लाना चाहिये।"

मालकिन बोली — "तुम पागल हो गयी हो।" कह कर उसने फिर से उसके शामने शीशा रख दिया।

दासी ने फिर से अपनी शक्ल शीशे में देखी तो उसकी समझ में आ गया कि वह तो सचमुच में ही नीग्रो है तब वह तीसरी बार घड़ा ले कर पानी भरने चली गयी।

उस लड़की की परछाईं फिर से पानी में पड़ी देखी तो दासी फिर से अपना घड़ा फेंकने वाली थी कि वह लड़की हॅस पर ऊपर से बोली — "अरे अपना घड़ा क्यों तोड़ती हो। तुम्हें पानी में मेरी परछाईं दिखायी दे रही है न कि तुम्हारी।"

तब दासी ने अपनी निगाह ऊपर की तो एक बहुत सुन्दर लड़की को वहॉ बैठे देखा। इतनी सुन्दर लड़की तो उसने पहले कभी कहीं नहीं देखी थी।

वह शहद से मीठे शब्दों में बोली — "ओह तुम तो दुनियॉ की सबसे सुन्दर लड़की हो। तुम वहॉ ऊपर बैठे बैठे थक गयी होगी। आओ नीचे आ जाओ और मेरी गोद में सिर रख कर थोड़ा आराम कर लो।"

दासी को शिकार हाथ लग गया था। लड़की नीचे उतर कर उसकी गोद में सिर रख कर लेट गयी थी। दासी ने बालों की एक पिन ली और उसकी खोपड़ी में घोंप दी। उसी समय उसकी इच्छा पूरी हो गयी और वह लड़की दासी को पेड़ के नीचे अकेला छोड़ कर एक नारंगी चिड़िया बन कर उड़ गयी।

कुछ देर बाद शाहज़ादा सुनहरे कपड़े पहन कर एक शाही कोच में सवार हो कर वहॉ लौटा तो देखा कि एक काली स्त्री पेड़ के पास

बैठी हुई है और वह जिस लड़की को पेड़ के ऊपर बिठा कर गया था उसका कोई पता नहीं है।

उसने काली लड़की से पूछा — "तुम्हें क्या हुआ?"

"बस तुम मुझे छोड़ दो और चले जाओ। सूरज ने मेरा रंग ही खराब कर दिया है।"

अब शाहज़ादा बेचारा क्या करता। उसने उसी लड़की को अपनी कोच में बिठाया और पिता के महल ले चला।

उधर शाह दरबारी जनता सभी परी के आने के इन्तजार कर रहे थे। पर जब उन्होंने काली लड़की को देखा तो वे तो बहुत निराश हुए। शाहज़ादे ने इसमें क्या देखा। यह तो बिल्कुल भी सुन्दर नहीं है। तरह तरह की बातें उठने लगीं।

शाहज़ादा बाला — "यह लड़की काली नहीं है। क्योंकि यह बहुत देर तक धूप में बैठी रही इसलिये इसका रंग काला पड़ गया है। यह जल्दी ही गोरी हो जायेगी।" यह कहते हुए वह उस लड़की को अपने महल तक ले गया।

शाहज़ादे के महल के पास ही एक बागीचा था। एक दिन एक नारंगी चिड़िया यहॉ आ गयी और पेड़ पर बैठ कर उसने माली को बुलाया।

माली ने पूछा — "तुम्हें मुझसे क्या चाहिये।"

चिड़िया ने पूछा — "शाहज़ादे कैसे हैं।"

माली बोला — "ठीक हैं।"

"और उनकी काली पत्नी कैसी है।"

"वह भी बहुत अच्छी है पर वह अपने महल में ही रहती है।"

यह सुन कर चिड़िया उड़ गयी। अगले दिन वह फिर आयी और उसने अपने वही सवाल फिर पूछे। तीसरे दिन भी उसने यही किया। पर खास बात यह थी कि वह जिस जिस पेड़ पर बैठती थी वह वह पेड़ मुरझा जाता था।

कुछ समय बाद ही एक दिन शाहज़ादा बागीचे में घूमने के लिये आया तो उसने बागीचे में बहुत सारे मुरझाये पेड़ देखे तो उसने माली से इसका कारण पूछा — "तुम इन सब पेड़ों को ठीक से देखते भालते क्यों नहीं हो। ये सारे के सारे मुरझा गये हैं। इनकी पत्तियॉ भी झड़ रही हैं।"

तब माली शाहज़ादे को चिड़िया वाली घटना और उसके सवाल बताये। फिर सोचा कि उसने उन पेड़ों की कितनी सेवा की है पर सब बेकार। शाहज़ादे ने माली से कहा कि वह उन पेड़ों पर चिड़ियों को पकड़ने वाले मसाले मल दे। और जब वह चिड़िया पकड़ में आ जाये तो वह उसे उसके पास ले आये।

माली ने वैसा ही किया और जब चिड़िया पकड़ी गयी तो वह उसे शाहज़ादे के पास ले गया। शाहज़ादे ने उसे एक पिंजरे में रख दिया।

काली लड़की ने जैसे ही उस चिड़िया को देखा तो वह पहचान गयी कि वह कोई साधारण चिड़िया नहीं बल्कि यह तो वही सुन्दर

लड़की थी जिसे उसने उसकी खोपड़ी में बालों की पिन घुसेड़ कर नारंगी चिड़िया बना कर उड़ा दिया था।

यह देख कर वह बीमार पड़ गयी। उसने शाही घराने का सबसे बड़ा डाक्टर बुलाया और उसे रिश्वत दे कर उससे यह कहलवा दिया कि जब तक उसे एक खास तरीके की चिड़िया नहीं खिलायी जायेगी वह ठीक नहीं हो पायेगी।

जब शाहज़ादे ने सुना कि उसकी पत्नी बहुत बीमार है तो उसने शाही डाक्टर बुलवाये और उनसे पूछा कि उसे क्या करना चाहिये। तो उन्होंने कहा कि शाहज़ादी को एक खास तरह की चिड़िया खिलाने पर ही वह ठीक हो पायेंगी।

शाहज़ादा बोला — "अरे ऐसी चिड़िया तो मैंने अभी अभी पकड़ी है।" उसने तुरन्त ही हुक्म दिया कि उस चिड़िया को पका कर शाहज़ादी को खिला दिया जाये ताकि वह जल्दी से जल्दी ठीक हो सके।

पर इस बीच क्या हुआ कि उस चिड़िया का एक पंख नीचे गिर गया और कमरे के फर्श में लगे दो तख्तों के बीच में अटक गया। किसी ने भी इस बात को नहीं देखा। समय गुजरता गया और शाहज़ादा अपनी पत्नी के गोरे होने का इन्तजार करता रहा।

महल में एक स्त्री थी जो वहाँ अन्दर रहने वालों को पढ़ना लिखना सिखाती थी। एक दिन जब वह सीढ़ियाँ चढ़ रही थी तो उसको कमरे में पड़ी कोई चमकीली चीज़ दिखायी दी।

उसने उसे उठा लिया तो देखा कि वह तो चिड़िया का एक पंख था। उस पर कुछ धब्बे थे जो हीरों की तरह चमक रहे थे। वह उस पंख को अपने कमरे में ले गयी और उसे दीवार की एक झिरी में अटका दिया।

एक दिन वह महल में काम करने गयी तो वह पंख उस झिरी में से नीचे फर्श पर गिर पड़ा। जैसे ही वह गिरा तो लो वह तो एक ऑखों को चौंधियाती हुई सुन्दर लड़की में बदल गया।

उसने घर की सफाई की खाना बनाया घर का सब सामान सहेज कर रखा और फिर उसके बाद वह फिर से पंख बन गयी और दीवार में जा कर अपनी जगह लग गयी।

जब वह बुढ़िया घर आयी तो वह तो अपना घर देख कर आश्चर्यचकित रह गयी। उसने घर में चारों तरफ देखा पर उसे इस पहेली का कोई हल या अता पता नहीं मिला।

अगले दिन वह फिर महल गयी तो वह पंख फिर से लड़की बन गया फिर से उसने घर का सारा काम किया और फिर से पंख बन कर दीवार में अपनी जगह जा कर लग गयी। बुढ़िया जब घर वापस आयी तो वह फिर से आश्चर्यचकित थी।

तीसरे दिन जब वह बुढ़िया फिर से महल जाने लगी तो उसने सोचा कि आज वह इस बात का भेद जान कर ही रहेगी। सो बजाय अपने घर को ताला लगा कर महल जाने के वह एक जगह छिप गयी जहॉ से वह अपना घर देख सकती थी।

जल्दी ही एक बहुत सुन्दर लड़की उसको अपने कमरे में दिखायी दी। उसने देखा कि उस लड़की ने सब सामान अपनी जगह पर रखा और फिर खाना बनाने चली गयी। जब सब तैयार हो गया तब वह बुढ़िया दौड़ी और उस लड़की को पकड़ लिया और उससे पूछताछ की।

लड़की ने उसे अपनी सारी कहानी बतायी और बताया कि कैसे उस काली लड़की ने उसे दो बार मार डालने की कोशिश की और कैसे वह एक पंख के रूप में यहाँ आयी।

बुढ़िया बोली — "दुखी मत हो बेटी। मैं बहुत जल्दी ही सब मामला ठीक कर दूँगी।"

वह तुरन्त ही शाहज़ादे के पास चल दी और उसे उसी शाम अपने घर खाना खाने के लिये आने के लिये कहा। खाना खाने के बाद कौफी लायी गयी। यह कौफी बुढ़िया ने लड़की से लाने के लिये कहा था।

जब लड़की ने कौफी के प्याले ला कर रखे शाहज़ादे ने उसके चेहरे की तरफ देखा तो वह तो उसे देखते ही बेहोश हो गया। जब उसे होश में ले आया गया तो उसने पूछा "यह लड़की कौन है?"

"मेरी नौकरानी।"

"आपने इसे कब रखा? क्या आप इसे मुझे नहीं बेचेंगी?"

बुढ़िया मुस्कुराती हुई बोली — "उस चीज़ का आपको क्या बेचना जो है ही आपकी।"

कह कर उसने परी का हाथ पकड़ा और उसे शाहज़ादे की तरफ ले गयी और उसे डॉटते हुए कहा कि वह आगे से अपनी सन्तरे की परी की ठीक से देखभाल करे।

तब शाहज़ादा अपनी सन्तरे की परी को अपनी जीत की तरह से अपने महल ले गया। काली लड़की को उसने मौत की सजा सुना दी और अपनी नयी शादी की दावत चालीस दिन और चालीस रातों तक मनायी।

इस खुशी के अन्त के बाद हम भी अपने दीवान पर लेटने जाते हैं।

11 गुलाबी सुन्दरता[32]

बहुत पुराने समय में जब ऊँट घोड़ों का व्यापारी था चूहा नाई था कोयल दरजी थी कछुआ बेकर था और गधा तभी भी नौकर था। एक बार एक चक्की वाला था जिसके पास एक काली बिल्ली थी।

अब इस चक्की वाले के अलावा एक बादशाह भी था जिसके तीन बेटियॉ थीं – एक चालीस साल की दूसरी तीस साल की और तीसरी बीस साल की।

एक दिन सबसे बड़ी बेटी अपनी सबसे छोटी बहिन के पास गयी और उससे कहा कि वह पिता को कुछ ऐसी चिट्ठी लिख दे – "मेरी एक बहिन चालीस साल की है दूसरी बहिन तीस साल की है। उन दोनों की शादी अभी तक नहीं हुई है। मैं आपको बता देना चाहती हूँ कि मैं इतने साल तक शादी के लिये इन्तजार नहीं करूँगी।"

इस चिट्ठी को पढ़ कर बादशाह ने अपनी बेटियों को बुलाया और उनसे कहा — " देखो तुम तीनों के लिये ये धनुष और बाण यहॉ रखे हुए हैं। इन्हें ले जाओ और इनसे निशाना लगाओ। जिसका बाण जहॉ गिरेगा उस लड़की की शादी वहीं हो जायेगी।"

[32] The Rose Beauty. A folktale from Turkey. Taken from : https://www.sacred-texts.com/asia/ftft/ftft07.htm

पिता से धनुष बाण ले कर वे सब बाहर गयीं और निशाना लगा कर उन्होंने अपने अपने बाण छोड़ दिये।

सबसे बड़ी बेटी ने सबसे पहले अपना बाण छोड़ा तो उसका बाण वज़ीर के बेटे के महल में गिरा तो उसकी शादी वज़ीर के बेटे से हो गयी। दूसरी बेटी का बाण शेख़ उल इस्लाम के महल में गिरा तो दूसरी बेटी की शादी उससे हो गयी।

तीसरी बेटी का बाण एक लकड़हारे की झोंपड़ी में जा कर गिरा तो हर आदमी बोला इस बाण को नहीं गिना जाना चाहिये। छोटी शाहज़ादी को एक मौका और दिया जाना चाहिये।

लोगों के कहने पर ऐसा ही किया गया पर वह दोबारा भी उसी जगह पर जा कर पड़ा। तीसरी कोशिश भी कोई इससे अच्छा परिणाम ले कर नहीं आयी।

बादशाह अपनी इस बेटी से इसकी चिट्ठी की वजह से पहले से ही बहुत नाराज था अब बोला — "यह तुम्हारे साथ अच्छा ही हुआ। ऐसा ही होना चाहिये था। तुम्हारी बहिनों ने धैर्यपूर्वक इन्तजार किया इसलिये उन्हें अपने इस इन्तजार का ठीक फल मिला।

तुमने जो घर में सबसे छोटी हो मुझे वह चिट्ठी लिखने का साहस किया उसके लिये तुम्हें ठीक सजा मिली है। तुम अपने लकड़हारे से शादी करो और उसके साथ जाओ।" सो उस बेचारी की शादी उस लकड़हारे से हो गयी और वह उसके साथ चली गयी।

समय आने पर सबसे छोटी शाहज़ादी की एक बेटी हुई। लकड़हारे की पत्नी बहुत दुखी हुई कि उसकी बच्ची को इतना गरीब घर मिला। जब वह यह सोच सोच कर रो रही थी कि तभी वहॉ तीन परियॉ उस झोंपड़ी की दीवार से निकल आयीं जहॉ वह बच्ची लेटी हुई थी।

उन तीनों में से एक ने अपना हाथ सोती हुई बच्ची की ओर बढ़ाया और बोली — "मैं इस लड़की को आज यह आशीर्वाद देती हूॅ कि तुम्हारी यह बेटी एक गुलाब की तरह सुन्दर होगी। इसका नाम "गुलसुन्दरी" होगा। और इसकी ऑखों से ऑसुओं की बजाय मोती गिरेंगे।"

दूसरी परी ने भी उसके सिर पर हाथ रखा और बोली — "मैं इस बच्ची को यह आशार्वाद देती हूॅ कि जब यह मुस्कुरायेगी तो गुलाब फूलेंगे।"

तीसरी परी बोली — "मैं इसे यह आशीर्वाद देती हूॅ कि जहॉ जहॉ इसके कदम पड़ेंगे वहॉ वहॉ शैल घास उग आयेगी।"

इतना कह कर तीनों परयॉ फिर उसी दीवार में जा कर गायब हो गयीं। इस बात को सालों बीत गये। बच्ची भी बड़ी होती गयी और अब वह बारह साल की हो गयी थी। जो भी उसको एक बार देख लेता तो वह उससे प्यार करने लग जाता।

जब वह मुस्कुराती तो गुलाब खिल जाते जब वह रोती तो उसकी ऑखों से ऑसुओं की बजाय मोती ही गिरते। और जब वह

चलती तो जहॉ जहॉ वह अपने कदम रखती घास उग आती। उसकी सुन्दरता के चर्चे पास और दूर फैल गये।

अब एक जगह एक शाहज़ादा रहता था उसकी मॉ ने भी गुलसुन्दरी की सुन्दरता के चर्चे सुने तो उसने सोच लिया कि वही उसके बेटे की बहू बनेगी।

उसने अपने बेटे को बुलाया और उससे कहा कि फलॉ फलॉ शहर में एक लड़की है जिसके मुस्कुराने से गुलाब खिल जाते हैं रोने पर उसकी ऑखों से मोती गिरते हैं और जब वह चलती है तो उसके कदमों की जगह घास उग आती है। उसे जा कर उसे देखना चाहिये।

परियों ने पहले ही शाहज़ादे को उसके सपने में उस लड़की को दिखा रखा था और इस तरह उसके दिल में उस लड़की के लिये प्यार को लौ लगा रखी थी। पर अपनी मॉ के सामने उसे शरम आ रही थी सो उसने उससे मिलने के लिये मना कर दिया।

पर सुलताना ने उससे जिद की तो शाहज़ादे के कहने पर एक स्त्री को उसके साथ भेजने का इन्तजाम करने के लिये कहा।

दोनों लड़की की झोंपड़ी में अन्दर घुसे और अपने आने का कारण बताया और अल्लाह के नाम पर लड़की का हाथ शाहज़ादे के लिये मॉगा। यह सुन कर शाहज़ादी बहुत खुश हुई। उसने हॉ कर दी और अपनी बेटी की शादी की तैयारियॉ शुरू कर दीं।

अब यह स्त्री जो शाहज़ादे के साथ गयी थी उसकी अपनी भी एक बेटी थी जिसकी शक्ल गुलसुन्दरी से मिलती जुलती थी।

यह स्त्री इस बात इस बात से बहुत नाखुश थी कि शाहज़ादे की शादी बजाय उसकी अपनी बेटी के इतने गरीब घर की लड़की से हो रही थी। यह सोच कर उसने शाहज़ादे और उसकी मॉ को धोखा देने की एक योजना बनायी। उसने शाहज़ादे की शादी अपनी बेटी से करने की सोची।

शादी के दिन उसने लकड़हारे की बेटी को नमकीन खाना खिला दिया। फिर उसने पानी का एक जग लिया और एक बहुत बड़ी टोकरी ली और दोनों को दुलहिन की कोच में रख दिया जिसमें उसकी अपनी बेटी और गुलसुन्दरी जाने वाली थीं।

रास्ते में गुलसुन्दरी को प्यास लगी तो उसने पानी मॉगा। लड़की ने कहा — "मैं तुम्हें तब तक कोई पानी नहीं दूँगी जब तक तुम मुझे अपनी एक ऑख नहीं दोगी।"

गुलसुन्दरी को बहुत प्यास लगी थी सो उसने उसे अपनी एक ऑख निकाल कर दे दी लड़की ने उसे उसकी ऑख के बदले में पानी पिला दिया।

वे लोग और आगे बढ़े तो बेचारी गुलसुन्दरी को फिर से प्यास लगने लगी तो उसने उससे दोबारा पानी मॉगा। लड़की ने फिर वही जवाब दिया कि वह उसे पानी तब ही देगी जब वह उसको अपनी दूसरी ऑख उसे देगी।

गुलसुन्दरी को इतनी प्यास लगी थी कि उसने दोबारा पानी पीने के लिये अपनी दूसरी ऑख भी उसे दे दी। जैसे ही लड़की के पास गुलसुन्दरी की दोनों ऑखें आयीं उसने गुलसुन्दरी को बॉध दिया और टोकरी में रख कर एक पहाड़ के ऊपर ले गयी।

स्त्री अब अपनी बेटी को ले कर महल पहुॅची और उसे शानदार शाही जोड़े में सजा कर उसे शहज़ादे के सामने ले कर गयी कि लो यह आपकी दुलहिन है।

दोनों की शादी बड़ी धूमधाम से मनायी गयी पर जब शाहज़ादे ने अपनी दुलहिन का घूॅघट उठाया तो उसने देखा कि यह वह लड़की नहीं थी जो उसने अपने सपने में देखी थी। पर क्योंकि उसकी शक्ल उसकी अपनी सपने वाली दुलहिन की शक्ल से मिलती जुलती थी सो वह कुछ शान्त सा हो गया।

शाहज़ादे को मालूम था कि उसकी पत्नी हॅसती थी तो गुलाब खिलते थे रोती थी तो मोती गिरते थे और उसके हर कदम की जगह घास उगती थी। पर इस लड़की के हॅसने पर न तो गुलाब खिलते थे रोने पर न मोती गिरते थे और न ही चलने पर घास उगती थी।

उसे पता चल गया कि उसे धोखा दिया गया है पर उसने भी सोच लिया कि वह इस बात का भेद जान कर ही रहेगा। उसने यह बात किसी से भी नहीं की।

उधर बेचारी गुलसुन्दरी पहाड़ पर पड़ी पड़ी रोती रही। उसकी अन्धी ऑखों से उसके गालों पर मोती गिर गिर कर लुढ़कते रहे। वे सब मोती गिर गिर कर टोकरी में इकट्ठे होते रहे यहॉ तक कि अब वे टोकरी के बाहर भी निकलने वाले हो रहे थे।

एक सड़क साफ करने वाला उधर से गुजर रहा था कि उसने लड़की की रोने की आवाज सुनी तो डर के मारे चिल्लाया — "कौन है वहॉ कोई आत्मा या फिर कोई परी?"

लड़की बोली — "न तो कोई आत्मा न ही कोई परी बल्कि केवल एक इन्सान तुम्हारी तरह।"

सड़क साफ करने वाले ने एक बार फिर पक्का किया और फिर टोकरी की ओर चल दिया। उसने जा कर टोकरी खोली तो देखा कि उसमें तो एक अन्धी लड़की चारों तरफ से मोतियों से घिरी बैठी हुई है।

वह उसे अपने घर ले गया अपनी एक टूटी फूटी झोंपड़ी में। वह दुनियॉ में अकेला था सो उसने उसे अपनी बेटी बना कर रख लिया।

पर वह लड़की अपनी ऑखों के लिये बराबर रोती ही रहती सो उसके पास बहुत सारे मोती इकट्ठे हो गये थे। सफाई करने वाला उन्हें इकट्ठा कर लेता था और उन्हें जा कर बेच आता था।

समय गुजरता रहा। महल में खूब आनन्द मनता रहा और सफाई करने वाले की झोंपड़ी में दर्द और दुख।

एक दिन गुलसुन्दरी घर के दरवाजे पर बैठी हुई थी तो उसे कुछ अच्छे पल याद आ गये तो वह उन्हें याद कर के मुस्कुरा उठी। इससे उसके सामने एक बहुत सुन्दर गुलाब खिल गया।

लड़की ने सफाई करने वाले से कहा — "पिता जी। मेरे सामने एक गुलाब खिला है। आप इसे शाहज़ादे के पास ले जाइये और उनसे कहिये कि आपके पास एक बहुत ही अनमोल किस्म का गुलाब है और आप उसे बेचना चाहते हैं। जब वह आपसे उसकी कीमत पूछें तो आप उनसे कहियेगा कि उसे पैसों से नहीं खरीदा जा सकता। उसकी कीमत आदमी की एक ऑख है।"

आदमी उस गुलाब को ले कर महल चला गया और चिल्लाना शुरू कर दिया — "एक गुलाब है बेचने के लिये। एक गुलाब है बेचने के लिये। यह दुनियॉ का अपने किस्म का अकेला गुलाब है।"

अब वह गुलाबों का मौसम तो नहीं था तो महल की स्त्री ने जब यह आवाज सुनी तो वह अपनी बेटी को वह गुलाब देने के लिये गुलाब खरीदने की इच्छा से भागी भागी दरवाजे पर गयी। उसने सोचा कि जब शाहज़ादा उसकी बेटी के पास यह गुलाब देखेगा तो उसका शक दूर हो जायेगा।

उस गरीब आदमी को उसने एक तरफ बुलाया और उससे गुलाब की कीमत पूछी। आदमी बोला — "इसे पैसे से नहीं खरीदा

जा सकता पर अगर आपके पास आदमी की एक ऑख हो तो में इसे आपको दे सकता हूँ।

यह सुन कर वह तुरन्त ही गुलसुन्दरी की एक ऑख निकाल लायी और उसे दे कर वह फूल खरीद लिया। फूल ले कर वह तुरन्त ही अपने बेटी के पास गयी और जा कर उसे उसके बालों में लगा दिया।

जब शाहज़ादे ने वह फूल देखा तो उसे लगा कि शायद यह वही लड़की होगी जिसे परियों ने उसे सपने में दिखाया था हालॉकि उसे अभी भी इस बात का पूरा यकीन नहीं था। उसने अपने आपको बस यह सोच कर शान्त कर लिया कि जल्दी ही वह राज़ को खोल कर रहेगा।

सफाई करने वाले ने ऑख ली और ले जा कर गुलसुन्दरी को दे दी। अल्लाह का धन्यवाद करते हुए उसने वह ऑख अपनी ऑख में लगा ली। अब वह पहले की तरह से देख सकती थी। वह बहुत खुश हुई।

इस नयी खुशी में वह इतना मुस्कुरायी कि इससे उसने कई फूल पैदा किये। उसने एक और फूल ले कर अपने पिता को फिर से महल भेजा और अपनी दूसरी ऑख भी लाने के लिये तो कहा।

जब वह महल पहुँचा तो उस स्त्री ने उसे देखा तो वह बहुत खुश हुई कि अब अल्लाह उसकी बेटी की तरफ है। अब तो शाहज़ादा भी मेरी बेटी को पसन्द करने लगा है।

मैं इस गुलाब को खरीद लेती हूँ उसके बाद तो वह उसे और बहुत ज़्यादा प्यार करने लगेगा और हो सकता है कि फिर वह लकड़हारे की बेटी को भूल भी जाये। सो उसने गुलाब वाले को बुलाया और उससे वह फूल माँगा।

तो उसने उससे कहा यह फूल भी मैं अपनी पुरानी शर्त पर ही दूँगा। वह तुरन्त ही गुलसुन्दरी की दूसरी आँख ले आयी और उस गुलाब को खरीद लिया। गुलाब को ले कर वह तुरन्त ही अपनी बेटी के पास चली गयी और वह आदमी अपना इनाम ले कर घर चला गया।

गुलसुन्दरी के पास अब उसकी दोनों आँखें थीं। अब वह और भी सुन्दर हो गयी थी। अब जब वह मुस्कुरा मुस्कुरा कर चलती तो गुलाब खिलते जाते और पहाड़ की बंजर जमीन घास से हरी भरी होती जाती। अब वह जगह तो ईडन का बाग बन गया था।

एक दिन गुलसुन्दरी महल के आसपास घूम रही थी कि महल की स्त्री ने उसे देखा तो वह बहुत दुखी हुई। वह सोचने लगी कि अगर सच का पता चल गया तो मेरी बेटी का क्या होगा।

उसने सड़क साफ करने वाले के घर का पता मालूम किया जल्दी जल्दी उसके घर गयी और उसे धमकाया कि उसने अपने घर में एक जादूगरनी पाल रखी है। यह सुन कर वह बहुत डर गया उसने स्त्री से पूछा कि अब वह क्या करे।

स्त्री ने सलाह दी कि वह उससे उसका "तलिस्मान" माँगे और उसे ला कर दे तो वह सब मामला ठीक कर देगी। सो जैसे ही उसकी बेटी घर लौटी तो उसके पिता ने उससे पूछा कि एक इन्सान होते हुए वह इतना जादू कैसे कर सकती थी।

गुलसुन्दरी ने इस बात को बताने में अपना कोई नुकसान नहीं देखा तो उसने उसे बताया कि उसके जन्म के समय परियों ने उसे एक तलिस्मान दिया था जिससे जब तक वह उसके पास था तब तक वह यह सब कर सकती थी – वह मोती गिरा सकती थी वह गुला खिला सकती थी और वह घास उगा सकती थी।

पिता ने पूछा — "तुम्हारा तलिस्मान क्या है?"

गुलसुन्दरी बोली — "पहाड़ पर बारहसिंगे का एक बच्चा रहता है। जब वह मरेगा तब मैं भी मर जाऊँगी।"

अगले दिन महल वाली स्त्री छिप कर सफाई करने वाले के घर आयी और उससे तलिस्मान के बारे में जाना। अब यह तो उसके लिये बहुत ही कीमती जानकारी थी।

तुरन्त ही वह खुशी खुशी घर लौटी और यह जानकारी अपनी बेटी को दी और उससे कहा कि वह जल्दी से जल्दी शाहज़ादे से उस बारहसिंगे के बच्चे को लाने के लिये कहे।

लड़की ने तुरन्त ही शाहज़ादे से अपनी बीमारी का बहाना किया और उससे पहाड़ पर रह रहे बारहसिंगे के बच्चे को पकड़ कर लाने के लिये कहा ताकि वह उसका दिल खा कर जल्दी ठीक हो सके।

शाहज़ादे ने तुरन्त ही अपने शिकारियों को उस बच्चे को लाने के लिये भेज दिया। वे उसको पकड़ लाये उसे काट दिया गया और उसका दिल निकाल कर लड़की को खिला दिया गया।

जैसे ही जानवर मरा वैसे ही गुलसुन्दरी भी मर गयी। सफाई करने वाले ने उसे दफ़न कर दिया। वह उसके लिये सचमुच बहुत दुखी हुआ।

बारहसिंगे के दिल में एक लाल रंग का मूँगा था जो सबकी ऑखों से बच गया तो जब शाहज़ादे की पत्नी उस दिल को खा रही थी तो वह नीचे गिर गया और सीढ़ियों के नीचे की तरफ लुढ़क गया।

एक साल के बाद शाहज़ादे के एक बेटी पैदा हुई जो मोतियों से रोती थी मुस्कुराती थी तो गुलाब खिलते थे और उसके पैरों के नीचे घास उगती थी। जब शाहज़ादे ने यह देखा तो अब उसे विश्वास हो गया कि उसकी पत्नी उसकी सही पत्नी थी।

लेकिन एक रात गुलसुन्दरी उसके सपने में आयी और बोली — "ओ मेरे शाहज़ादे। ओ मेरे दुलहे। मेरी आत्मा महल की सीढ़ियों के नीचे पड़ी है। तुम्हारी बेटी मेरी बेटी है, मेरा तलिस्मान, मेरा छोटा मूँगा।"

शाहज़ादा यह सपना देख कर जाग गया। वह महल की सीढ़ियों की तरफ भागा और वहॉ से मूँगा ले आया। वह उसे अपने कमरे में ले आया और ला कर उसे अपनी मेज पर रख दिया।

जब उसकी छोटी सी बेटी उसके पास आयी तो उसने वह मूँगा उठा लिया। जैसे ही उसने उसे छुआ तो दोनों ही गायब हो गये। तीनों परियों ने बच्ची को ले जा कर उसकी माँ को सौंप दिया था। जैसे ही मूँगा माँ के मुँह में गया तो वह ज़िन्दा हो गयी।

शाहज़ादा यह सब देख कर बहुत दुखी था। अपनी इस दुखी हालत में वह कब्रिस्तान गया तो लो वहाँ तो उसके सपनों की गुलसुन्दरी उसके बच्चे को गोद में लिये थी।

उन्होंने एक दूसरे को प्यार से गले लगाया। माँ और बेटी दोनों की आँखों से आँसू बहने लगे जो मोती बनते जा रहे थे। फिर वे दोनों मुस्कुराये तो चारों तरफ गुलाब महक गये। जब वे वहाँ से चले तो उनके पैरों के नीचे घास उगती गयी।

महल की स्त्री और उसकी बेटी को कड़ी सजा दी गयी। सड़क साफ करने वाले को बुलाया गया और उसको गुलसुन्दरी के साथ रहने के लिये बुला लिया गया। अपने मिलने की खुशी में एक बहुत बड़ी दावत दी गयी और फिर सब खुश खुश रहे।

12 मछली परी[33]

एक बार की बात है कि एक मछियारा था जिसका नाम मुहम्मद था जो अपनी रोजी रोटी मछलियॉ पकड़ कर और उन्हें बेच कर ही कमाता था।

एक दिन वह बहुत बीमार पड़ गया और उसकी ज़िन्दगी की कोई आशा न रही तो उसने अपनी पत्नी से विनती की कि उसको उनके बेटे को यह बात कभी नहीं बतानी चाहिये कि उसका पिता मछली पकड़ कर और उन्हें बेच कर अपनी रोजी रोटी कमाता था।

उसके बाद मछियारा मर गया। समय गुजरता गया। मछियारे का बेटा अब इतना बड़ा हो गया था कि वह अब यह सोचने लायक हो गया था कि उसे अब रोटी कमाने के लिये कौन सा काम करना चाहिये।

उसने कई काम करने की कोशिश की पर वह किसी में सफल नहीं हो सका। फिर जल्दी ही उसकी मॉ भी मर गयी। अब लड़का इस दुनियॉ मे अकेला और छोड़ा हुआ सा रह गया। न उसके पास खाना था और न ही कोई पैसा था।

एक दिन वह अपने घर में ऊपर चला गया लकड़ी के कमरे में ताकि अगर उसे वहॉ कोई बेचने लायक चीज़ मिल जाये तो वह उसे बेच ले।

[33] The Fish Peri. Taken from "Fourty-four Turkish Fairy Tales".

इस ढूँढने के बीच में उसे अपने पिता का म्छली पकड़ने का जाल मिल गया। जैसे ही उसने उसे दखा तो वह जान गया कि उसका पिता मछलियॉ पकड़ा करता था।

सो उसने वह जाल उठाया और उसे समुद्र ले गया। वहॉ उसे अपनी पहली कोशिश में थोड़ी सफलता मिली। उसने वहॉ दो मछलियॉ पकड़ीं जिनमें से एक को उसने बेच दिया जिसके पैसे से उसने रोटी और कोयला खरीद लिया।

बची हुई मछली उसने उन कोयलों पर पका ली जो उसने खरीदे थे और खा ली। फिर उसने सोचा कि वह मछियारे का काम ही अपना लेगा।

अब एक दिन क्या हुआ कि उसने एक मछली पकड़ी जो इतनी सुन्दर थी कि उसे उसे बेचने में या खाने में बहुत दर्द हुआ सो वह उसे घर ले गया। वहॉ उसने एक बड़ा सा गड्ढा खोद कर उसमें पानी भर कर उसे उसमें रख दिया। उस दिन वह बिना खाना खाये ही सो गया।

अगले दिन वह उठा तो बहुत भूखा था सो वह तुरन्त ही और मछली पकड़ने चला गया। जब वह शाम को मछली पकड़ कर लौट कर आया तो उसे यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ कि उसकी अनुपस्थिति में उसका सारा घर साफ हो चुका है और उसकी सब चीज़ें अपनी अपनी जगह रखी हुई थीं।

उसने सोचा कि यह सब काम उसके पड़ोसी ने किया होगा तो वह मन ही मन उसकी मेहरबानी के लिये बड़ा कृतज्ञ हुआ उसके लिये प्रार्थना की और अल्लाह से भी उनके ऊपर अपना आशीर्वाद बरसाने के लिये कहा।

अगली सुबह वह वैसे ही उठा जैसे वह रोज उठता था। अपने गड्ढे की मछली को देख कर बहुत खुश हुआ और फिर अपने काम पर चला गया।

दो चार दिन तक ऐसा ही होता रहा कि जब वह सुबह बाहर काम के लिये चला जाता और शाम को घर आता तो अपना घर साफ सुथरा पाता। कुछ दिनों तक उसे इस खेल में आनन्द आता रहा। वह अपनी मछली को भी देख देख कर खुश होता रहा।

एक दिन वह एक कौफी हाउस में जा कर बैठ गया और सोचने लगा कि उसके घर का यह काम कौन करता है। उसका एक साथी वहीं बैठा हुआ था जिसने उसे इस दशा में देख लिया।

वह उसके पास गया औए उससे पूछा कि वह क्या सोच रहा है तो उसने उसे सारी कहानी बता दी तो उसने उससे पूछा कि वह अपनी चाभी कहॉ रखता है और उसकी अनुपस्थिति में वहॉ कौन रहता है।

उसने कहा — "चाभी तो जब मैं सुबह काम पर जाता हूॅ तब अपने साथ ले जाता हूॅ और मेरे जाने के बाद घर में ज़िन्दा प्राणियों में केवल मछली ही वहॉ रहती है।"

उसके साथी ने तब उससे कहा कि वह अगले दिन घर पर ही रहे और छिप कर अपने घर पर नजर रखे। सो उस लड़के ने ऐसा ही किया। वह अपने काम पर बाहर नहीं गया और घर में छिप कर अपने घर पर नजर रखता रहा।

उसने जाने के लिये अपने घर का दरवाजा खोला और बजाय बाहर जाने के अन्दर से ही बन्द कर दिया और छिप गया। जल्दी ही उसने देखा कि मछली पानी में से बाहर कूदी इधर उधर हिली और लो वह तो एक सुन्दर लड़की बन गयी।

वह लड़की तो काम करने चली गयी और इधर लड़के ने उसकी मछली वाली खाल उठा ली जो उसने अभी अभी उतारी थी और उसे आग में फेंक दिया।

लड़की बोली — "तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिये था पर अब तो ऐसा हो गया है तो अब कुछ नहीं किया जा सकता।"

अब वह लड़की मछली बनने से आजाद हो गयी थी तो वह लड़के से शादी करने के लिये तैयार हो गयी। शादी की तैयारियॉ होने लगीं। जिसने भी लड़की को देखा वही उसकी सुन्दरता देख कर मोहित हो गया और कहा कि यह तो किसी बादशाह की रानी होने के लायक है।

यह खबर बादशाह के पास पहुॅची तो उसने उस लड़की को अपने पास बुलाया। जब उसने लड़की को देखा तो वह उससे प्रेम करने लगा और उससे शादी करने का इरादा किया।

उसने लड़के को बुलाया और उससे कहा कि अगर वह उसके तीन इम्तिहानों में पास हो जायेगा तभी वह उस लड़की से शादी कर सकेगा। अगर वह ऐसा नहीं कर पाया तो वह लड़की उसकी हो जायेगी।

उसकी पहली शर्त यह थी कि अगर वह उसके लिये चालीस दिनों के अन्दर अन्दर समुद्र के बीच में सोने और हीरे का एक महल बना देगा तो वह उससे यह लड़की नहीं लेगा और अगर वह नहीं बना सका तो वह उसे ले लेगा। लड़का बेचारा बड़े दुखी मन से घर लौटा और रोने लगा।

लड़की ने पूछा — "तुम क्यों रोते हो?"

लड़के ने उसे वह सब बता दिया जो बादशाह ने उससे कहा था पर वह हॅस कर बोली — "तुम चिन्ता न करो हम सब सॅभाल लेंगे। तुम उसी जगह पर जाओ जहॉ तुमने मुझे पकड़ा था और वहॉ जा कर एक पत्थर फेंको। वहॉ एक अरब प्रगट होगा और तुमसे पूछेगा कि तुम उससे क्या चाहते हो।

तुम उससे कहना कि मैम तुमको अपना सलाम भेजती हैं और एक गद्दी मॅगवाती हैं। वह तुमको एक गद्दी देगा तो वह तुम उससे ले लेना और उसे ले कर समुद्र में उस जगह फेंक देना जहॉ बादशाह अपना सोने और हीरे का महल बनवाना चाहते हों। उसके बाद घर आ जाना।"

लड़के ने उस लड़की ने जो कुछ भी कहा था वह सब मान लिया और अगले दिन जब उन्होंने उस जगह की तरफ देखा जहॉ वह गद्दी फेंकी गयी थी तो वहॉ तो सोने हीरों का एक ऐसा महल खड़ा था जो राजा ने जैसा महल चाहा था उससे भी अच्छा था। वे तुरन्त ही बादशाह को इस बात की खबर देने गये।

बादशाह समझ रहा था कि उस लड़के से ऐसा हो नहीं पायेगा तो वह लड़की उससे ले लेगा। पर अब तो यह काम हो गया था सो अब उसे उससे लड़की लेने की दूसरी शर्त रखनी थी।

उसने लड़के को फिर से बुलाया और उससे एक क्रिस्टल का पुल बनाने को कहा। लड़का दुखी मन से घर पहुॅचा और फिर रोने लगा तो लड़की ने उससे फिर पूछा कि वह क्यों रो रहा था।

लड़के ने फिर उसे सब बताया कि बादशाह ने उससे क्या कहा था। लड़की फिर हॅस कर बोली — "तुम फिर से उसी अरब के पास जाओ और मेरा सलाम कह कर उससे एक गोल तकिया मॉगना। उसे समुद्र में महल के पास फेंक देना। क्रिस्टल का पुल बन जायेगा।"

लड़के ने वैसा ही किया जैसा उस लड़की ने उससे करने के लिये कहा। कुछ ही पल में जब उसने अपने चारों तरफ देखा तो महल से लगा हुआ एक क्रिस्टल का पुल बन गया था। वह वहीं से बादशाह के पास उसे यह बताने के लिये चला गया कि उसके कहे अनुसार क्रिस्टल का पुल बनाया जा चुका है।

अब तीसरी शर्त पूरी करने की बारी थी। बादशाह ने कहा कि उसे एक ऐसी दावत का इन्तजाम करना चाहिये जिसमें उसके देश का हर आदमी खा ले और फिर भी कुछ बच रहे।

लड़का फिर दुखी हो कर घर पहुँचा और रोने लगा। लड़की ने पूछा "क्यों रोते हो?" लड़के ने बादशाह की कही हुई बात दोहरा दी।

यह नयी शर्त सुन कर उसने कहा — "तुम चिन्ता न करो। तुम फिर से उसी अरब के पास जाओ और उसे मेरा सलाम दे कर उससे कौफी पीसने की चक्की माँगना। वह तुम्हें वह चक्की दे देगा पर ध्यान रखना कि उसे रास्ते में ही मत चलाने लग जाना।"

लड़के ने बिना किसी कठिनाई के अरब से कौफी पीसने की चक्की ली और घर चल दिया। पर रास्ते में उससे उसके बिना जाने ही वह चक्की घूम गयी। जैसे ही वह घूमी वैसे ही उसमें से खाने की सात आठ थालियाँ बाहर निकल कर गिर पड़ीं। उनको उठा कर वह फिर से घर की तरफ चल पड़ा।

जिस दिन यह दावत होनी थी बादशाह के बुलाने पर देश का हर आदमी लड़के के घर खाना खाने आया। हर मेहमान ने पेट भर कर पूरा पूरा खाना खाया फिर भी आखीर में बहुत सारा खाना बच रहा।

बादशाह को अभी भी तसल्ली नहीं थी। लड़की उसके हाथ से जा रही थी क्योंकि लड़के ने उसकी तीनों शर्तें पूरी कर दी थीं।

सो उसने अब एक और शर्त रख दी कि वह एक अंडे में से एक खच्चर पैदा करे। लड़के ने अपने इस नये काम के बारे में लड़की को बताया तो लड़की ने उससे अरब से तीन अंडे लाने के लिये कहा। उसने कहा कि वह वे अंडे रास्ते में बिना तोड़े घर ले कर आये।

अब उसने अरब से तीन अंडे तो ले लिये पर रास्ते में आते समय उससे एक अंडा नीचे गिर गया और टूट गया। उसमें से एक बहुत बड़ा गधा निकल पड़ा। वह उसे पकड़ने दौड़ा। उसके आगे पीछे भागने में वह गधा समुद्र में कूद पड़ा और गायब हो गया।

लड़का बचे हुए दो अंडों के साथ सुरक्षित घर लौट आया। पर लड़की ने पूछा — "तीसरा अंडा कहॉ है।"

तब उसने बताया कि तीसरा अंडा तो उससे गिर गया और उसमें से एक गधा निकल कर भाग गया। लड़की ने कहा — "खैर अब जो हो गया सो हो गया पर तुमको भविष्य में ज़्यादा सावधान रहना चाहिये।"

लड़का बचे हुए अंडों को ले कर बादशाह के पास पहुॅचा और उससे एक बैन्च पर खड़े होने की इजाज़त मॉगी। बादशाह ने उसे यह इजाज़त दे दी।

सो वह एक बैन्च पर खड़ा हो गया और उसने एक अंडा दूर फेंक दिया। उसमें से एक गधा निकला और बादशाह के ऊपर चढ़ गया। बादशाह ने वहॉ से भागना चाहा पर भाग नहीं सका। लड़के

ने बादशाह को खतरे से बचाया और वह गधा भी भाग कर समुद्र में कूद गया।

बादशाह यह देख कर बहुत निराश हो गया। वह अब उसके लिये कोई और कठिन काम नहीं ढूँढ सका। फिर भी उसने उसके लिये एक और काम ढूँढ ही लिया। उसने कहा कि उसे एक दिन का बच्चा चाहिये जो चल भी सके और बोल भी सके।

अभी भी लड़की बहुत निडर थी। उसने लड़के से फिर कहा कि वह फिर से उसी अरब के पास जाये और उसको सलाम दे कर उससे कहे कि मैम को उनका भतीजा देखना है।

ऐसा ही किया गया लड़का वहाँ गया और लड़की का सन्देश अरब को दिया तो अरब बोला — "वह तो अभी एक घंटे का ही है। अभी तो उसकी माँ उसे छोड़ना नहीं चाहेगी। फिर भी आप कुछ पल इन्तजार करें मैं कोशिश कर के देखता हूँ।"

कह कर अरब चला गया और जल्दी ही एक नये जन्मे बच्चे को ले कर प्रगट हुआ। जैसे ही उसने मछियारे को देखा तो वह उसके पास भागा और बोला — "हम अपनी बुआ के पास जा रहे हैं हैं न?"

लड़का उसे अपने घर ले गया तो बच्चा चिल्लाया — "बुआ बुआ।" और जा कर उसके गले लग गया। इसके बाद लड़का उसे बादशाह के पास ले गया।

जब बच्चा बादशाह के पास लाया गया तो वह बादशाह के पास गया और उसके चेहरे पर एक चॉटा मारा और बोला — "चालीस दिन में सोने और हीरों का एक महल कैसे बनाया जा सकता है? उसी तरह चालीस दिन में किस्टल का पुल कैसे खड़ा किया जा सकता है?

उसी तरह एक आदमी देश भर के लोगों को अकेला खाना कैसे खिला सकता है? क्या एक अंडे से एक गधा पैदा किया जा सकता है?"

हर वाक्य को कहने के बाद वह बादशाह के गाल पर एक चॉटा मारता यहॉ तक कि बादशाह को लड़के से चिल्ला कर कहना पड़ा — "तुम लड़की को अपने पास रख सकते हो बस तुम मुझे इस बच्चे से बचाओ।"

तब लड़का उस बच्चे को घर ले गया। फिर उसने लड़की से शादी कर ली और चालीस दिन चालीस रात तक आनन्द मनाया।

तीन सेब आसमान से गिरे। उनमें से एक सेब मेरा था एक सेब हुस्नी का था और तीसरा सेब कहानी सुनाने वाले का था। बताओ इनमें से कौन सा सेब मेरा था?

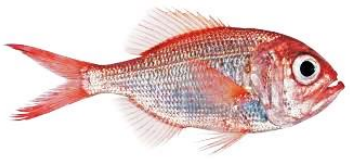

13 गंजा मुहम्मद[34]

यह तब की बात है जब ऊँट सन्देश ले जाया करता था। जब मेंढक आसमान में उड़ा करते थे और जब मैं पहाड़ियों पर चढ़ा करता था और घाटियों में उतरा करता था।

उस समय दो भाई साथ साथ रहा करते थे। साथ में उनकी माँ और गरीबी और बहुत थोड़े से जानवर रहते थे जो उन्हें अपने पिता से विरासत में मिले थे।

एक दिन उनमें से छोटा भाई जो गंजा था उसके दिमाग में आया कि उसके पिता जो यह थोड़ी सी सम्पत्ति छोड़ गये थे वह उसे अपने बड़े भाई से बाँट ले।

सो वह अपने बड़े भाई के पास गया और बोला — "क्या तुम ये दो बाड़े देख रहे हो? इनमें से एक नया है और एक पुराना। हम अपनी गायों को खोल देते हैं। वे जब लौटेंगी तो जो नये बाड़े में घुसेंगी वे मेरी होंगी और जो पुराने बाड़े में घुसेंगी वे तुम्हारी होंगी।"

बड़ा भाई बोला — "नहीं मुहम्मद। जो पुराने बाड़े में लौटेंगी वे तुम्हारी होंगी।"

मुहम्मद बोला — "ठीक है।"

गायों को छोड़ दिया गया और जब वे लौटीं तो वे सब नये बाड़े में लौटीं सिवाय एक अन्धी सी गाय के।

[34] Mahomet, the Bald-Headed. Taken from "Fourty-four Turkish Fairy Tales".

मुहम्मद शिकायत या असन्तोष का एक शब्द भी नहीं बोला। वह अपनी अन्धी गाय को रोज़ घास के मैदान में चराने के लिये ले जाता और नियमित रूप से शाम को घर ले आता।

एक दिन मुहम्द सड़क के किनारे बैठा हुआ था कि बहुत तेज़ हवा चल पड़ी और उसने पेड़ों की डालियों को झुका दिया और चटका दिया तो मुहम्मद ने पेड़ से कहा — "ओ चटकने वाले। क्या तुमने मेरे भाई को देखा है।"

पेड़ ने उसकी यह बात नहीं सुनी बल्कि वह और ज़ोर से चटक गया। मुहम्मद ने फिर अपना सवाल दोहराया पर पहले की तरह से पेड़ ने फिर से कोई जवाब नहीं दिया बल्कि और ज़ोर से चटक गया।

क्योंकि पेड़ ने गंजे मुहम्मद के सवाल का कोई जवाब नहीं दिया था सो वह बहुत गुस्सा हो गया। उसने अपनी कुल्हाड़ी उठायी और उसे काटने के लिये उठा और उसने उसके तने में एक कुहाड़ी मारी तो लो यह क्या हुआ। उस पेड़ के तने की चीर से जो उसके कुल्हाड़ी मारने से बनी थी बहुत सारे सोने के सिक्के बरस पड़े।

जो कुछ थोड़ी बहुत बुद्धि उसमें थी उसका इस्तेमाल करते हुए वह अपने बड़े भाई के पास गया और उससे एक बैल उधार माँगा उसे एक गाड़ी में जोता कुछ थैले लिये उनको मिट्टी से भरा और उसके साथ पेड़ के पास पहुँचा। वहाँ पहुँच कर उसने थैलों में से मिट्टी निकाल दी और उनको सोने से भर लिया।

जब वह घर लौट रहा था तो उसके भाई को यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ कि उसका भाई कितनी सारा धन ले कर लौट रहा था।

छोटे भाई को उसकी इच्छा ने एक बार फिर अपनी सम्पत्ति को बॉटने के लिये पकड़ लिया। उसने सोचा "हमें अबकी बार भी सम्पत्ति को बॉटने में कोई ऐतराज नहीं होना चाहिये।"

सो उसने एक तराजू पड़ोस से उधार ली। पड़ोसी ने उसे तराजू दे तो दी पर पड़ोसी ने सोचा यह बेवकूफ क्या चीज़ तौल रहा है सो उत्सुकतावश उसने थोड़ा सा गोंद तराजू के एक पलड़े के नीचे लगा दिया सो जब उसने उसकी तराजू लौटायी तो उसमें एक सोने का सिक्का चिपक गया।

पड़ोसी ने अपनी यह खोज दूसरे को बतायी दूसरे ने तीसरे को और तीसरे ने चौथे को। और कुछ ही दिनों में मुहम्मद की अमीरी के चर्चे सारे गॉव में फैल गये।

इतने सारा सोना रखने से दोनों भाई अब बहुत परेशान हो गये। उन्हें नहीं मालूम था कि वे उसका क्या करें। कुछ सोचने के बाद उन्होंने एक फावड़ा लिया और एक गड्ढा खोदा और उसमें अपने सिक्के गाड़ दिये और अपना घर छोड़ने के लिये तैयार हो गये।

जब वे वे वहॉ से चल चुके तो बड़े भाई को याद आया कि उसने घर का दरवाजे पर ताला तो लगाया ही नहीं है सो उसने

अपने छोटे भाई को देखने के लिये भेजा कि वह यह देख कर आये कि घर का ताला लगा है या नहीं।

घर पहुँच कर उसे ध्यान आया कि उसे अपनी माँ को शान्त कर देना चाहिये सो उसने जल्दी जल्दी पानी उबाला और उसमें अपनी माँ को डाल दिया और वहाँ तब तक इन्तजार किया जब तक कि वह और आवाज नहीं निकाल सकी।

फिर उसने उसे पानी से बाहर निकाला और उसे दीवार के सहारे एक झाड़ू के साथ बिठा दिया। फिर उसने दरवाजे की किवाड़ निकाल कर अपनी पीठ पर रखी और अपने बड़े भाई के पास चल दिया।

जब बड़े भाई ने छोटे भाई को दरवाजे की किवाड़ लाते देखा तो वह तुरन्त ही समझ गया कि उनकी माँ का क्या हुआ होगा। वह मुहम्मद से बहुत नाराज हुआ जो यह सोच सोच कर बहुत खुश हो रहा था जैसे घर के दरवाजे की किवाड़ ला कर उसने कोई बड़ा असाधारण काम कर दिया हो कि अब कोई दरवाजा खोल नहीं पायेगा। गुस्से में भर कर बड़े भाई ने उसे गरदन से पकड़ा और उसे बहुत ज़ोर से हिलाया।

अभी वे यह सोच ही रहे थे कि उन्हें क्या करना चाहिये कि उन्हें तीन घुड़सवार उधर आते दिखायी दिये। दोनों भाई उन्हें देख कर डर गये।

उन्हें लगा कि वे शायद उनका पीछा करते आ रहे हों सो उनसे बचने के लिये वे दोनों पेड़ पर चढ़ गये। किवाड़ भी साथ ले गये। अँधेरा सा हो गया था सो वे उनको दिखायी नहीं दिये।

मुहम्मद बोला कि वे किस्मत वाले थे जो बच गये और उनकी ज़िदगी बच गयी। और मुहम्मद इस बात से खास कर बहुत खुश था सो इस खुशी में उसके हाथ से किवाड़ गिर गयी और वह एक घुड़सवार के सिर पर जा गिरी जो इत्तफाक से उस समय उसके नीचे से गुजर रहा था।

वह घुड़सवार जिसके सिर पर यह किवाड़ गिरी थी उसने तुरन्त ही अपने घोड़े को एड़ लगायी और यह कहते हुए वहाँ से भाग लिया "दया करो। लगता है दुनियाँ खत्म होने वाली है।"

इन घटनाओं के बाद बड़े भाई ने मुहम्मद की कई उलटी सीधी बातों को सहन किया फिर चुपके से उसे उसके हाल पर छोड़ दिया। अब मुहम्मद क्या करे। वह दुनियाँ में अकेला रह गया था। वह थका हुआ और भूखा चारों तरफ अकेला ही घूमता रहा।

आखिर वह एक गाँव में पहुँच गया। वहाँ वह एक जामी[35] के दरवाजे पर बैठ गया और आने जाने वालों से पैसे और खाना माँगने लगा।

[35] Djami

तभी जामी में से पतली दाढ़ी रखे हुए एक छोटा सा आदमी निकल कर बाहर आया तो दरवाजे पर मुहम्मद को देख कर उससे पूछा कि क्या वह उसके घर में काम करना चाहेगा।"

मुहम्मद बोला कि वह जरूर ही उसका नौकर बनना चाहेगा पर इस शर्त पर कि वह उससे कभी गुस्सा नहीं होगा चाहे कुछ भी हो जाये और अगर वह कभी उससे गुस्सा हुआ तो वह उसे मार देगा। और अगर मैं आपसे कभी गुस्सा होऊँगा तो आपको मुझे मारने का पूरा अधिकार है।"

अब क्योंकि नौकरों का मिलना बहुत मुश्किल था सो आदमी राजी हो गया। उसने उसकी शर्त स्वीकार कर ली और उसे अपने यहाँ नौकर रख लिया।

मुहम्मद ने अपना काम वहाँ मालिक की बतखों और भेड़ों को मार कर शुरू किया और फिर पूछा — "क्या आप मुझसे गुस्सा हैं।"

वह आदमी तो यह देख कर बहुत डर गया उसने जवाब दिया — "नहीं नहीं मैं भला तुमसे गुस्सा क्यों होऊँगा।" उसके बाद मुहम्मद का काम केवल घर में बैठना ही रह गया।

मालिक की पत्नी यह सब देख कर बहुत डर गयी थी। उसको लगा कि मुर्गियों और बतखों के बाद अब उसकी बारी आने वाली है सो उस पागल आदमी से बचने के लिये उसने अपने पति से कहा कि वह उसे ले कर छिप कर रात में ही कहीं भाग चले।

पर मुहम्मद को उनका इरादा सुनायी पड़ गया तो वह उनके सामान के अन्दर छिप कर बैठ गया और जब उन्होंने दूसरे गॉव में जा कर अपना सामान खोला तो वह उसमें से निकल आया।

पति पत्नी ने आपस में सलाह की कि सुरक्षा के लिये उन सबको वह रात समुद्र के किनारे सो कर बितानी चाहिये।

मुहम्मद को भी उनके साथ ही जाना चाहिये और जब रात होगी तब मौका पड़ने पर वे उसे समुद्र में फेंक कर डुबो कर मार देंगे। पर मुहम्मद तो बहुत चालाक था उसने मालिक की पत्नी को ही उठा कर समुद्र में फेंक दिया और वह उसमें डूब गयी।

उसने फिर पूछा — "मालिक क्या आप मुझसे नाराज हैं।"

आदमी बोला — "ओ अभागे। मैं तुझसे नाराज क्यों नहीं होऊॅगा। तूने न मेरी चीज़ों को बरबाद किया है बल्कि मुझे भीख मॉगने के लिये सड़क पर खड़ा कर दिया है। और अब तो तूने मेरी पत्नी को भी मार दिया है।"

यह सुन कर मुहम्मद ने उसे पकड़ लिया और उसे उसकी नौकरी की शर्त की याद दिलायी और उसको भी पकड़ कर समुद्र में फेंक दिया।

मुहम्मद एक बार फिर दुनियॉ में अकेला हो गया। कौफी पीता हुआ और अपना पाइप पीता हुआ वह इधर उधर घूमता फिरा। एक दिन उसे कहीं से पॉच पैसे का एक सिक्का मिल गया तो उसने उसकी लैबलैबी यानी भुना हुआ काबुली चना खरीद लिया।

जब वह उन्हें खा रहा था तो गलती से उसका एक चना कुँए में गिर गया। अब मुहम्मद बैठ कर रोने लगा "अब मुझे अपना चने का दाना चाहिये। अब मुझे अपना चने का दाना चाहिये।"

उसका यह जोर जोर से चिल्लाना सुन कर कुँए में से एक अरब निकला जिसके दोनों होठ इतने बड़े थे कि उसका ऊपर वाला होठ तो आसमान को छू रहा था और नीचे वाला होठ जमीन को छू रहा था। उसने मुहम्मद से पूछा "तुमको क्या चाहिये?"

मुहम्मद रोते रोते बोला — "मुझे मेरी लैबलैबी चाहिये।"

अरब कुँए में गायब हो गया और तुरन्त ही एक छोटी सी मेज अपने हाथों में ले कर निकल आया। वह मेज वह गंजे को देते हुए बोला — "जब भी तुम्हें भूख लगे तो तुम इस मेज को रख कर कहना कि "मेज लग जा।" तो इस मेज पर बहुत सारा खाना लग जायेगा। और जब तुम खा चुको तो कहना "मेज बस काफी है।"

मुहम्मद ने वह मेज ली और एक गॉव में पहुँचा। अब जब वह भूखा होता तो उसे केवल यही कहना होता "मेज लग जा।" और उस पर बहुत बढ़िया बढ़िया खाना लग जाता। वह सारा खाना इतना स्वादिष्ट होता कि उसकी समझ में यही नहीं आता कि वह पहले क्या खाये।

अपनी इस खुशी में उसने सोचा कि वह गॉव वालों को बुला कर इसे दिखाये। सो उसने सारे गॉव को खाने पर बुलाया। जब

गॉव वाले उसके पास आये तो उन्होंने देखा कि उसके पास न तो कोई खाना था और न ही कोई आग जल रही थी।

उनको लगा कि उनका मेजबान उनके साथ हॅसी कर रहा था। पर जब वह अपनी छोटी सी मेज निकाल कर लाया और बोला "मेज लग जा।" तो दावत तो पल भर में तैयार थी। सबने खूब पेट भर कर खाना खाया और अपने अपने घर चले गये।

पर वे इस दावत को भूले नहीं। वे सब मुहम्मद से उसकी मेज लेने की कोई तरकीब सोचने लगे। आखिरकार यह तय किया गया उन सबमें से एक किसी तरह से मुहम्मद जब अपने घर में न हो तो उसके घर में घुस जाये और वह उसका छोटा सा फर्नीचर चुरा लाये। और उन्होंने ऐसा ही किया।

अब ऐसा हुआ कि मुहम्मद को एक दिन बहुत जोर की भूख लगी तो अब वह क्या करे। वह फिर से उसी कुॅए के पास पहुॅचा और रोने लगा — "मुझे अपनी लैबलैबी चाहिये। मुझे अपनी लैबलैबी चाहिये।"

फिर से वहॉ अरब प्रगट हुआ उसने पूछा "तुम्हारी मेज कहॉ है।"

"वह चोरी हो गयी।"

वह मोटे होठ वाला अरब फिर से कुॅए में चला गया और अबकी बार एक हाथ की चक्की ले कर निकला और मुहम्मद को वह चक्की देते हुए बोला — अगर तुम इसे दॉयी तरफ घुमाओगे तो

यह तुम्हें सोना देगी और अगर तुम इसे बॉयी तरफ घुमाओगे तो यह तुम्हें चॉदी देगी।"

मुहम्मद उस चक्की को ले कर घर चला गया। घर जा कर उसने चक्की को दॉये और बॉये बार इतना घुमाया कि उससे तो बहुत सारा पैसा निकला। वह तो अब गॉव में पहले से भी बहुत ज़्यादा अमीर हो गया।

अब इस चक्की की खबर की हवा गॉव वालों को भी लगी। और एक सुन्दर सुबह यह भी गायब गयी। मुहम्मद फिर से कुॅए के पास बैठा रो रहा था "मुझे अपनी लैबलैबी चाहिये। मुझे अपनी लैबलैबी चाहिये।"

वहॉ फिर से अरब निकल कर आया और उससे पूछा "तुम्हारी चक्की और मेज कहॉ हैं।" गंजा रोया "वे दोनों ही मुझसे चुरा ली गयीं हैं।"

अरब एक बार फिर से कुॅए में अन्दर गया और इस बार दो डंडे ले कर बाहर निकला। उसने उन्हें मुहम्मद को दे कर कहा कि वह केवल यही शब्द कहे "डंडों तुम एक साथ हो जाओ।"

मुहम्मद वे डंडे ले कर चल दिया। उसने उन्हें जॉचना चाहा तो वह बोला "डंडों तुम एक साथ हो जाओ।" बस तुरन्त ही डंडे उसके हाथ से उड़ गये और उसे बड़ी निर्दयता से उसे मारना शुरू कर दिया।

जैसे ही वह अपने आश्चर्य से बाहर निकला तो वह बोला "डंडों रुक जाओ।" और उन्होंने उसे मारना बन्द कर दिया। मुहम्मद यह देख कर बहुत खुश हुआ और उसने सोच लिया कि वह इन्हें कैसे इस्तेमाल करेगा।

वह जल्दी से घर पहुँचा और फिर सब गॉव वालों को अपने घर बुलाया। वे बड़े उत्सुक से उसके घर यह देखने के लिये आये कि आज वह उनको और कौन सी आश्चर्यजनक चीज़ दिखायेगा।

जब काफी लोग उसके घर आ गये तब मुहम्मद ने उनको अपनी डंडियॉ दिखायीं और बोला "डंडों तुम एक साथ हो जाओ।" बस उसका यह कहना था कि वे डंडियॉ मुहम्मद के हाथ से फिसल कर उड़ गयीं और मेहमानों को मारने लगीं।

वे सब उससे दया की प्रार्थना करने लगे पर मुहम्मद ने उनको रुकने के लिये नहीं कहा जब तक कि उन्होंने उसे मेज और चक्की वापस कर देने का वायदा नहीं कर दिया। लोग तुरन्त ही उसकी चीज़ें वापस ले आये तब उसने अपने डंडों को रोका।

गंजे मुहम्मद ने अपनी तीनों भेंटें ली और फिर अपने गॉव चला गया जहॉ वह फिर से अपने भाई के पास चला गया। अब वह अक्लमन्द और अमीर हो चुका था सो दोनों भाइयों ने अब शादी कर ली और आराम से रहने लगे।

अब गॉव में मुहम्मद से ज़्यादा कोई और अक्लमन्द आदमी नहीं था।

14 नौशेरवॉ का मकबरा[36]

एक बार खलीफा हारूँ अल रशीद[37] मशहूर नौशेरवॉ का मकबरा देखने गये जो फारस के सारे बादशाहों में सबसे अधिक मशहूर थे। मकबरे से पहले एक सुनहरा परदा पड़ा हुआ था जिसे जब हारूँ ने छुआ तो वह टुकड़े टुकड़े हो कर बिखर गया।

मकबरे की दीवारें सोने की बनी हुई थीं और उनमें जवाहरात जड़े हुए थे इससे वहॉ अँधेरे में भी उजाला हो रहा था। उनका शरीर एक सिंहासन पर बैठी हुई अवस्था में था। इस सिंहासन में भी जवाहरात जड़े थे।

उनका शरीर इस तरह ज़िन्दा लग रहा था कि पहली नजर में तो हारूँ उसके सामने बहुत नीचे तक झुक गया और न्यायशील नौशेरवॉ के मरे हुए शरीर को सलाम किया।

हालॉकि मरे हुए बादशाह का चेहरा बिल्कुल ज़िन्दा बादशाह के जैसा लग रहा था जबकि उनका बचा हुआ शरीर सब सुरक्षित अवस्था में रखा हुआ था जिससे पता चलता था कि जिन्होंने उनका शरीर सुरक्षित किया था। वे लोग कितने चतुर थे।

जब खलीफा ने उनके कपड़े छुए तो वे भी मिट्टी बन कर नीचे गिर गये। यह देख कर हारूँ ने अपने कीमती कपड़े उतार कर

[36] The Tomb of Noosheerwan. A folktales of Arab

[37] Caliph Haroon al Rashid

नौशेरवॉ की लाश को पहना दिये। साथ में उसने एक नया परदा भी वहॉ लगवा दिया जो उस पहले परदे से भी अधिक कीमती था। और सारे मकबरे में कपूर और दूसरी खुशबुऐं भी करवा दीं।

यह कहा जाता है कि नौशेरवॉ की लाश में इसके सिवाय कोई बदल नहीं थी कि उसके कान सफेद हो गये थे। इस पूरे दृश्य ने खलीफा को बहुत प्रभावित किया और वह रो पड़ा और फिर कुरान में से लिखा हुआ कहा — "जो कुछ मैंने अभी देखा है वह उनके लिये एक चेतावनी है जिनके पास ऑखें हैं।"

उसने देखा कि सिंहासन पर कुछ लिखा हुआ है तो उसने कुछ पुजारियों को उसे पढ़ने के लिये कहा जो उस भाषा यानी पहलवी भाषा को पढ़ना जानते थे और उनसे उसे समझाने के लिये कहा।"

उन्होंने वैसा ही किया। उन्होंने पढ़ा —

यह दुनियॉ नहीं रहने वाली जो इसके बारे में सबसे कम सोचता है वही सबसे बुद्धिमान है
इससे पहले कि तुम इसका शिकार बन जाओ इस दुनियॉ का पूरा आनन्द भोग लो
तुम वही कृपा अपने से नीचे लोगों पर करो जो तुम खुद अपने ऊपर वालों से चाहते हो
अगर तुम्हें सारी दुनियॉ जीतनी हो तो जीत लो पर अन्त में तो मौत तुम्हें जीत ही लेगी
सावधान रहो कि तुम्हारी अपनी किस्मत तुम्हें कहीं धोखा न दे
जो कुछ तुमने किया है तुम्हें भी ठीक वही मिलेगा न उससे कम न उससे ज़्यादा

खलीफा ने नौशेरवॉ के हाथ में एक बहुत गहरे रंग की लाल की ॲगूठी देखी जिस पर लिखा हुआ था —

निर्दयता को छोड़ो अच्छी बातें पढ़ो और किसी भी काम में जल्दी मत करो।
अगर तुम्हें सौ साल भी रहना है तो भी मौत को एक पल के लिये भी मत भूलो
बुद्धिमानों की संगत से अच्छा कुछ नहीं

नौशेरवॉ के दॉयी बॉह पर सोने का एक बाजूबन्द था जिस पर लिखा हुआ था —

एक खास साल में इर्दवहिश्त के महीने के दसवें दिन अदीन की जाति का एक खलीफा यहॉ आयेगा जिसके साथ चार अच्छे आदमी होंगे और एक बुरा आदमी होगा।

खलीफा के इस सन्देश के नीचे खलीफा के पुरखों के नाम लिखे हुए थे और हारूॅ के आने के बारे में लिखा हुआ था कि —

यह शाहज़ादा मुझे सम्मान देगा मुझे नये कपड़े पहनायेगा और मेरे मकबरे में बहुत सारी मीठी मीठी सुगन्ध फैलायेगा और फिर अपने घर चला जायेगा। पर जो बुरा आदमी इसके साथ आयेगा वह मेरे साथ बुरा काम करेगा।

मैं अल्लाह से प्रार्थना करता हूॅ कि वह मेरे इस मेहमान को बहुत सारी कृपा दे और उस अयोग्य बुरे आदमी से बदला ले। मेरे सिंहासन के नीचे कुछ लिखा हुआ है जिसे खलीफा को जरूर पढ़ना चाहिये और उस पर विचार करना चाहिये। उसमें जो कुछ भी लिखा है वह उसे मेरी याद दिलायेगा और इससे कुछ और ज़्यादा न दे पाने के लिये मुझे माफ करेगा।"

खलीफा ने जब यह सुना तो उसने सिंहासन के नीचे हाथ डाला और उस खुदे हुए को ढूॅढ लिया। उसमें एक लाल के ऊपर कुछ लाइनें खुदी हुई थीं और वह लाल भी उतना ही बड़ा था जितनी बड़ी उसकी हथेली थी।

उसमें सोना और हथियार और जवाहरातों के कुछ बक्से मिलने की एक जगह बतायी गयी थी और उसके नीचे लिखा था —

यह मैं खलीफा को उसके भले काम के बदले में देता हूँ जो उसने मेरे साथ किया है वह इन सबको ले ले और आनन्द करे

जब हारूँ अल रशीद वहाँ से जाने लगा तो उसका वजीर हुसैन बिन साहिल उससे बोला — "हुजूर ये जो कीमती पत्थर इस मुर्दे के शरीर पर लगे हुए हैं इनका यहाँ क्या फायदा। ये तो किसी ज़िन्दा आदमी के किसी फायदे के लिये हैं। मेहरबानी कर के मुझे इजाज़त दीजिये तो में इनमें से कुछ पत्थर ले लूँ।"

खलीफा ने इस काम को ठीक न समझते हुए कुछ गुस्से से कहा — "ऐसी तो इच्छा करना भी किसी चोर का काम है किसी बड़े और अक्लमन्द आदमी का नहीं।"

हुसैन को अपने कहे पर बड़ी शर्मिन्दगी महसूस हुई। उसने एक नौकर जो मकबरे के दरवाजे पर खड़ा था उससे कहा — "जा तू भी अन्दर जा और इस पवित्र मन्दिर के दर्शन कर ले।"

वह नौकर यह सुन कर अन्दर चला गया। उसकी उम्र सौ साल से भी ऊपर थी पर उसने धन दौलत की इतनी चमक पहले कभी नहीं देखी थी। उसको लगा कि उसको उसमें से कुछ ले लेनी चाहिये। पहले तो वह डरा पर बाद में हिम्मत कर के उसने नौशेरवाँ की उँगली से एक अँगूठी निकाल ली और बाहर आ गया।

हारूँ ने उस आदमी को पहले अन्दर आते हुए फिर बाहर जाते हुए देखा। उसने देखा कि वह बाहर बड़ी सावधानी से कुछ डरा डरा जा रहा था। उसने तुरन्त ही भाँप लिया कि वह क्या कर के जा रहा होगा।

अपने चारों तरफ के लोगों को सम्बोधित करते हुए उसने गुस्से में भर कर कहा — "नौशेरवाँ के ज्ञान की अब तुम हद देखो। उन्होंने पहले ही यह कह रखा था कि मेरे साथ एक बुरा आदमी भी है। और वह बुरा आदमी यह है। क्या लिया तुमने?"

आदमी बोला — "कुछ नहीं।"

खलीफा बोले — "तलाशी लो इसकी।"

उसकी तलाशी ली गयी तो उसके पास नौशेरवाँ की उँगली की एक अँगूठी पायी गयी। खलीफा ने तुरन्त ही उससे वह अँगूठी ली और मकबरे के अन्दर गया और उसे मरे हुए राजा की उँगली में पहना दी।

जब वह वहाँ से लौटा तो बिजली की कड़क जैसी एक तेज़ आवाज सुनायी दी। हारूँ उस पहाड़ से नीचे उतर आया जिस पहाड़ पर नौशेरवाँ का मकबरा था और अपने नौकरों से उसको जाने वाली सड़क को तोड़ देने के लिये कहा ताकि कोई अपनी उत्सुकतावश उधर जा ही न सके।

नीचे आ कर उसने वह जगह ढूँढी जहाँ उसको नौशेरवाँ के दिये हुए सोना हथियार और कीमती जवाहरात मिलने वाले थे और उनको ढूँढ कर उन सबको बगदाद भेज दिया।

बहुत सारी कीमती चीज़ों में एक सोने का ताज भी था जिसकी पाँच तरफ थीं और जो बहुत कीमती पत्थरों से सजा हुआ था। उसके हर तरफ बहुत अच्छी सीख लिखी हुई थीं। उनमें से सबसे ज़्यादा बताने लायक ये सीखें थीं।

पहली तरफ

उनको मेरी तरफ से इज़्ज़त देना जो अपने आपको जानते हैं
किसी काम को शुरू करने से पहले उसका परिणाम सोच कर रखो
और आगे बढ़ने से पहले पीछे लौटने का रास्ता देख कर रखो
किसी भी आदमी को बिना जरूरत के दुख मत दो। हर एक की खुशी के बारे में सोचो
अपनी शान को अपनी ताकत पर रख कर दूसरों को दुख मत पहुँचाओ

दूसरी तरफ

कोई भी कदम उठाने से पहले सलाह ले लेनी चाहिये और उस काम को कराने के लिये किसी ऐसे आदमी पर विश्वास नहीं करना चाहिये जिसको उस काम करने का कोई अनुभव न हो
अपनी जायदाद को अपनी ज़िन्दगी के लिये छोड़ दो और अपनी ज़िन्दगी को अपने धर्म के लिये छोड़ दो
अपना समय अपना अच्छा नाम कमाने में खर्च करो और अगर तुम्हें धन चाहिये तो सन्तुष्ट रहना सीखो

तीसरी तरफ

जो कोई चीज़ टूट गयी हो चोरी हो गयी हो जल गयी हो या खो गयी हो उसका दुख मत करो
किसी दूसरे के घर में हुक्म मत दो और अपनी रोटी अपने घर में ही खाने की आदत डालो
अपने आपको औरत की कैद में मत रखो

चौथी तरफ

किसी खराब परिवार में शादी मत करो और उनके साथ भी मत बैठो जिनको कोई शर्म न हो
ऐसे लोगों से हमेशा दूर रहो जो अपनी बुरी आदतों को रोक नहीं सकते और उसके साथ बात भी मत करो जिसको दया की कीमत नहीं मालूम हो
दूसरों का सामान कभी मत लो[38]
हमेशा राजा से सावधान रहो क्योंकि वह उस आग की तरह है जो रोशनी तो देती है पर साथ में जला भी देती है
अपने मूल्यों की कीमत समझो दूसरे की योग्यताओं को न्यायपूर्वक जॉचो और ऐसे लोगों के साथ कभी मत लड़ो जो किस्मत में और धन में तुमसे कहीं ज़्यादा अच्छे हैं

पॉचवी तरफ

राजा से औरतों से और कवियों से डरो
किसी भी आदमी से जलो नहीं और आदत डालो कि किसी दूसरे की गलतियॉ न ढूँढो
हमेशा खुश रहने की आदत डालो गुस्से से बचो नहीं तो तुम्हारी ज़िन्दगी बहुत दुखी हो जायेगी
अपने घर की स्त्रियों का हमेशा आदर करो और उनकी रक्षा करो

[38] "Covet not the goods of others" – "Thou shall not covet" is the most popular translation of One of the Ten Commandments which are widely understood as moral imperatives by legal scholars, Jewish scholars, Catholic scholars and Protestant scholars.

कभी गुस्से के गुलाम न हो और जब कभी किसी से मुकाबला हो तो हमेशा समझौते के दरवाजे खुले रखो
कभी अपने खर्चों को अपनी आमदनी से ऊँचा मत जाने दो[39]
पहले नया पेड़ लगाओ वरना किसी बड़े पेड़ को काटने की सोचो भी मत
अपने कालीन की हद से ज़्यादा अपने पैर मत फैलाओ[40]

यह सब अच्छी चीज़ें पढ़ कर हारूँ अल रशीद खजाना मिलने से भी बहुत ज़्यादा खुश हुआ। उसने हुक्म दिया कि इन नियमों को एक किताब में लिख दिया जाये ताकि भले लोग इनको पढ़ कर इस अक्लमन्दी का फायदा उठा सकें।

जब वह बगदाद वापस लौटा तो उसने यह सब किस्सा अपने प्रिय वज़ीर जाफर बरमेकी[41] और दूसरे प्रिय अफसरों को बताया। हुसैन बिन साहिल ने नौशेरवॉ की जो बेइज़्ज़ती की थी उसने उनको वह बात भी बतायी और यह भी बताया कि किस तरह से उसने मकबरे को लूटने की सलाह दी थी।

और एक छोटी सी सजा उस नौकर को सुनायी जो नूशीरवॉ के हाथ से अँगूठी निकालता पकड़ा गया था।

[39] Similar to this saying is "Cut your coat according to your cloth", in Hindi it is said "Tete paanv pasaariye jetI laambee saur"
[40] This is also similar to the above one.
[41] Jaffier Bermekee – name of the Minister of Khalifa (Caliph).

15 चिड़ियें जिन्होंने एक राजा से दोस्ती की[42]

तो इस तरह से हूपो[43] चिड़िया की राजा सोलोमन से जान पहचान हुई। एक बार राजा सोलोमन जंगल की तरफ निकल गया क्योंकि उसके राज्य का कोई हिस्सा ऐसा नहीं था जहॉ वह न जाता हो।

उसने देख रखा था कि उसका एक बड़ा शहर उसकी अपनी पसन्द के अनुसार पूरा हो चुका था। यहॉ तक कि टैडमोर ने रेत से भरे रेगिस्तान में राजा के लिये रास्ता बना दिया था।

राजा का काफिला अपने ऊॅटों और घोड़ों के साथ जा रहा था जिनके ऊपर फूलों की तरह चमकीले रंगों के कपड़े पड़े हुए थे और जो सूरज की तरह चमक रहे थे।

पर गरमी राजा के सिर को जला रही थी सो उसे छाया चाहिये थी। जैसे ही उसने यह इच्छा की तो उसकी इच्छा के जवाब में वहॉ कौन आया – हूपो चिड़ियों का एक झुंड।

हूपो स्वभाव से ही बहुत उत्सुक चिड़िया होती है सो उसने पहले तो कारवॉ के कुछ चक्कर काटे फिर वे राजा सोलोमन के ऊॅट के पास पहुॅचीं और उसके सिर पर कुछ देर तक उड़ती रहीं ताकि वे

[42] The Birds Who Befriended a King. By Constance Armfield. Arabic.
[43] Hoopoe bird. See its picture above.

दुनियॉ के सबसे अक्लमन्द राजा को ठीक से देख सकें। और शायद उसकी कुछ बुद्धिमानी की बात सुन सकें।

इस तरह उन चिड़ियों ने उसकी पूरी यात्रा के लिये उसके ऊपर एक छोटा सा साया डाल दिया। इसके लिये उनको बहुत कुछ मिला क्योंकि वे उसके राज्य में वे ही सबसे अधिक नम्र चिड़ियें रहीं और सारा समय राजा सोलोमन से बातें करती रहीं।

जब वे उसके महल में पहुॅचीं तो उसने उनको उनकी सेवा के लिये बहुत बहुत धन्यवाद दिया और उनसे पूछा कि उन्हें क्या चाहिये। अब क्योंकि हूपो ने राजा सोलोमन से बातें करना शुरू कर दिया था बल्कि यह तो सचमुच में उनके लिये बहुत आश्चर्य की बात थी कि सोलोमन उनसे बात कर रहा था।

कि सोलोमन ने उनसे इतनी दयापूर्वक सवाल पूछे उनके रहने के बारे में उनकी पसन्द नापसन्द के बारे में उनके सम्बन्धियों के बारे में कि उनका उससे डर निकल गया और वे उसके सुन्दर महल तक आ पहुॅचीं।

उन्होंने चमकीली पोशाक पहने उसके नौकरों को देखा जो उसके सिंहासन के पीछे खड़े हुए थे और मेज पर उसका इन्तजार कर रहे थे उसके ऑगन में लाइन बना कर खड़े हुए थे।

जब चिड़ियों ने उसकी हाथी दॉत की दीवारें देखीं जिन पर सोने का काम किया गया था उसके सोने के हाथी देखे जो सढ़ियों की रक्षा के लिये खड़े हुए थे चॉदी की छतों पर सफेद मोर देखे। तो

उनको सोचना पड़ गया कि वे रेगिस्तान पार कर के इतनी सारी सम्पत्ति के मालिक के महल में आ गयी हैं।

सो बजाय सोलोमन को धन्यवाद के साथ जवाब देते हुए और जो छाया उन्होंने उसे दी थी उनके बारे में उसे यह बताते हुए कि उसके बुद्धिमानी के शब्द तो उनके लिये उसका बहुत अच्छा इनाम थे उन्होंने उससे विदा माँगी और उसके महल की छत पर जा कर सलाह करने के लिये बैठ गयीं कि वे उससे क्या माँगें।

अन्त में उन्होंने निश्चय किया कि वे उससे उसके जैसा सोने का ताज माँगेंगीं और उन्हें पहन कर वे वापस लौटेंगी और फिर दूसरी चिड़ियों पर राज करेंगी।

यह तय कर के वे सब छोटी छोटी चिड़ियें राजा सोलोमन के पास लौटीं जो अब अपने बागीचे में टहल रहा था और अपनी प्रार्थना राजा के सामने रखी।

तब राजा ने क्या कहा? सोलोमन बोला — "जो भी तुम लोग माँग रहे हो वह तुम्हें दिया जाता है। फिर भी क्योंकि तुम लोगों ने मेरी सच्ची सेवा की है इसलिये जब भी तुम उन्हें लौटाना चाहो तो उन्हें मुझे लौटा कर उनकी जगह मुझसे बुद्धिमानी ले लेना।"

हूपो बोलीं — "नहीं राजा साहब। हमें पता है कि अपनी बुद्धिमानी की वजह से तुम बहुत प्रसिद्ध हो पर फिर भी अगर तुम्हारे सिर पर यह सोने का ताज न हो तो कोई भी तुम्हारी बुद्धिमानी की

वजह से तुम्हें सिर नहीं झुकाता और न ही तुम्हारी बुद्धिमानी की बातें सुनता है।

हम तुम्हारी बुद्धिमानी की बातें अपने फायदे के लिये दोबारा अवश्य कह पायेंगे पर वे हमारी तभी सुनेंगे जब हमारे सिरों पर तुम्हारे सोने के ताज जैसा ताज होगा।"

सोलोमन बोला — "एक ही बात है। तुम लोग मेरे पास बिना किसी झिझक के या बिना किसी डर के कभी भी वापस लौट सकती हो।"

कह कर सोलोमन ने अपने सुनारों को उस समय जो भी सबसे अच्छा सोना मिले उससे उनके लिये सोने के ताज बनाने का हुक्म दे दिया। यह सुन कर वे छोटी बेवकूफ चिड़ियें वहॉ से उड़ कर चली गयीं।

अब उनके सिरों पर चमकते सोने के ताज थे। वे तो मोर से भी अधिक गर्व महसूस कर रही थीं। वे तोतों और कौओं से भी अधिक बतिया रही थीं। उनको अपने दोस्तों के पास लौटने की बहुत जल्दी थी। वे उनकी प्रतिकियाऐं देखना और सुनना चाहती थीं।

पर जब हूपो ने उनको यह बताया कि वे दुनियॉ की सारी चिड़ियों के राजा का ताज पहने हैं तो उनकी सारी दोस्त हॅस पड़ीं और बोलीं कि वे सोलोमन से बिल्कुल सन्तुष्ट थीं। और वे केवल उसी को अपना राजा चाहती थीं और उनको केवल उसी की

आवश्यकता थी। वे किसी और को अपना राजा नहीं बनाना चाहती थीं।

उन्होंने उन हूपो को अपने पेड़ से भगा दिया क्योंकि उनके ताज अक्सर पेड़ की डालियों में उलझ जाते थे और दूसरी चिड़ियें उनकी उनके ताज उनमें से निकालते निकालते थक गयी थीं। लेकिन ताज वाली हूपों ने यह निश्चय कर लिया था कि वे उन दूसरी चिड़ियों में अपने लिये ईर्ष्या पैदा कर के ही रहेंगी।

सो वे पानी के पास चली जातीं वे वहीं खेलतीं बतियाती ताकि वे पानी में अपनी परछाईं देख देख कर अपनी प्रशंसा अपने आप ही कर सकें।

बहुत जल्दी ही लोगों ने यह देखना शुरू कर दिया कि ये चिड़ियें कुछ अजीब सी छोटी छोटी चीज़ें पहने थीं जो जब वे अपने सिर इधर उधर या ऊपर नीचे हिलाती थीं तो वे चीज़ें भी हिलती रहती थीं।

आखिर एक आदमी ने उस चीज़ को पकड़ ही लिया। उसने देखा कि वह तो असली सोने का एक छोटा सा ताज था। वह उसे ले कर भागा भागा सुनार के पास गया जिसने उसे उसकी काफी कीमत दी।

अब क्या था वह फिर से उसी तालाब के पास गया जहॉ वे चिड़ियें खेलती रहती थी। वहॉ पहुॅच कर उसने हूपों को पकड़ने के

लिये एक जाल बिछा दिया। हूपो अपनी प्रशंसा करने में इतनी मस्त थीं कि उन्हें पता ही नहीं चला और वे उस जाल में फॅस गयीं।

और उसके बाद तो हूपों के लिये बहुत ही दुख का समय आ गया। अब हर आदमी हूपों की तलाश में रहने लगा। अब ये चिड़ियें न तो किसी कुॅए पर जा सकती थीं और न तालाब ही जा सकती थीं क्योंकि वहॉ सब जगह जाल पड़े हुए थे।

वे किसी बागीचे में नहीं जा सकती थीं क्योंकि वहॉ चिड़ियें पकड़ने वाले मौजूद रहते थे। वे किसी घर की छत पर भी नहीं जा सकती थीं क्योंकि वहॉ भी उनके लिये जाल बिछे हुए थे।

उन्हें कहीं भी कोई भी जगह ऐसी दिखायी नहीं दे रही थी जहॉ वे थोड़ी देर बैठ कर सुस्ता सकें। आखिर वे परेशान चिड़ियें सोलोमन के महल वापस उड़ गयीं और वहीं जा कर राजा का इन्तजार करने लगीं।

तब राजा उन्हें अपनी छत पर घूमता हुआ दिखायी दिया वह शाम की ठंडक में अपने गाने वालों का संगीत सुनने के लिये वहॉ आया था।

उन्होंने राजा से कहा — "अब हमें पता चल गया है कि यह ताज तो केवल दिखाने के लिये है। हमें नहीं मालूम कि आप अपने इस ताज कैसे बचाते हैं। कैसे आप अपने आपको दूसरों से पीछा करने से बचाते हैं। इसलिये हम आपके पास इसे हमारे सिरों पर से हटवाने के लिये आये हैं।"

राजा बोला — "मेरी प्यारी हूपो। जिस ताज के लिये तुम लोग यह सोचती हो कि उसके सामने दूसरे लोग झुकेंगे उस ताज को पहनने वाले के सिर पर बहुत बोझा रहता है।

और एक ताज जो ईर्ष्या पैदा करता है वह पैरों के लिये एक जाल होता है। केवल वही ताज आराम से पहना जा सकता जो सेवा का ताज होता है और वह ताज स्वाभाविक रूप से पैदा होता है और दूसरों को उसका पता भी नहीं चलता है।"

हूपो बड़ी विनम्रता से बोलीं — "तो ओ राजा। हमें भी वैसा ही ताज दो न।" क्योंकि इस समय वे इससे अधिक कुछ नहीं चाहती थीं जिससे कि लोग उन्हें ढूँढना छोड़ दें।

राजा बोला — "यह तुम्हारी भी उसी तरह से रक्षा करे जैसे इसने मेरी रक्षा की है।"

तभी हूपों ने देखा कि उनके सिरों पर पंखों के ताज लग गये हैं। और इस नये ताज के साथ उनके दिलों में एक नयी भावना आ गयी है। वे अब राज करना नहीं चाहती थीं अब वे सेवा करना चाहती थीं।

इसके आगे अरब में यह कहा जाता है कि सोलोमन के पास एक उड़ने वाला कालीन था जहाँ वह अपने सिंहासन पर बैठता था और उसके चारों ओर उसके नौकर लोग खड़े रहते थे।

हूपों की उपयोगिता को जानते हुए एक दिन उसने सारी चिड़ियों को बुलाया और उनसे एक उड़ती हुई छत बनाने के लिये कहा। सो जब सोलोमन अपने दरबार में बीच में बैठा तो गरुड़ को उनका सरदार बनाया गया जबकि हूपों को सीधे सोलोमन के सिर के ऊपर रखा गया।

इस तरह की छाया में सोलोमन और उसके दोस्त और नौकर ऊपर उठते थे और आराम से रेगिस्तान समुद्र और जमीन की यात्रा कर के आया करते थे।

एक दिन जब दिन बहुत गरम था और वे जंगलों में थे तो किसी तरह से सूरज की एक किरन चिड़ियों से बनी छत में से हो कर सोलोमन के चेहरे पर पड़ गयी। छत में एक छेद हो गया था।

यह बात जब गरुड़ से कही गयी तो वह बेचारा तुरन्त ही यह देखने के लिये उड़ा कि कहॉ क्या हो गया था। उसने देखा कि एक हूपो अपनी जगह से गायब थी। वहॉ वह छेद हो गया था और उसी छेद से सूरज की वह किरन आ कर सोलोमन के चेहरे पर पड़ी थी।

गरुड़ तुरन्त ही राजा सोलोमन के सामने गया और उसे यह खबर बतायी। तो राजा सोलोमन ने उसे आज्ञा दी कि वह तुरन्त ही जा कर उस हूपो को ढूँढे कि वह कहॉ है।

वह शायद बचने के लिये और सारी चिड़ियों से ऊँची उड़ गयी होगी क्योंकि किसी ने उसे जाते हुए नहीं देखा था। गरुड़ उसे ढूँढने के लिये तुरन्त ही आसमान की तरफ उड़ गया।

हालॉकि गरुड़ को धरती पर से कोई नहीं देख सकता था पर उसकी अपनी नजर बहुत तेज़ थी। उसने ऊपर से ही एक छोटी सी बिन्दी जैसे कोई चीज़ देखी जो दूर के एक रेगिस्तान की तरफ उड़ी जा रही थी।

उसने तुरन्त ही नीचे कूद लगायी और उड़ती हुए हूपो को पकड़ लिया। गरुड़ चिल्लाया — "तुम कहॉ थीं।"

हूपो ने जो कुछ देखा वह बताने के लिये वह इतनी उतावली हो रही थी वह तो कविता में बोलने लगी क्योंकि उसे कोई और तरीका उसे बताने का समझ में ही नहीं आया —

जहॉ काला संगमरमर हवा को काटता है
उन बड़ी दीवारों में जो नंगी ही चमकती हैं
पानी के किनारे खड़े हुए मैंने एक राजकुमारी को देखा
सन्तरे के पेड़ लगे हुए सोने के टब दीवार से लगे खड़े हैं
पर ये तो उसकी आधी चमक के बराबर भी नहीं है
जो शान से बैठी हुई है उसका नाम रानी बालकिस है
और उसका देश एक बागीचा है जो अरब के उस पार है

पर उसकी इस बात से गरुड़ बहुत नाराज था। हूपो को इस बात की कोई चिन्ता नहीं थी कि वह राजा सोलोमन को रास्ते में ही छोड़ आयी थी। वहॉ तो वह खूब उड़ रही थी चक्कर काट रही थी कविता बना रही थी जैसे कुछ हुआ ही न हो।

गरुड़ बहुत ज़ोर से चिल्लाया — "और तुम क्या सोचती हो कि इस बीच राजा सोलोमन और उसके दोस्त और नौकर चाकर क्या कर रहे थे जिस भलेमानस के सिर की तुमको सुरक्षा करनी थी?"

हूपो गिड़गिड़ाते हुए बोली — "मैं तुमसे विनती करती हूँ तुम मुझे छोड़ दो। हमारे अक्लमन्द और कुलीन राजा के नाम पर मुझे छोड़ दो।"

गरुड़ आश्चर्य से बोला — "मैं तुम्हें उन अक्लमन्द आीर कुलीन राजा के नाम पर छोड़ दूँ? तुम किस दया की हकदार हो जो मैं तुम्हें छोड़ दूँ? और अगर मैं तुम्हें छोड़ भी दूँ तो मुझे बताओ कि तुम राजा की कैसे सहायता करोगी।"

हूपो बोली — "फिर भी मैं तुमसे विनती करती हूँ कि तुम मुझे उनके नाम पर छोड़ दो। और मुझे यहाँ से जितनी जल्दी ले जा सकते हो ले चलो क्योंकि मुझे राजा सोलोमन को एक बहुत बड़ा सन्देश देना है और वह मैं केवल उन्हीं को दूँगी।"

गरुड़ हूपो की यह बहादुरी देख कर बहुत विस्मित था फिर भी उसने उसे अपने साथ उड़ने की अनुमति दे दी। वह उसे वापस उड़ते हुए कालीन की तरफ ले गया और हूपो राजा सोलोमन के सिंहासन के हत्थे पर जा कर बैठ गयी।

गरुड़ बोला — "मैंने इसे बहुत दूर पूर्व की ओर रेगिस्तान के उस पार पाया था।" पर इससे पहले कि गरुड़ कोई दूसरा शब्द बोले हूपो ने बोलना शुरू कर दिया —

ओ राजा, महान राजा तुम्हारी जमीन के उस पार
एक काले संगमरमर का महल खड़ा है
उसमें एक विलक्षण रानी रहती है
उसके सुनहरे बाल हैं और सुनहरी खाल है
चमकते हुए सुनहरे सन्तरे उसके सामने हैं
पर वह खुद उन चमकीले फलों से भी चमकीली है
और उसका नाम रानी बालकिस है

राजा सोलोमन ने उसे डॉट कर पूछा — "पर तुम वहॉ गयी ही क्यों थीं? क्या तुम उस समय अपने काम पर नहीं थीं और क्या तुम जानती नहीं हो कि काम के समय में काम पर न होने की क्या सजा है?"

हूपो बेचारी रोती हुई बोली — "दया मालिक दया। तुम भी कभी दया की भीख मॉगते होगे। हॉ महान राजा। मैंने पाप किया है घोर पाप किया है और मैं यह भी जानती हूॅ कि मुझे इसकी बहुत कड़ी सजा मिलनी चाहिये।

पर उससे पहले मैं तुम्हें एक बड़े आश्चर्य की बात बताना चाहती हूॅ और तुम्हें वह सन्देश देना चाहती हूॅ जो मुझे तुम्हें देने के लिये दिया गया है। इसके बाद तुम मुझे अपने हाथ से कुचल देना।"

राजा सोलोमन बोला — "पर मुझे तुम्हें सुनना ही क्यों चाहिये?"

"क्योंकि जो किसी राजा से नीचा नहीं है उसने खुद कहा है कि जो किसी की सलाह सुनता है वह अक्लमन्द होता है। जब हम अरब के रेगिस्तान को पार कर के जा रहे थे तब मैंने मक्का में एक चिड़िया से शीबा की आश्चर्यजनक रानी के बारे में सुना था।

मैंने बाहर देखा तो मुझे वह देश दिखायी दिया जिसके बारे में मैं इतने दिनों से सुनती आ रही थी। नहीं। काश मैंने उस रानी के बारे में न सुना होता जो वहॉ रहती है जो मेरे मालिक महान राजा से भी अमीर है।

सो मैं अपने आपको उस देश को देखने के लालच के लिये आपके ऊपर की वह छत छोड़ने से रोक न सकी। अगर हमारे महान राजा ने यह न कहा होता "जब कोई इच्छा पूरी हो जाती है तो वह आत्मा को शान्ति पहुॅचाती है।"

राजा सोलोमन ने फिर उसे डॉटते हुए कहा — "पर एक बेवकूफ की इच्छा तो उसकी अपनी नजर में ही ठीक होती है।"

हूपो बोली — "ओ राजा मैं पहले तुम्हें सन्देश दे दूॅ तब तुम मुझे मार डालना। जब तक तुमने यह सारी कहानी न सुन ली हो तुम कोई फैसला नहीं कर सकते। मेरे वहॉ जाने की कहानी सुनो।

शीबा देश मसालों और गोंद के लिये बहुत उपजाऊ है और वहॉ वे हैं भी बहुत। मैं बहुत थोड़ा ही वहॉ के दूसरे आश्चर्य देख सकी क्योंकि वहॉ राज्य के बीच में काले संगमरमर के महल आसमान तक ऊॅचे खड़े हुए थे।

मैं एक महल में चली गयी तो मैं तो वहॉ आश्चर्य से खड़ी की खड़ी ही रह गयी। एक काली लकड़ी के सिंहासन पर एक बहुत ही सुन्दर रानी बैठी हुई थी जिसकी सुन्दरता की कल्पना करना भी कठिन है।

उसके सुनहरे बाल उसके सिंहासन की सीढ़ियों तक लटके रहते हैं। दर्जनों नौकर उसको हवा करते रहते हैं जिससे एक सुनहरा घूमता हुआ बादल बन जाता है। उनका कहना था कि क्योंकि उसका अपना ताज इतना भारी है कि वह अपने सिर पर अपने बालों का बोझ नहीं सह सकती।

मैं उसके उन खुशबूदार बालों में हो कर उड़ी तो मुझे लगा जैसे सोने की बारिश हो रही हो। इस तरह मैं उसके बहुत पास आ गयी और उसे मैंने अपने आपसे फुसफुसा कर बात करते हुए सुना कि उसके अन्दर समझदारी और बुद्धिमानी की कमी है। ऐसी हालत में वह अपने राज्य पर शासन कैसे करे।

मैंने कहा "ओ शक्तिशाली रानी बालकिस। एक छोटी सी चिड़िया की सलाह सुनो जो संसार के सबसे बुद्धिमान राजा की नौकर है। मैं जानती हूॅ कि राजा सोलोमन जानता है कि अक्लमन्दी से राज कैसे करते हैं क्योंकि एक बार मैंने भी ताज पहना था और मुझे मालूम है कि राज करना कितना कठिन है।

पर राजा सोलोमन ने मेरा सोने का ताज हटा दिया और यह पंखों का ताज दे दिया जिसे अब मैं आराम से पहनती हूॅ।

एक ऐसा ताज जिसके आगे हर कोई झुकता है वह सिर पर भारी बैठता है। केवल एक ताज ऐसा है जो आसानी से पहना जा सकता है और वह है सेवा का ताज।"

रानी बोली — "कितनी बुद्धिमानी की बात है। ओ चिड़िया तुम कितनी खुशकिस्मत हो कि तुम राजा सोलोमन के साथ रहती हो।

तुम अपने मालिक के पास जाओ और उनसे पूछो कि क्या उनकी बुद्धिमानी ने उनको दया भी सिखायी है। और उनसे यह भी पूछना कि क्या वह एक कमजोर और दुखी रानी को भी कुछ सलाह देंगे जो रेगिस्तान पार करने और अपने आपको उसके सामने लाने में से डरती है जो इतनी अच्छी तरह से राज करता है।"

हूपो ने राजा सोलोमन से पूछा — "ओ सोलोमन। अब बताओ तुम्हारा क्या जवाब है। क्या मैं उसके पास वापस जाऊँ और उससे यह कहूँ कि तुम उसके पास उसकी बुद्धिमानी सीखने के लिये आ सकती हो।

या फिर तुम एक छोटी से चिड़िया को अपने हाथों से मार दोगे जिसका दोष केवल इतना है कि अपनी उत्सुकता की वजह से उसने तुम्हारे सिर के ऊपर उड़ने का साहस किया और तभी हम पहली बार मिले थे।"

सोलोमन बोला — "तुम मेरा विश्वास रखो तुमने जो कुछ कहा है इसके लिये तुम्हारा यह पाप माफ किया जायेगा। तुम रानी के

पास वापस जाओ और साथ में मेरी यह अँगूठी भी लेती जाओ। और जा कर उससे कहना कि जहाँ जाने में एक छोटी सी चिड़िया को डर नहीं लगता तो वहाँ एक रानी तो आ ही सकती है।

अगर एक हूपो बुद्धिमानी सीख सकती है और उसे अपने फायदे के लिये इस्तेमाल कर सकती है तो क्या कोई रानी ऐसा नहीं कर सकती क्या?"

तब हूपो खुशी खुशी राजा सोलोमन की बाँह पर से उठी और रानी बालकिस के पास चली गयी। और जब रानी का जुलूस राजा सोलोमन के महल पहुँचा तो महान रानी बालकिस ने अपने बहुत सारे ऊँटों के साथ जिन पर मसाले कीमती पत्थर सोना और हाथी दाँत लदे हुए थे राजा सोलोमन के सिंहासन के सामने सिर झुकाया।

छोटी हूपो ने अपनी तेज़ खुशी की आवाज में वे शब्द गाते हुए उन दोनों के सिर के ऊपर हवा में चक्कर लगाया जो राजा सोलोमन अक्सर कहा करता था —

"एक शब्द जो सही समय पर बोला गया हो वह उस तरह से होता है जैसे चाँदी की तस्वीर में सोने के सेब। जैसे कान के लिये सोने का झुमका और सोने का एक सुन्दर गहना उसी तरह से कहना मानने वाले के लिये बुद्धिमानी की एक सलाह।

16 शापित सिर[44]

एक बार की बात है कि एक बुढ़िया अपनी दो बेटियों के साथ एक समुद्र के पास वाले मकान में रहती थी। वे बहुत गरीब थे और लड़कियें शायद ही कभी घर से बाहर निकली हों क्योंकि वे सारा दिन घर में बैठ कर चेहरों पर डालने वाले परदे बनाया करती थीं।

हर सुबह जब वे परदे तैयार हो जाते तो दूसरी उन्हें पुल पर ले जाती और उन्हें बाजार में बेच आती और घर के लिये खाना खरीद लाती। घर में आ कर वह फिर से परदे बनाने लग जाती।

एक दिन सुबह जब बुढ़िया उठी तो वह उस दिन रोज से कुछ जल्दी ही उठ गयी थी। उसने अपना सामान उठाया और उसे बेचने चल दी। वह बस पुल पार कर ही रही थी कि अचानक उसका पैर एक आदमी की खोपड़ी से टकरा गया जिसे उसने पहले कभी नहीं देखा था।

स्त्री डर के मारे कुछ पीछे हट गयी पर उसे यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ जब उसने खोपड़ी को बोलते सुना। ऐसा लग रहा था जैसे उसका शरीर उस सिर से जुड़ा हो।

वह बोला — "ओ अच्छी मॉ। मुझे अपने घर ले चलो। तुम मुझे अपने घर वापस ले चलो।"

[44] The Enchanted Head. By Andrew Lang.

यह सुन कर तो वह बुढ़िया डर के मारे बिल्कुल पागल सी हो गयी। क्या ऐसी कोई भयानक चीज़ घर में भी रखी जा सकती है? नहीं नहीं। और वह पलट कर जितनी जल्दी हो सकता था वहॉ से वापस अपने घर भाग गयी।

उसे यह पता ही नहीं चला कि वह सिर भी नाचता लुढ़कता कूदता फॉदता उसके पीछे पीछे चला आ रहा था। जब वह अपने घर के दरवाजे पर पहुॅची तो उसे यह देख कर बड़ा आश्चर्य लगा जब उसने देखा कि वह सिर तो उससे पहले ही घर में घुसने के लिये तैयार था।

वह उससे पहले ही घर में घुसा और आग के सामने जा कर रुक गया और बुढ़िया से वहॉ रुकने के लिये विनती करने लगा। उस दिन घर में सारा दिन खाना नहीं था। क्योंकि उस दिन परदे नहीं बेचे गये थे और उनके पास कोई भी चीज़ खरीदने के लिये कोई पैसा नहीं था।

सो उस दिन वे सारा दिन चुपचाप काम करती रहीं। अन्दर ही अन्दर वे सिर को गाली देती रहीं क्योंकि यह सब उसी का परिणाम था। जब शाम हुई तो भी खाने का कोई संकेत नहीं था।

पहली बार उस दिन सिर बोला — "अच्छी मॉ। क्या इस घर में कोई कभी खाना नहीं खाता? जितनी देर से मैं इस घर में रह रहा हूॅ मैंने किसी को कुछ खाते नहीं देखा।"

बुढ़िया बोली — "नहीं। हम कोई खाना नहीं खा रहे।"

"और क्यों नहीं अच्छी मॉ।"

"क्योंकि हमारे पास खाना खरीदने के लिये कोई पैसा नहीं है।"

"क्या यह आपके यहॉ कोई रीति है कि आप कभी नहीं खायेंगे?"

मॉ बोली — "नहीं। हम सारा दिन परदे बनाते हैं फिर अगली सुबह उन्हें बेचने जाते है और उनके बेचने से जो हमें पैसे मिलते हैं उससे हम अपना दिन का खाना खरीदते हैं। आज तो मैं पुल ही पार नहीं कर पायी इसलिये आज मेरा पास खाना भी नहीं है।"

सिर बोला — "इसका मतलब यह है आज आपके सारा दिन भूखे रहने का कारण मैं हूॅ।"

बुढ़िया बोली — "हॉ तुम हो।"

सिर बोला — "ठीक है तो फिर मैं आपको पैसा देता हूॅ, बहुत सारा, पर अगर आप वही करें जैसा मैं कहूॅ तो। एक घंटे बाद जैसे ही बारह बजेंगे आपको पुल पर उसी जगह होना चाहिये जहॉ आप मुझसे मिली थीं।

जब आप वहॉ पहुॅच जायें तो जितनी ज़ोर से आप पुकार सकें तीन बार पुकारियेगा "अहमद। अहमद। अहमद।" तब वहॉ एक नीग्रो प्रगट होगा। तब आप उससे कहियेगा "तुम्हारा मालिक सिर चाहता है कि तुम बक्सा खोलो और उसमें रखा हुआ हरा बटुआ मुझे ला कर दो।"

बुढ़िया बोली — "बहुत अच्छा माई लौर्ड। मैं बस अभी पुल पर जाने के लिये तैयार होती हूँ।" और अपना परदा अपने चारों तरफ लपेट कर वह पुल की तरफ चल दी।

जैसे ही वह वहाँ जहाँ उसे सिर मिला था पहुँची तो आधी रात के बारह बजे थे। वहाँ पहुँच कर वह तीन बार बहुत ज़ोर से चिल्लायी "अहमद। अहमद। अहमद।"

तुरन्त ही एक बहुत बड़ा नीग्रो जो एक राक्षस के बराबर बड़ा था उसके सामने आ कर खड़ा हो गया। उसने पूछा — "आपको क्या चाहिये?"

बुढ़िया बोली — "तुम्हारे मालिक की इच्छा है कि तुम अभी अभी बक्सा खोलो और उसमें से हरा बटुआ निकाल कर मुझे दो।"

वह बोला — "अच्छी माँ। मैं अभी आया।"

कह कर वह चला गया और तीन मिनट के अन्दर अन्दर उसने चमकते सितारों[45] से भरा एक हरा बटुआ ला कर उसे दे दिया।

बुढ़िया उसे ले कर घर आयी तो इतनी सारी सम्पत्ति देख कर तीनों में से किसी की खुशी का वारापार न रहा। छोटा टूटा फूटा घर फिर से बनवाया गया। लड़कियों ने नये कपड़े बनवाये। उनकी माँ ने अब परदे बेचने बन्द कर दिये। उनके लिये तो खर्च करने के लिये उनके पास इतना सारा पैसा होना ही एक नयी बात थी।

[45] Translated for "Sequins". See its picture above.

पर वे लोग पैसा खर्च करते समय उतने सावधान नहीं थीं जितनी कि उन्हें होना चाहिये था। सो धीरे धीरे उस बटुए का सारा पैसा खत्म हो गया। और जब ऐसा हुआ तो उनका दिल फिर डूब गया और उनके मुँह लटक गये।

वह सिर एक कोने में रखा हुआ था। जब उसने उनके लटके हुए मुँह देखे तो उसने उनसे पूछा — "क्या आप लोगों ने अपना सारा पैसा खत्म कर दिया?"

उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया तो वह फिर बोला — "ठीक है। आप आज फिर उसी पुल पर वहीं जाइये जहाँ आप पहले गयीं थीं और आधी रात को जितनी ज़ोर से पुकार सकती हैं उतनी ज़ोर से पुकारिये "मुहम्मद, मुहम्मद, मुहम्मद।"

एक नीग्रो आपके सामने प्रगट होगा तो आप उससे कहियेगा कि "तुम्हारा मालिक सिर चाहता है कि तुम बक्सा खोलो और उसमें रखा हुआ लाल बटुआ मुझे ला कर दो।"

बुढ़िया को दोबारा कहने की जरूरत नहीं पड़ी वह तुरन्त ही पुल की तरफ चल पड़ी। वहाँ पहुँच कर उसनी जितनी ज़ोर से उससे पुकारा जा सकता था पुकारा "मुहम्मद, मुहम्मद, मुहम्मद।" और फिर से एक बहुत बड़ा सा नीग्रो जो पिछले वाले नीग्रो से भी बड़ा था वहाँ प्रगट हो गया।

उसने पूछा — "आपको क्या चाहिये?"

बुढ़िया ने उससे कहा "तुम्हारा मालिक सिर चाहता है कि तुम बक्सा खोलो और उसमें रखा हुआ लाल बटुआ मुझे ला कर दो।"

"बहुत अच्छा अच्छी मॉ। मैं ऐसा ही करता हूँ।" कह कर वह गायब हो गया और उसी पल अपने हाथ में लाल बटुआ लिये हुए फिर से प्रगट हो गया।

इस बार वह पैसा उनको इतना सारा लगा कि उन्होंने फिर से एक नया मकान बनाया और फिर जो भी वहॉ की दूकानों में उसे बहुत सारी सुन्दर सुन्दर चीज़ें मिलीं उनसे उसको भर लिया। उसकी बेटियॉ अब हमेशा परदे में ही रहती थीं।

ऐसा लगता था जैसे वे परदे सूरज की किरनों से बनाये गये हों और उनकी पोशाकें कीमती पत्थरों से चमकती रहतीं।

उनके पड़ोसी सोचते, क्योंकि उनको किसी को सिर का तो पता नहीं था, कि उनके पास इतना पैसा कहॉ से आया।

एक दिन सुबह सुबह सिर ने मॉ से कहा कि वह उस देश के सुलतान के पास जाये और सिर के लिये उससे उसकी बेटी मॉगे।

बुढ़िया आश्चर्य से चिल्लायी "तुमने क्या कहा? मैं सुलतान के पास यह कहने के लिये कैसे जा सकती हूँ कि एक बिना शरीर का सिर आपकी बेटी से शादी करना चाहता है।

वे लोग सोचेंगे कि यह बुढ़िया पागल है और मुझे महल से मार मार कर बाहर निकाल दिया जायेगा और बच्चे मुझे पत्थर मारेंगे।"

सिर बोला — "जैसा मैं कहता हूँ वैसा करो। यह मेरी इच्छा है।"

बुढ़िया उसके तेवर देख कर उससे कुछ और कहने में असमर्थ थी। उसने अपने सबसे कीमती कपड़े पहने और महल की तरफ चल दी। सुलतान ने उसे तुरन्त ही अपने सामने बुला लिया। बुढ़िया ने काँपती हुई आवाज में सुलतान के सामने अपनी बात रखी।

सुलतान ने उसे घूरते हुए कहा — "बुढ़िया तू क्या पागल हो गयी है।"

"सरकार आपका यह उम्मीदवार बहुत ताकतवर है। उसके लिये असम्भव कुछ भी नहीं है।"

"क्या यह सच है।"

"जी सरकार। मैं कसम खा कर कह सकती हूँ।"

सुलतान बोला — "तब उसे अपनी यह ताकत मेरे लिये ये तीन काम कर के दिखानी होगी तब मैं उसे अपनी बेटी दूँगा।"

बुढ़िया बोली — "बताइये सरकार।"

सुलतान बोला — "क्या तुम्हें हमारे महल के सामने की पहाड़ी दिखायी दे रही है?"

"जी सरकार।"

'तो ठीक है चालीस दिनों के अन्दर अन्दर जिस आदमी ने तुम्हें यहाँ भेजा है उसे इस पहाड़ी को यहाँ से गायब कर देना चाहिये। यह पहला काम है। जा कर उससे कह देना।"

"ठीक है सरकार।" और वह फिर बिना एक शब्द बोले वहॉ से चली गयी। बुढ़िया ने घर पहुँच कर सिर को सुलतान की पहली शर्त बतायी।

सिर बोला — "ठीक है।" और वह फिर नहीं बोला।

उन्तालीस दिनों तक सिर अपने प्रिय कोने में ही पड़ा रहा। बुढ़िया ने सोचा कि यह काम तो इसके वश में नहीं है सो इसके बाद अब यह कभी भी सुलतान की बेटी के बारे में बात नहीं करेगा।

पर उन्तालीसवें दिन की शाम को जब बुढ़िया महल से लौटी तो सिर अचानक बोला — "अच्छी मॉ। आज आपको फिर से पुल पर जाना होगा और वहॉ पहुँच कर "अली, अली, अली" तीन बार जितनी ज़ोर से आप पुकार सकें उतनी ज़ोर से पुकारना होगा।

आपके पुकारने पर आपके सामने एक नीग्रो प्रगट होगा तो अप उससे कहियेगा "कि उसे महल के सामने की पहाड़ी को गिरा देना है और वहॉ एक बहुत सुन्दर बागीचा बना देना है।"

बुढ़िया बोली — "मैं अभी जाती हूँ।" उसे पुल पर पहुँचने में बहुत देर नहीं लगी। वह उसी जगह जा कर खड़ी हो गयी जहॉ उसे सबसे पहले सिर मिला था।

वहॉ पहुँच कर तीन बार बहुत ज़ोर ज़ोर से आवाज लगायी "अली, अली, अली"। एक बहुत बड़ा नीग्रो उसके सामने तुरन्त ही प्रगट हो गया। वह नीग्रो इतना बड़ा था कि वह तो उसे देख कर अधमरी ही हो गयी। पर उसकी आवाज बहुत नम्र थी।

वह बोला "आपको क्या चाहिये?"

बुढ़िया बोली "तुम्हारा मालिक सिर यह चाहता है कि सुलतान के महल के सामने जो पहाड़ी खड़ी है उसे गिरा कर तुम वहॉ एक बहुत सुन्दर बागीचा बनवा दो।"

अली बोला — "मालिक के हुक्म का पालन किया जायेगा। यह काम अभी हो जायेगा।" बुढ़िया तुरन्त घर गयी और सिर को यह सन्देश दिया।

इस बीच सुलतान इस बात के इन्तजार में था कि कब चालीसवें दिन की सुबह होगी पर उस पहाड़ी में से एक फावड़े भर भी मिट्टी नहीं हटी होगी।

सुलतान ने सोचा "अगर यह बुढ़िया मेरे साथ कोई चाल खेल रही होगी तो मैं इसे फॉसी पर चढ़वा दूॅगा। मैं कल ही पहाड़ी पर फॉसी का तख्ता लगवाता हूॅ।"

पर यह क्या जब सुबह हुई तो वहॉ कोई पहाड़ी नहीं थी। जब सुलतान की ऑख खुली तो उसने देखा कि उसका कमरा तो धूप से भरा हुआ था। और इतनी सारी मीठी मीठी सुगन्ध आने का क्या कारण था।

उसने सोचा "क्या कहीं आग लगी है। इस खिड़की से तो कभी धूप अन्दर आयी ही नहीं। देखता हूॅ यह कैसे हुआ।" सो वह उठा और उठ कर उसने खिड़की से बाहर झॉका तो उसने देखा कि उसके नीचे तो दुनियॉ भर के तरह तरह के फूल खिले हुए हैं जिनसे

खुशबू उड़ रही है। पेड़ों पर कई रंगों की लताऐं एक दूसरे से लिपटी हुई झूल रही हैं।

तब उसे याद आया कि "जरूर ही यह काम उस बुढ़िया के बेटे का होगा। लगता है कि बुढ़िया का बेटा तो बहुत बड़ा जादूगर है। मैं इतने होशियार आदमी से पहले कभी नहीं मिला। तो फिर मैं अब उसे अगला काम क्या दूँ।"

कुछ सोच कर उसने बुढ़िया को फिर से बुलवाया जो सिर के हुक्म से वहीं नीचे ही इन्तजार कर रही थी।

सुलतान ने बुढ़िया से कहा — "तुम्हारे बेटे ने मेरा हुक्म बड़े अच्छे से पालन किया है। बागीचा बहुत बड़ा है और दूसरे बागीचों से बहुत सुन्दर भी। पर जब मैं इसमे घूमता हूँ तो मुझे सुस्ताने के लिये इसके उस पार भी एक महल चाहिये।

इस महल के हर कमरे में अलग अलग देश का अलग अलग फर्नीचर होना चहिये और हर कमरा इतना शानदार होना चाहिये जैसा किसी और ने देखा न हो।"

यह कह कर वह पलटा और अन्दर चला गया।

बुढ़िया ने सोचा "ओह यह काम तो वह बेचारा बिल्कुल ही नहीं कर पायेगा। यह काम तो पहाड़ी हटाने से भी कहीं अधिक कठिन काम है।" और वह बेचारी अपना सिर लटकाये अपने घर चली गयी।

सिर ने खुशी से बुढ़िया से पूछा "अब मुझे क्या करना है।"

तब बुढ़िया ने महल में जो कुछ भी हुआ सिर को सब बताया। तो सिर बोला — "मेरी अच्छी मॉ। बस इतना ही। यह तो बच्चों का खेल है।" कह कर वह अपने कोने में जा कर बैठ गया और उन्तालीस दिनों तक वहॉ चुपचाप बैठा रहा।

उन्तालीसवें दिन शाम को सिर ने बुढ़िया से पुल पर जाने के लिये और हसन को पुकारने के लिये कहा। हसन वहॉ प्रगट हुआ और उसने बुढ़िया से पूछा "आपको क्या चाहिये।" हालॉकि वह इतनी नम्रता से नहीं बोल रहा था जितना दूसरे नीग्रो बोल रहे थे।

बुढ़िया ने कहा — "तुम्हारे मालिक सिर ने कहा है कि तुम नये बनाये गये बागीचे के किनारे पर एक महल बना दो जिसके हर कमरे में अलग अलग देश का अलग अलग फर्नीचर हो और हर कमरा इतना शानदार हो जैसा किसी और ने देखा न हो।"

हसन बोला — "मालिक के हुक्म का पालन होगा।"

अगले दिन सवेरे जब सुलतान सो कर उठा तो उसने देखा कि दूर बागीचे के उस पार असली सोने के खम्भों पर एक हल्के नीले रंग के संगमरमर का महल खड़ा हुआ था। वह खुशी से चिल्ला पड़ा "अरे बुढ़िया का बेटा तो बहुत ताकत वाला है। अबकी बार में इसे क्या काम करने के लिये दूॅ।"

कुछ सोच कर उसने फिर बुढ़िया को बुलवाया। बुढ़िया भी वहीं नीचे उसके बुलाने का ही इन्तजार कर रही थी।

सुलतान ने कहा — "तुम्हारा बागीचा बहुत ही अद्भुत है और महल तो दुनियॉ भर में सबसे अच्छा है और इतना अच्छा है कि मेरे नौकर भी उसे देख कर लज्जित हो जायें। अब तुम अपने बेटे से कहो कि वह इस महल में चालीस दास एक सी शक्ल के और एक सी लम्बाई के और रख दे जिनकी सुन्दरता का कोई सानी न हो।"

इस बार सुलतान ने सोचा कि उसने कोई ऐसे काम की खोज कर ली है जिसको वह कभी किसी हालत में भी पूरा नहीं कर पायेगा। और वह अपनी इस चतुराई के लिये बहुत खुश था।

फिर से उन्तालीस दिन बीत गये। उन्तालीसवें दिन की शाम को सिर ने बुढ़िया से फिर एक बार पुल पर जाने के लिये कहा सो बुढ़िया एक फिर पुल पर खड़े हो कर "बशीर, बशीर, बशीर" चिल्ला रही थी।

उसके चिल्लाने पर बशीर वहॉ प्रगट हुआ और उससे पूछा कि उसे क्या चाहिये। बुढ़िया ने कहा कि उसके मालिक सिर ने नये वाले महल में जो बागीचे के दूसरी तरफ बना है चालीस दास एक सी शक्ल के और एक सी लम्बाई के रखने के लिये कहा है जिनकी सुन्दरता का कोई सानी न हो।"

और फिर जब चालीसवें दिन की सुबह हुई और सुलतान अपने नये नीले महल में गया तो वहॉ उसे चालीस दास दिखायी दिये। सब एकसे, सब एकसे सुन्दर और सब एक ही लम्बाई के। सुलतान तो यह देख कर पागल सा ही हो गया।

उसने सोचा कि मैं अपनी बेटी को बुढ़िया के बेटे को दे दूँगा अगर सारी दुनियॉ ढूँढने पर भी मुझे उससे ज़्यादा अच्छा दामाद नहीं मिला तो। जब बुढ़िया उसके सामने आयी तो उसने उससे कहा कि वह अपना वायदा पूरा करने के लिये तैयार था सो वह अपने बेटे को वहॉ ले आये।

हालॉकि बुढ़िया ने सुलतान के इस हुक्म का कोई विरोध नहीं किया पर वह सुलतान के इस हुक्म से खुश नहीं थी। जब वह सिर के पास पहुँची और उसे सब बताया तो बोली "अब तक तो सब कुछ ठीक हो गया पर अब सोचो कि जब सुलतान अपनी बेटी के पति को देखेगा तब वह क्या कहेगा।"

सिर बोला — "आप चिन्ता न करें मॉ जी। उन्हें जो कहना है वह वह कहें बस आप मुझे चॉदी की एक थाली में रखें और सुलतान के पास ले चलें।"

वैसा ही किया गया हालॉकि जब बुढ़िया ने सिर रखी चॉदी की थाली सुलतान के सामने रखी तो बुढ़िया का दिल बहुत ज़ोर ज़ोर से धड़क रहा था।

जैसे ही सुलतान ने सिर को थाली में रखा देखा तो यह दृश्य देख कर ही उसका पारा सातवें आसमान पर चढ़ गया। "मैं अपनी बेटी की शादी इस भूत से नहीं करूँगा।"

पर शाहज़ादी ने अपना सिर बहुत ही कोमलता से अपने पिता की बॉह पर रख दिया।

वह बोली — "पिता जी। आपने वायदा किया है अब आप इस वायदे को तोड़ नहीं सकते।"

सुलतान प्यार से बोला — "पर मेरी बच्ची तेरा ऐसी चीज़ से शादी करना असम्भव है।"

"पर मैं इसी से शादी करूँगी। इसका सिर बहुत सुन्दर था और मैं इसे प्यार करती हूँ।"

सो शादी की तैयारियाँ की गयीं। महल में बहुत बड़ी दावत दी गयी। हालाँकि महल के सब लोग शाहज़ादी की ऐसी किस्मत पर रो रहे थे। पर जब खुशियाँ मना ली गयीं और जब दुलहा दुलहिन अकेले रह गये तो अचानक से सिर तो गायब हो गया और एक बहुत सुन्दर शाहज़ादा वहाँ प्रगट हो गया।

शाहज़ादा बोला — "एक नीच परी ने मुझे मेरे जन्म पर शाप दे दिया था कि मैं दूसरे लोगों के लिये हमेशा सिर ही रहूँगा पर तुम्हारे लिये केवल तुम्हारे लिये मैं दूसरों जैसा आदमी रहूँगा।"

शाहज़ादी बोली — "बस मेरे लिये यही काफी है।"

References

Moroccan Folktales. By Jilali El Koudia. NY: Syracuse University Press. 2003. Tales No 1, 2, and 3
Folklore of the Holy Land, Moslem Christian and Jewish. By JE Hanauer. 1907. Tales No 4, 5, 6, and 7
Forty-four Turkish Tales. By Ignacz Kunos. 1913. 44 Tales. Tales No 8, 9, 10, 11, 12 and 13
https://fairytalez.com/region/arabic/ Tales No, 14, 15 and 16

Other Arabian Books Translated in Hindi

16. Folk-lore and Legends : Oriental.
By Charles John Tibbitts. London, WW Gibbins. 1889. 13 Folktales.

17. The Oriental Story Book.
By Wilhelm Hauff. Tr by GP Quackenbos. NY : D Appleton. 1855. 7 long Oriental folktales.

37. Fourty-four Turkish Fairy Tales
By Ignacz Kunos. 1913. 44 Tales

38. Moroccan Folktales
By Jilali el Koudia. NY : Syracuse University Press. 2003. 140 p.

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। उसके बाद **1976** में भारत से नाइजीरिया पहुँच कर यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस कर के एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया। उसके बाद इथियोपिया की एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो की नेशनल यूनिवर्सिटी में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला।

तत्पश्चात **1995** में यू ऐस ए से फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स कर के **4** साल एक ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में सेवा निवृत्ति के पश्चात अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन **2021** तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से ये लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचायी जा सकेंगी।

विंडसर, कैनेडा
2022